अंतस
अर्द्धवार्षिक पत्रिका, अंक-27, 26 जनवरी 2025

साइबर दुनिया

सरलता, सुरक्षा एवं सावधानियां

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर

नियम-निर्देश

- अंतस के आगामी अंक के प्रकाशन हेतु अपनी मौलिक एवं यथासंभव अप्रकाशित रचनाएं भेजने का कष्ट करें।
- रचनाएं यथासंभव टाइप की हुई हों, रचनाकार का पूरा नाम, पद एवं संपर्क विवरण का उल्लेख अपेक्षित है।
- लेखों में शामिल छाया-चित्र तथा आंकड़ों से संबंधित आरेख होना चाहिए।
- अनुदित लेखों की प्रामाणिकता अवश्य सुनिश्चित करें। अनुवाद में सहायता हेतु संस्थान राजभाषा प्रकोष्ठ से संपर्क कर सकते हैं।
- प्रकाशन के लिए किसी भी लेखक को किसी प्रकार का मानदेय नहीं दिया जाएगा।
- अंतस में उन सभी प्रकार के विचारों का स्वागत होगा जो संस्थान परिसर में रहने वाले अथवा काम करने वाले लोगों का प्रतिनिधित्व करते हैं किन्तु किसी प्रकार के राजनीतिक विचारों को प्रोत्साहित नहीं किया जाएगा।
- अंतस में प्रकाशित रचनाओं में निहित विचारों के लिए संपादक मंडल अथवा राजभाषा प्रकोष्ठ उत्तरदायी नहीं होगा और इसके लिए पूरी की पूरी जिम्मेदारी स्वयं लेखक की होगी।
- रचनाएं अंतस के अनवरत दो अंकों में प्रकाशित न होने की स्थिति में संबंधित रचनाकार राजभाषा प्रकोष्ठ से जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।
- प्रयुक्त भाषा सरल, स्पष्ट एवं सुवाच्य हिंदी भाषा हो।

साभार
संपादक मंडल

अंतस परिवार

संरक्षक
प्रोफेसर मणीन्द्र अग्रवाल

निर्देशन
प्रोफेसर ब्रज भूषण

कुलसचिव
श्री विश्व रंजन

मुख्य संपादक
डॉ0 अर्क वर्मा

संपादक
श्री विजय कुमार पाण्डेय

संपादन सहयोग
प्रोफेसर शिखा दीक्षित
प्रोफेसर कांतेश बालानी
प्रोफेसर संतोष कुमार मिश्र
प्रोफेसर ललित सारस्वत
प्रोफेसर अमर कुमार बेहेरा
प्रोफेसर हिमांशु यादव

अनुवाद एवं साहित्यिक सहयोग
श्री जगदीश प्रसाद
श्री दुर्गेश कुमार मिश्र

वर्तनी शोधन
श्री अरविन्द कुमार सैनी

अभिकल्प
नितेश कुमार

छायाचित्र
श्री गिरीश पंत

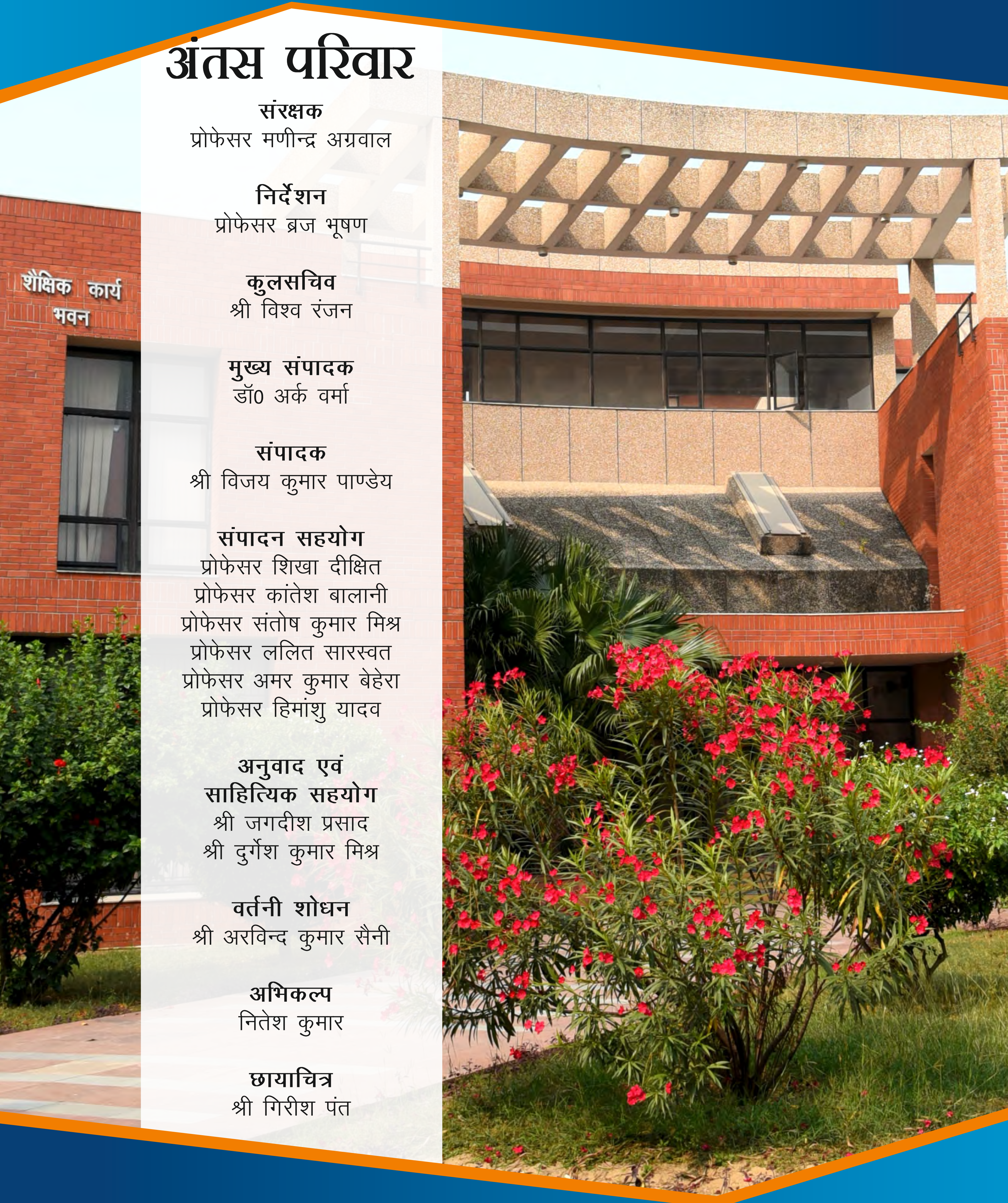

विशेष सहयोगः प्रस्तुत अंक के सभी रचनाकार, समस्त संस्थान कर्मी एवं हिंदी साहित्य सभा।

संकेतक

शुभेच्छा

निदेशक 03
उप निदेशक 04
कुलसचिव 05

संपादकीय

मुख्य संपादक 06

रिपोर्ट

हिंदी दिवस–2024 07
नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की आठवीं बैठक 09
विश्व हिंदी दिवस–2025 11
भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर का माननीय संसदीय राजभाषा समिति द्वारा राजभाषा निरीक्षण 11
अक्षर साहित्यिक महोत्सव–2024 12

साक्षात्कार

डॉ0 सुदेशना सिन्हा 13

गुरुदक्षिणा

श्री प्रवीण त्रिपाठी 16

साहित्यिक यात्रा

अद्‌भुत अमेजन 18
आईआईटी कानपुर में एक तेंदुआ 20
ए चांद ज़रा मुस्करा 20
उच्च–दांव वाला सबक 21
युवा है तू युवा 22
सच्चा दशहरा 22
स्टूडेंट जिमखाना आईआईटी कानपुरः कार्यप्रणाली और स्वर्णिम इतिहास 23
गुब्बारेवाली 24
साइबर गाथाः सुरक्षा का प्रकाश 25
वह किनारे खड़ा आदमी 25
साइबर क्राइम 26
बीज का बोध 27
पगली अम्मा 28
संघर्ष का सफर 31
मायाजालः एक अप्रत्याशित संघर्ष 32
विवेकानंद की कविता 33
ए रेलगाड़ी 33
रोशनी का सफरः दिये से एलईडी तक 34
मोबाइल सुरक्षा 35

भाषा-विमर्श

सचेतन कहानी 37

तकनीकी लेख

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) आधारित लाइसेंसिंगः सुरक्षा, डेटा उपयोग और शोधकर्ताओं व लेखकों की चिंताएं और अवसर 38

विरासत

स्मृति 40

अतिथि रचनाकार

डर 43

बाल बत्तीसी

सोन चिरैया 47

शुभेच्छा

निदेशक की कलम से....

प्रिय पाठकों,

76वें गणतंत्र दिवस के इस पावन अवसर पर संस्थान की हिंदी पत्रिका 'अंतस' के 27वें अंक का लोकार्पण करते हुए मुझे अपार हर्ष की अनुभूति हो रही है। यह अंक आम जनमानस से संबंधित विषय 'साइबर दुनियाः सरलता, सुरक्षा एवं सावधानियां' विषय पर प्रकाशित किया गया है।

तकनीकी प्रगति ने हमारे जीवन को पहले से कहीं अधिक सरल और सुगम बनाया है। संचार, शिक्षा, नवाचार, स्वास्थ्य और व्यापार जैसे क्षेत्रों में साइबर तकनीक ने क्रांतिकारी बदलाव लाए हैं। परंतु, इन सुविधाओं के साथ–साथ साइबर सुरक्षा संबंधी चुनौतियां भी हमारे सामने आई हैं, जिन्हें समझना और उन पर सावधानीपूर्वक कार्य करना अत्यंत आवश्यक है। इसी आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर में वर्ष 2020 में सी3आई हब की स्थापना की गई है जो कि एक तकनीकी नवाचार हब और सेक्शन–8 कंपनी है, जिसे भारत सरकार के विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग द्वारा राष्ट्रीय अंतर्विषयक साइबर भौतिक प्रणाली मिशन (एनएम–आईसीपीएस) के तहत वित्त पोषित किया गया है।

यह हब, साइबर–भौतिक प्रणाली के साइबर सुरक्षा विषयों के समाधान पर केंद्रित है। सुरक्षा कमियों का विश्लेषण करने और महत्वपूर्ण साइबर–भौतिक प्रणाली आर्किटेक्चर के विभिन्न स्तरों पर उन्हें दूर करने के लिए उपकरण विकसित करने से लेकर, बड़े पैमाने पर ऐसे उपकरण विकसित करने वाले स्टार्ट–अप को विकसित करने, सह–विकास और प्रौद्योगिकी हस्तांतरण के लिए उद्योगों के साथ साझा करने, साइबर सुरक्षा शोधकर्ताओं की अगली पीढ़ी को प्रशिक्षित करने जैसे अनेक स्तरों पर काम करता है जो देश में साइबर–फिजिकल सिस्टम को अपनाने और आगे बढ़ाने में मदद करता है।

सी3आई हब स्वदेशी सुरक्षा संचालन केंद्र के साथ–साथ व्यक्तिगत सुरक्षा से संबंधित उपाय भी प्रदान करता है, जिसमें एसेट इन्वेंट्री और पैच प्रबंधन, नेटवर्क अंतर्वेधन का पता लगाने वाला सिस्टम, होस्ट अंतर्वेधन का पता लगाने वाला सिस्टम, हनीपोट्स और धोखे की तकनीक, मैलवेयर का पता लगाने और विश्लेषण उपकरण आदि शामिल हैं। सी3आई हब स्वदेशी सुरक्षा संचालन को एनएचएआई, आईपीए और बीआईटी–मेसरा में तैनात किया गया है। इनके अलावा, यह हब विभिन्न क्षेत्रों के लिए टैम्पर–प्रूफ डेटा स्टोरेज और शेयरिंग के लिए ब्लॉकचेन–आधारित उपाय तथा साइबर अपराध जांच उपकरण भी प्रदान करता है। यह हब सीईआरटी– आईएन पैनल में शामिल है और विभिन्न क्षेत्रों के संगठनों को सुरक्षा ऑडिट सेवाएं भी प्रदान करता है।

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर का यह हब, अनुसंधान एवं विकास परियोजनाओं को वित्तीय सहायता प्रदान करता है और उपयोगी प्रौद्योगिकी विकसित करने के लिए मार्गदर्शन भी प्रदान करता है। साथ ही प्रोटोटाइप विकास और स्केल–अप/विकास के लिए स्टार्ट–अप को वित्तीय सहायता और तकनीकी मार्गदर्शन भी प्रदान करता है। अभी तक इस हब ने 50 अनुसंधान एवं विकास परियोजनाओं और 49 स्टार्ट–अप को सहयोग किया है। इसके अलावा यह हब छात्रों (स्नातक, स्नातकोत्तर, पीएचडी, पोस्टडॉक) और संकाय सदस्यों (फेलो एवं एसोसिएट फेलो) को विभिन्न फेलोशिप प्रदान करता है। प्रशिक्षण कार्यक्रम लघु और दीर्घकालिक, ऑनलाइन और व्यक्तिगत पाठ्यक्रम हैं, जो कि छात्रों और पेशेवरों के लिए डिजाइन किए गए हैं। साइबर सुरक्षा के प्रति लोगों को जागरूक करने के लिए, इस हब द्वारा हाल ही में 10,000 प्रतिभागियों के साथ साइबर सुरक्षा कौशल कार्यक्रम आयोजित किया गया।

अंत में, मैं 'अंतस' की संपादकीय टीम को इतने महत्वपूर्ण विषय पर उनके इस सराहनीय प्रयास के लिए हार्दिक बधाई देता हूँ और आशा करता हूँ कि यह अंक पाठकों के ज्ञान को समृद्ध करेगा और उन्हें एक सुरक्षित डिजिटल भविष्य की दिशा में अग्रसर करेगा।

गणतंत्र दिवस की शुभकामनाओं के साथ!

मणीन्द्र अग्रवाल
निदेशक

शुभेच्छा

उप निदेशक की कलम से....

प्रिय पाठकों,

आप सभी को नव वर्ष 2025 एवं 76वें गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं!

संस्थान की हिंदी पत्रिका 'अंतस' का 27वां अंक आप सभी के समक्ष प्रस्तुत करते हुए, मुझे अत्यंत प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है। इस पत्रिका के सफल एवं समयबद्ध प्रकाशन हेतु मैं समस्त रचनाकारों एवं प्रकाशन से जुड़े सभी सदस्यों को हार्दिक शुभकामनाएं ज्ञापित करता हूं। संस्थान के विद्यार्थियों, संकाय सदस्यों, अधिकारियों, कर्मचारियों तथा अन्य परिसरवासियों ने विगत कई वर्षों से अपनी–अपनी रचनाओं से इस पत्रिका को समृद्ध एवं पठनीय बनाने में अपना सहयोग प्रदान किया है।

वर्तमान परिदृश्य में, हमारे देश में अभूतपूर्व वैज्ञानिक प्रगति हुई है। इसी क्रम में डिजिटलीकरण के क्षेत्र में अप्रत्याशित नवाचार हुए हैं, जिससे हमारे दैनिक जीवन में बहुत आसानी हुई है, लेकिन साथ ही साथ अनेक प्रकार की चुनौतियां एवं समस्याएं भी उत्पन्न हुई हैं। साइबर दुनिया जितनी सरल और सुविधाजनक है, उतनी ही संवेदनशील और जटिल भी है। आज साइबर अपराध, डेटा–चोरी, ऑनलाइन फ्रॉड और गोपनीयता के उल्लंघन जैसे विषयों ने न केवल संगठनों, बल्कि व्यक्तिगत जीवन को भी प्रभावित करना शुरू कर दिया है। इसलिए, साइबर सुरक्षा हमारे लिए एक चुनौती बनी हुई है एवं इसके प्रति जागरूकता तथा सावधानी अनिवार्य हो गई है।

मुझे प्रसन्नता है कि उपरोक्त चुनौतियों के समाधान की दिशा में यह संस्थान भी लगातार प्रयासरत है। संस्थान की यह पत्रिका जो कि 'साइबर दुनियाः सरलता, सुरक्षा एवं सावधानियां' विषय पर प्रकाशित की गई है, सभी परिसरवासियों एवं पाठकों को साइबर सुरक्षा की दिशा में जागरूक करने हेतु छोटा सा प्रयास है। इस अंक में कई ज्ञानात्मक एवं तथ्यात्मक लेख संकलित किए गए हैं जो कि काफी जनोपयोगी एवं लाभदायक सिद्ध होंगे।

अंत में मैं परिसरवासियों एवं पाठकों से अनुरोध करता हूं कि वे इस पत्रिका से अधिकाधिक जुड़ें और अपनी प्रतिभा से इस पत्रिका को इसी तरह अभिसिंचित करते रहें।

एक बार पुनः गणतंत्र दिवस की शुभकामनाओं के साथ!

ब्रज भूषण
उप निदेशक

शुभेच्छा

कुलसचिव की कलम से....

प्रिय पाठकों,

संस्थान की हिंदी पत्रिका अंतस का 27वां अंक 'साइबर दुनियाः सरलता, सुरक्षा एवं सावधानियां' जैसे वर्तमान दौर के ज्वलंत विषय को लेकर प्रकाशित हुआ है। उल्लेखनीय है कि आज के समय में जहां प्रौद्योगिकी ने हमारे दैनिक कार्यों एवं जीवन को सहज एवं सुविधाजनक बना दिया है, वहीं इसी प्रौद्योगिकी का प्रयोग करके कुछ साइबर अपराधियों ने हमारे जीवन को खतरे में डाल दिया है। आज के समाचार पत्रों के माध्यम से हमें ऐसी कई खबरें पढ़ने को मिलती हैं कि कुछ साइबर अपराधी देश के नागरिकों (शिक्षित नागरिकों सहित) को कई दिनों तक डिजिटल अरेस्ट करके तथा इस दौरान व्यक्ति को भय तथा निजता के हनन का डर दिखाकर उनसे लाखों रुपये की ठगी कर रहे हैं। निश्चित रूप से यह एक चिंतनीय विषय है कि देश–दुनिया में साइबर अपराध ने अपनी गहरी जड़ें जमा ली हैं, हालांकि सरकार की कुछ एजेंसियां साइबर अपराध को रोकने के लिए तेजी से कार्य कर रही हैं। साइबर अपराध से बचने के लिए हमेशा जागरूक रहना एवं किसी भी प्रकार के लोभ में न पड़ना ही कारगर उपाय हो सकते हैं।

देश तथा समाज की जरूरतों को ध्यान में रखते हुए, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर ने हमेशा जन–कल्याणकारी प्रौद्योगिकी विकसित करने का कार्य किया है। जहां तक साइबर सुरक्षा की बात है तो संस्थान में साइबर सुरक्षा के प्रति समर्पित सी3आई हब की स्थापना कई वर्षों पहले ही की जा चुकी है। यह केंद्र, सरकार की कई एजेंसियों के साथ मिलकर, साइबर संबंधी परियोजनाओं पर शोध कार्य कर रहा है जिसका लाभ निश्चित रूप से समाज एवं देश के नागरिकों को मिलेगा। इस केंद्र द्वारा समय–समय पर सेमिनार तथा सम्मेलनों का आयोजन भी किया जा रहा है ताकि विषय विशेषज्ञों को इस केंद्र द्वारा विकसित नवोन्मेषी शोध तकनीकों से अद्यतन बनाए रखा जा सके। उल्लेखनीय है कि इस केंद्र द्वारा वर्तमान में जारी महाकुंभ मेला–2025 प्रशासन को भी साइबर सुरक्षा के प्रति विशिष्ट सेवाएं प्रदान की जा रही हैं।

अंतस पत्रिका के कई रचनाकारों ने भी, अपने लेख के माध्यम से इस विषय पर अपने अनुभव साझा किए हैं जिससे पत्रिका के पाठकों को 'साइबर दुनियाः सरलता, सुरक्षा एवं सावधानियां' के बारे में नई–नई जानकारियां मिलेंगी। यहां पर मैं, परिसरवासियों तथा पत्रिका के पाठकों से भी अनुरोध करना चाहूँगा कि वे भी रचनाओं/लेख के माध्यम से अपने विचार, अनुभव तथा मौलिकता राजभाषा प्रकोष्ठ के साथ साझा करने की कृपा करें जिससे यह पत्रिका संस्थान की ख्याति के अनुरूप और भी ज्यादा सुग्राह्य बन सके।

गणतंत्र दिवस की ढेरों शुभकामनाओं के साथ!

विश्व रंजन
कुलसचिव

शुभेच्छा

मुख्य संपादक की कलम से....

अंतस परिवार से जुड़े सभी सदस्यों एवं पाठकों को सादर प्रणाम!

आप सभी को 'अंतस' के 27वें अंक के सफल एवं समयबद्ध प्रकाशन पर हार्दिक बधाइयां एवं 76वें गणतंत्र दिवस की ढ़ेरों शुभकामनाएं!

प्रस्तुत अंक 'साइबर दुनियाः सरलता, सुरक्षा एवं सावधानियां' जो कि अत्यंत प्रासंगिक और महत्वपूर्ण विषय है, को लेकर प्रकाशित हो रहा है। यह एक ऐसा विषय है जो प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से हर व्यक्ति से सरोकार रखता है। आज के समय में अधिकांश नागरिक (ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों सहित) प्रौद्योगिकी का वृहद स्तर पर प्रयोग कर रहे हैं। उल्लेखनीय है कि प्रौद्योगिकी का जितना उपयोग बढ़ रहा है उतना ही इसके दुरुपयोग के खतरे भी बढ़ रहे हैं। यही कारण है कि आज समाज के विभिन्न वर्गों से अलग–अलग तरह के साइबर धोखाधड़ी के समाचार सुनने एवं देखने को मिलते हैं। यह संस्थान समाज एवं शासन की जरूरतों के अनुरूप साइबर सुरक्षा संबंधी कई परियोजनाओं पर कार्य कर रहा है जिससे निश्चित रूप से देश के नागरिकों को साइबर खतरों के प्रति जागरुक एवं सुरक्षित किया जा सके।

इस संस्थान में प्रौद्योगिकी के साथ–साथ विविध भाषाओं के प्रति एक रोचक जुड़ाव देखने को मिलता है। इस परिसर में हिंदी दिवस, विश्व हिंदी दिवस, अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस, भारतीय भाषा उत्सव, गाथा एवं अक्षर जैसे साहित्यिक महोत्सव का वर्ष पर्यन्त आयोजन होता रहता है जिसमें सभी परिसरवासी उत्साहपूर्वक भाग लेते हैं। दिनांक 23 दिसंबर 2024 को माननीय संसदीय राजभाषा समिति द्वारा इस संस्थान का राजभाषा निरीक्षण सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। यह संस्थान के गौरवान्वित होने वाला पल रहा क्योंकि यह समिति एक उच्चाधिकार प्राप्त संसदीय समिति है जिसमें लोक सभा के 20 सदस्य एवं राज्य सभा के 10 सदस्य होते हैं तथा माननीय गृह मंत्री जी इस समिति के अध्यक्ष होते हैं।

साक्षात्कार में इस बार आपकी मुलाकात होगी **डॉ सुदेशना सिन्हा** से जिन्होंने नॉनलीनियर भौतिकी के क्षेत्र में श्रेष्ठ अनुसंधान कार्य किया है तथा जो रिवॉलूशनरी कंप्यूटिंग तकनीक के आविष्कारकों में से एक हैं। गुरुदक्षिणा में इस बार हम मिलेंगे, संस्थान के पूर्व छात्र **श्री प्रवीण त्रिपाठी** से, जो भा.प्रौ.सं. कानपुर विजन 2020 की संचालन समिति के सदस्य भी रह चुके हैं।

साहित्य यात्रा में डॉ. अर्णव भट्टाचार्य का लेखः **अद्‌भुत अमेजन**, तथा ज्योति मिश्रा की **पगली अम्मा** आदि प्रेरणादायी लेख हैं। इसके अतिरिक्त इस बार आपको कई अच्छी कविताओं से भी रुबरु होने का मौका मिलेगा जिसमें **ए चांद ज़रा मुस्करा, युवा है तू युवा, वह किनारे खड़ा आदमी, बीज का बोध, संघर्ष का सफर, ए रेलगाड़ी** आदि प्रमुख हैं। इस बार का तकनीकी लेख **कृत्रिम बुद्धिमता (एआई) आधारित लाइसेंसिगः सुरक्षा डेटा उपयोग और शोधकर्ताओं व लेखकों की चिंताएं तथा अवसर** पर केंद्रित है। आगे अतिथि रचनाकार में प्रबंधन सलाहकार एवं **'सेल्फिश'** पुस्तक के लेखक श्री संजय श्रीवास्तव का लेख **डर** सम्मिलित है जो हमें जीवन के अनुभवों से परिचय करवाता है।

मैं आशा करता हूं कि यह अंक न केवल पाठकों को साइबर जगत की सरलता और अवसरों से परिचित कराएगा, बल्कि उन्हें संभावित खतरों और सुरक्षा उपायों के प्रति जागरूक भी करेगा। हमारा प्रयास है कि यह पत्रिका पाठकों को तकनीकी ज्ञान के साथ–साथ डिजिटल सशक्तिकरण की दिशा में भी प्रेरित करे।

अंत में मैं सभी सुधी पाठकों से अनुरोध करता हूं कि आप भी अपने अनुभवों/विचारों तथा रचनाओं को लिपिबद्ध कर इसे अंतस परिवार को भेजें तथा इसका हिस्सा बनें जिससे आपके अनुभवों/विचारों तथा रचनाओं से पत्रिका के दूसरे पाठक भी लाभान्वित हो सकें। इस अंक के सभी रचनाकारों तथा संपादन से जुड़े सभी सदस्यों को साधुवाद।

धन्यवाद!

अर्क वर्मा

अर्क वर्मा
मुख्य संपादक

रिपोर्ट

हिंदी दिवस-2024

प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी हिंदी दिवस, हिंदी पखवाड़ा एवं भव्य पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया। भारत मंडपम, नई दिल्ली में दिनांक 14–15 सितंबर 2024 को आयोजित हिंदी दिवस–2024 एवं चतुर्थ अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन से इस कार्यक्रम की शुरुआत हुई। इस सम्मेलन में इस संस्थान से श्री विजय कुमार पाण्डेय, राजभाषा अधिकारी एवं श्री जगदीश प्रसाद, वरिष्ठ तकनीकी अधीक्षक (अनुवाद) ने सहभागिता की।

इस संस्थान में दिनांक 14 सितंबर से 30 सितंबर तक हिंदी पखवाड़ा एवं 30 सितंबर 2024 को हिंदी दिवस एवं पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया। इस दौरान संस्थान के संकाय सदस्यों, कर्मचारियों एवं विद्यार्थियों तथा विद्यालय स्तर पर विद्यालय के छात्र/छात्राओं के लिए तीन वर्गों में हिंदी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। इस संस्थान में उपस्थित तीन विद्यालयों–केन्द्रीय विद्यालय, कैंपस स्कूल एवं अपार्च्युनिटी स्कूल के विद्यार्थियों हेतु भी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। इन सभी प्रतियोगिताओं में लगभग 500 विद्यार्थियों, कर्मचारियों एवं स्कूली छात्रों ने भाग लिया। इन प्रतियोगिताओं के विजेता प्रतिभागियों का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है।

संस्थान के कर्मचारियों/अधिकारियों/संकाय सदस्यों के लिए आयोजित प्रतियोगिताओं के परिणाम

श्रुतलेखन प्रतियोगिता

क्रं सं.	नाम	पदनाम	विभाग/अनुभाग	स्थान
1	श्रीमती सिन्धुश्री एस. के	कनिष्ठ सहायक	आंतरिक अंकेक्षण अनुभाग	प्रथम
2	श्री विवेक राव वादी	सहायक शारीरिक शिक्षा अधिकारी	शारीरिक शिक्षा विभाग	द्वितीय
3	सुश्री नीरजा काटकर	वरिष्ठ परियोजना एसोसिएट	संगणक विज्ञान एवं अभियांत्रिकी	तृतीय

हिंदी निबंध लेखन प्रतियोगिता

क्रं सं.	नाम	पदनाम	विभाग/अनुभाग	स्थान
1	श्री विकास यादव	कनिष्ठ सहायक	अधिष्ठाता, विद्यार्थी कार्य	प्रथम
2	श्रीमती आकांक्षा सिंह	वरिष्ठ सहायक	बी.एस.बी.ई.	द्वितीय
3	सुश्री शहाना सुल्ताना	वरिष्ठ सहायक	पुस्तकालय	तृतीय

कहानी लेखन (चित्र देखकर) प्रतियोगिता

क्रं सं.	नाम	पदनाम	विभाग/अनुभाग	स्थान
1	सुश्री निधि अग्रवाल	कनिष्ठ सहायक	संस्थान निर्माण विभाग	प्रथम
2	श्री विकास यादव	कनिष्ठ सहायक	अधिष्ठाता, विद्यार्थी कार्य	द्वितीय
3	श्री अनुज त्रिपाठी	वरिष्ठ सहायक	अंतर्राष्ट्रीय संबंध कार्यालय	तृतीय

आशुभाषण प्रतियोगिता

क्रं सं.	नाम	पदनाम	विभाग/अनुभाग	स्थान
1	श्री गिरीश पंत	विजिटिंग प्रोजेक्ट रिसर्च इंजीनियर	सूचना प्रकोष्ठ	प्रथम
2	श्री दीपांकर सिंह	कनिष्ठ तकनीकी अधीक्षक	रसायन विभाग	द्वितीय
3	श्री उपेंद्र कुमार पाराशर	वरिष्ठ तकनीकी अधीक्षक	भौतिकी विभाग	तृतीय

राजभाषा एवं सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता

क्रं सं.	नाम	पदनाम	विभाग/अनुभाग	स्थान
1	श्री विकास यादव	कनिष्ठ सहायक	अधिष्ठाता, विद्यार्थी कार्य	प्रथम
2	श्री रमाकांत	स.पु.सू. अधिकारी	पी.के. केलकर पुस्तकालय	द्वितीय
3	श्री मजोज कुमार वर्मा	कनिष्ठ अधीक्षक	आंतरिक अंकेक्षण अनुभाग	तृतीय
4	श्री निशांक द्विवेदी	कनिष्ठ सहायक	कुलसचिव कार्यालय	तृतीय

जीवन के अविस्मरणीय पल (वाक) प्रतियोगिता

क्रं सं.	नाम	पदनाम	विभाग/अनुभाग	स्थान
1	श्री शुभम बैरागी	परियोजना कार्यपालक अधिकारी	वांतरिक्ष अभियांत्रिकी	प्रथम
2	श्री रणधीर कुमार सिंह	उप परियोजना प्रबंधक	कर्यालय अधिष्ठाता, अनुसंधान एवं विकास	द्वितीय
3	श्री दीपांकर सिंह	कनिष्ठ तकनीकी अधीक्षक	रसायन विभाग	तृतीय

विद्यालयी प्रतियोगिताओं के परिणाम

चित्र बनाकर रंग भरो प्रतियोगिता (कक्षा 1 से कक्षा 3 के लिए)

क्रं सं.	नाम	पिता का नाम	विद्यालय	कक्षा	स्थान
1	लक्ष्मी	श्री अशोक कुमार	कैंपस स्कूल, आईआईटी कानपुर	3	प्रथम
2	कनिष्का	श्री राजन कुमार	कैंपस स्कूल, आईआईटी कानपुर	3	द्वितीय
3	काव्या	श्री वीरेंद्र	अपार्च्युनिटी स्कूल, आईआईटी, कानपुर	3	तृतीय

हिंदी में वाक्य लेखन प्रतियोगिता
(कक्षा 4 और कक्षा 5 के लिए)

क्रं सं.	नाम	पिता का नाम	विद्यालय	कक्षा	स्थान
1	सात्विक वत्स	श्री मनोज कुमार राय	कैंपस स्कूल आईआईटी कानपुर	4	प्रथम
2	आयुष्मान श्रीवास्तव	श्री सुनील श्रीवास्तव	कैंपस स्कूल आईआईटी कानपुर	4	द्वितीय
3	मानस	श्री राजेश	केन्द्रीय विद्यालय आईआईटी कानपुर	4	तृतीय

वाक्य लेखन प्रतियोगिता
(कक्षा 6 से कक्षा 8 के लिए)

क्रं सं.	नाम	पिता का नाम	विद्यालय	कक्षा	स्थान
1	यश सिंह	श्री धर्मेंद्र सिंह	केन्द्रीय विद्यालय, आईआईटी कानपुर	6	प्रथम
2	आयुश गौर	श्री रमाकांत	नर्चर इंटरनेशनल स्कूल, कानपुर	8	द्वितीय
3	मुक्ति श्रीवास्तव	श्री राजकुमार श्रीवास्तव	केन्द्रीय विद्यालय, आईआईटी कानपुर	7	तृतीय

स्वरचित कविता लेखन प्रतियोगिता
(कक्षा 9 से कक्षा 12 के लिए)

क्रं सं.	नाम	पिता का नाम	विद्यालय	कक्षा	स्थान
1	श्रेया त्रिवेदी	श्री सुबोध त्रिवेदी	डॉ वीरेंद्र स्वरूप एजुकेशन सेंटर कानपुर	12	प्रथम
2	अवनीश त्रिवेदी	श्री सुबोध कुमार	नर्चर इंटरनेशनल स्कूल कानपुर	9	द्वितीय
3	ख्याति सिंह	स्व. श्री रामबाबू सिंह	केन्द्रीय विद्यालय आईआईटी कानपुर	12	तृतीय

संस्थान के विद्यार्थियों के लिए प्रतियोगिताएं
किरदार प्रतियोगिता

क्रं सं.	नाम	कार्यक्रम	विभाग / अनुभाग	स्थान
1	आदित्य सिंह	बी. टेक	सिविल अभियांत्रिकी	प्रथम
2	कार्तिक नाथ शर्मा	एम. टेक	यांत्रिक अभियांत्रिकी	द्वितीय
3	हर्षदा विनायक राजहंस	बी. टेक	विद्युत अभियांत्रिकी	तृतीय

तर्क प्रतियोगिता

क्रं सं.	नाम	कार्यक्रम	विभाग / अनुभाग	स्थान
1	श्रुति	बी. टेक	विद्युत अभियांत्रिकी	प्रथम
2	आदित्य सिंह	बी. टेक	सिविल अभियांत्रिकी	द्वितीय
3	आयुश दुबे	बी. टेक	सिविल अभियांत्रिकी	तृतीय

काव्यांजलि प्रतियोगिता

क्रं सं.	नाम	कार्यक्रम	विभाग / अनुभाग	स्थान
1	सौभाग्य पाण्डे	बी. एस	पृथ्वी विज्ञान	प्रथम
2	संजय खारा	बी. टेक	पदार्थ विज्ञान अभियांत्रिकी	द्वितीय
3	सौम्या मिश्रा	पी.एच.डी.	रसायन	तृतीय

संसदीय वाद–विवाद प्रतियोगिता

क्रं सं.	नाम	कार्यक्रम	विभाग / अनुभाग	स्थान
1	आदित्य सिंह	बी. टेक	सिविल अभियांत्रिकी	प्रथम
2	अतुल साहू	बी. टेक	यांत्रिक अभियांत्रिकी	प्रथम
3	वृतिका साहू	बी. टेक	बी. एस. बी. ई.	प्रथम
4	हर्षदा विनायक राजहंस	बी. टेक	विद्युत अभियांत्रिकी	प्रथम
5	आयुष दुबे	बी. टेक	सिविल अभियांत्रिकी	प्रथम
6	केशव मीना	बी. टेक	विद्युत अभियांत्रिकी	प्रथम
7	ध्रुव प्रताप सिंह	बी. टेक	वांतरिक्ष अभियांत्रिकी	प्रथम
8	शुभांगम राज	बी. टेक	सिविल अभियांत्रिकी	प्रथम
9	समृद्धि केदारी	बी. टेक	विद्युत अभियांत्रिकी	प्रथम
10	करण चौहान	बी. टेक	सिविल अभियांत्रिकी	प्रथम
11	सुतार यदनेश संदीप	बी. टेक	सिविल अभियांत्रिकी	प्रथम
12	आशुतोष सिंह	बी. एस	पृथ्वी विज्ञान	प्रथम
13	मोहित चौधरी	बी. टेक	वांतरिक्ष अभियांत्रिकी	द्वितीय
14	उत्कर्ष केशरवानी	बी. एस	सांख्यिकी एवं डेटा साइंस	द्वितीय
15	प्रिंस यादव	बी. टेक	रासायनिक अभियांत्रिकी	द्वितीय
16	वत्सल मित्तल	बी. टेक	बी.एस.बी.ई.	द्वितीय
17	अंश आदर्श	बी. टेक	संगणक अभियांत्रिकी	द्वितीय
18	कार्तिक नाथ शर्मा	एम. टेक	यांत्रिक अभियांत्रिकी	द्वितीय
19	अमन उपाध्याय	बी. टेक	यांत्रिक अभियांत्रिकी	द्वितीय
20	शैवाल द्विवेदी	एम. टेक	यांत्रिक अभियांत्रिकी	तृतीय
21	संजय खारा	बी. टेक	पदार्थ विज्ञान अभियांत्रिकी	तृतीय
22	अभिषेक एल	बी. एस	आर्थिक विज्ञान	तृतीय
23	प्रिंस कुमार	बी. टेक	सिविल अभियांत्रिकी	तृतीय
24	आशीष कुमार झा	बी. टेक	यांत्रिक अभियांत्रिकी	तृतीय
25	प्रसून श्रीवास्तव	बी. टेक	यांत्रिक अभियांत्रिकी	तृतीय

इन सभी प्रतियोगिताओं के समापन पर दिनांक 30 सितंबर 2024 को भव्य रुप से हिंदी दिवस एवं पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया। प्रोफेसर कुमार वैभव श्रीवास्तव, अधिष्ठाता प्रशासन इस समारोह के मुख्य अतिथि एवं श्री विश्व रंजन, कुलसचिव विशिष्ट अतिथि रहे। इस अवसर पर प्रभारी प्रोफेसर राजभाषा प्रकोष्ठ, प्रोफेसर अर्क वर्मा एवं राजभाषा अधिकारी श्री विजय कुमार पाण्डेय

भी उपस्थित रहे। मुख्य अतिथि द्वारा सभी विजेताओं को मेडल, ट्राफी एवं नगद पुरस्कार राशि देकर सम्मानित किया गया। इस समारोह का संचालन श्री दुर्गेश कुमार मिश्र, कनिष्ठ तकनीकी अधीक्षक (अनुवाद) एवं श्री अरविन्द कुमार सैनी, कनिष्ठ सहायक द्वारा सफलतापूर्वक किया गया।

श्री जगदीश प्रसाद, वरिष्ठ तकनीकी अधीक्षक (अनुवाद) द्वारा सभी आयोजक सदस्यों, प्रतिभागियों एवं उपस्थित सम्मानित विद्वजनों को धन्यवाद ज्ञापन के साथ समारोह का समापन हुआ।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की आठवीं बैठक

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति कानपुर, कार्यालय–3 की आठवीं बैठक का आयोजन समिति के कार्यवाहक अध्यक्ष एवं प्रभारी प्रोफेसर राजभाषा प्रकोष्ठ, प्रोफेसर अर्क वर्मा की अध्यक्षता में दिनांक 25 अक्टूबर 2024 को संपन्न हुई। इस बैठक में राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, हिंदी शिक्षण योजना, मीरपुर कैंट कानपुर के सहायक निदेशक श्री नवाज़ शरीफ, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति कानपुर, कार्यालय–3 के सदस्य सचिव श्री विजय कुमार पाण्डेय के अलावा समिति के 21 सदस्य कार्यालयों के 36 कार्यालय प्रमुखों/वरिष्ठ अधिकारियों ने भाग लिया।

सदस्य सचिव द्वारा सदस्य कार्यालयों से प्राप्त दिनांक 01 जनवरी 2024 से 30 जून 2024 तक की छमाही रिपोर्ट की समीक्षा की गई। सदस्य सचिव ने सभी सदस्य कार्यालयों से आह्वान किया कि कृपया छमाही रिपोर्ट नराकास द्वारा उपलब्ध कराए गए प्रपत्र में ही प्रेषित करें क्योंकि जब इन रिपोर्टों को संकलित किया जाता है तो नराकास कार्यालय को कई तरह की समस्याओं का सामना करना पड़ता है। उन्होंने आगे सूचित किया कि कई कार्यालय धारा 3(3) के तहत जारी होने वाले 14 प्रकार के दस्तावेजों को केवल हिंदी में या केवल अंग्रेजी में जारी कर रहे हैं जो कि धारा 3 (3) का उल्लंघन है। ये दस्तावेज अनिवार्य रूप से द्विभाषी में ही जारी किए जाने चाहिए। सदस्य सचिव ने सभी से छमाही रिपोर्ट को यथासमय प्रेषित करने का अनुरोध किया।

इस अवसर पर नराकास की वार्षिक पत्रिका के प्रथम अंक का विमोचन अध्यक्ष महोदय द्वारा किया गया। साथ ही पिछली छमाही के दौरान नराकास–3 के निम्नलिखित सदस्य कार्यालयों को उत्कृष्ट कार्य निष्पादन करने पर स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया गया।

(1) हिंदुस्तान एरोनॉटिक्स लिमिटेड, परिवहन वायुयान प्रभाग, कानपुर
(2) भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण हवाई अड्डा, कानपुर
(3) भारतीय कृत्रिम अंग निर्माण निगम, कानपुर

इसके अलावा, गत छमाही के दौरान नराकास कार्यालयों द्वारा विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया था जिनके विजेताओं को स्मृति चिन्ह एवं प्रमाणपत्र भेंट कर सम्मानित किया गया। प्रतियोगिताओं एवं इनके विजेता प्रतिभागियों का विवरण निम्नवत् है।

(क) हस्तलेख प्रतियोगिता (आयोजक कार्यालय: भारतीय खाद्य निगम, मण्डल कार्यालय, कानपुर)

(1) श्री गोपाल चन्द्र शर्मा, वरिष्ठ सहायक, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, कानपुर, प्रथम

(2) श्रीमती वंदना सिंह राठौर, टीजीटी पी.एण्ड एच.ई, केन्द्रीय विद्यालय, आईआईटी कानपुर, द्वितीय

(3) श्री विश्व दीपक कुशवाहा, तकनीशियन, पावर ग्रिड कारपोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड, कानपुर, द्वितीय

(4) कुमारी आस्था त्रिपाठी, बहुउद्देशीय कर्मचारी, सीसीआरएएल, कानपुर, तृतीय

(5) श्री दयाशंकर मिश्र, आशुलिपिक ग्रेड–1, राष्ट्रीय शर्करा संस्थान, कानपुर, तृतीय

(6) श्री निर्मल चतुर्वेदी, पी.आर.टी , केन्द्रीय विद्यालय, भा.प्रौ सं. कानपुर, तृतीय

(7) श्री संजीव कुमार, सहायक श्रेणी प्रथम, सामान्य, भारतीय खाद्य निगम, कानपुर, सांत्वना

(8) मो. मुद्दसिर, हिंदी सहायक, भारतीय कृत्रिम अंग निर्माण निगम, कानपुर, सांत्वना

(9) श्री रोहित सिंघला, प्रशासनिक सहायक, हिंदुस्तान पेट्रोलियम कारपोरेशन लिमिटेड, कानपुर, सांत्वना

(ख) हिंदी सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता (आयोजक कार्यालय: एचएएल टीएडी, कानपुर)

(1) श्री समरेन्द्र कुमार कर, वरिष्ठ प्रबंधक, हिंदुस्तान एरोनॉटिक्स लिमिटेड परिवहन प्रभाग, कानपुर, प्रथम

(2) श्री नीलाम्बर सिंह, सहायक महाप्रबंधक, भारतीय खाद्य निगम, कानपुर, द्वितीय

(3) श्री विश्व दीपक कुशवाहा, तकनीशियन, पावर ग्रिड कारपोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड, कानपुर, तृतीय

(4) श्री अनिल कुमार गुप्ता, अवर दूरसंचार अधिकारी, भारत संचार निगम लिमिटेड, कानपुर, सांत्वना

(ग) हिंदी निबंध प्रतियोगिता (आयोजक कार्यालय: भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण, कानपुर)

(1) श्रीमती ममता पाल, अभियंता, पावर ग्रिड कारपोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड, कानपुर, प्रथम

(2) श्री मनोज कुमार कुशवाहा, उप मंडल अभियंता, भारत संचार निगम लिमिटेड, कानपुर, द्वितीय

(3) श्री दयाशंकर मिश्र, आशुलिपिक ग्रेड–1, राष्ट्रीय शर्करा संस्थान, कानपुर, तृतीय

(4) श्री अभिषेक जैन, पी.जी.टी. गणित, केन्द्रीय विद्यालय, भा.प्रौ.सं. कानपुर, सांत्वना

समिति के अध्यक्ष महोदय ने उपस्थित सदस्यों का आभार प्रकट किया एवं अधिक से अधिक संख्या में नराकास बैठकों में शामिल होने का आह्वान किया। उन्होंने सभी को अवगत कराया कि राजभाषा के प्रयोग को बढ़ावा देने और राजभाषा नीति के कार्यान्वयन में आने वाली कठिनाइयों को दूर करने के लिए एक संयुक्त मंच प्रदान करने के उद्देश्य से भारत सरकार द्वारा नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों का गठन किया गया है। यह समिति दिन–प्रतिदिन उत्कृष्ट नराकास की तरफ अग्रसर है। इस नराकास द्वारा प्रत्येक छमाही हिंदी के प्रचार–प्रसार हेतु विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जा रहा है, एवं अब पत्रिका का प्रकाशन भी किया गया है। अध्यक्ष महोदय ने पत्रिका प्रकाशन हेतु भारतीय खाद्य निगम, विभिन्न प्रतियोगिताओं के आयोजक कार्यालयों एवं सभी विजेताओं को हार्दिक शुभकामनाएं दीं। सदस्य सचिव, श्री विजय कुमार पाण्डेय, राजभाषा अधिकारी द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ बैठक संपन्न हुई।

विश्व हिंदी दिवस-2025

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर में दिनांक 4 एवं 5 जनवरी 2025 को विश्व हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में, नवांकुर के अंतर्गत दो दिवसीय साहित्यिक कार्यक्रम– कवि सम्मेलन 'अनंतिनी' एवं कहानियों का गुलदस्ता 'अभ्युदय' का आयोजन किया गया। ये कार्यक्रम राजभाषा प्रकोष्ठ, शिवानी केंद्र एवं हिंदी साहित्य सभा के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित किए गए।

'अनंतिनी'– कवि सम्मेलन 4 जनवरी की शाम को आयोजित किया गया था। कार्यक्रम का आयोजन इतना भव्य था कि आउटरीच ऑडिटोरियम पूरी तरह से भरा हुआ था। लोग कुर्सियों पर ही नहीं अपितु जमीन पर भी बैठकर इस अनूठे साहित्यिक अनुभव का हिस्सा बने। इस कार्यक्रम में प्रसिद्ध कवि एकाग्र शर्मा, बाबुषा कोहली, वरुण आनंद, अभिषेक शुक्ला, गौरव 'साक्षी', बालमोहन पाण्डेय, अली हैदर, और हर्षराज हर्ष ने अपनी भावनाओं और विचारों को शब्दों में पिरोकर श्रोताओं के गहरे भावनात्मक अनुभवों से जोड़ा। गजल, नज़्म और कविताओं की सरलता, सत्यता व सुंदरता ने इस शाम को जोश और जुनून से भरकर रंगीन कर दिया। कविताओं के प्रत्येक शब्द ने श्रोताओं को सोचने पर मजबूर कर दिया और समाज की जटिलताओं को सरल रूप में प्रस्तुत किया।

वहीं, 5 जनवरी की शाम को आयोजित 'अभ्युदय', कहानियों का गुलदस्ता, सोने पर सुहागा सिद्ध हुआ। कार्यक्रम में मशहूर कहानीकार 'मेहेक मिर्जा प्रभु' और 'अमनदीप सिंह' ने अपनी दिलचस्प और संवेदनाओं से भरपूर कहानियां पेश कीं, जो दर्शकों को उन कहानियों की काल्पनिक दुनिया में उतारती चली गईं। इन कहानियों ने मानवीय संवेदनाओं, रिश्तों की जटिलताओं और जीवन के सच्चे पहलुओं को छुआ, जिसने हर किसी को प्रभावित किया।

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर का माननीय संसदीय राजभाषा समिति द्वारा राजभाषा निरीक्षण

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर का माननीय संसदीय राजभाषा समिति द्वारा निरीक्षण दिनांक 23 दिसंबर 2024 को लखनऊ में सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। विदित हो कि संसदीय राजभाषा समिति का गठन राजभाषा अधिनियम, 1963 के अधीन वर्ष 1976 में किया गया था। यह एक उच्चाधिकार प्राप्त संसदीय समिति है। इसमें 30 संसद सदस्य होते हैं, 20 लोकसभा से और 10 राज्यसभा से। माननीय गृहमंत्री जी इस समिति के अध्यक्ष हैं।

इस अवसर पर निरीक्षण समिति के संयोजक डॉ. दिनेश शर्मा, संसद सदस्य (राज्य सभा) द्वारा प्रोफेसर अर्क वर्मा, प्रभारी प्रोफेसर राजभाषा प्रकोष्ठ को निरीक्षण के सफलतापूर्वक संपन्न होने संबंधी प्रमाण पत्र प्रदान किया गया। दिनांक 23–24 दिसंबर को नियत, 30 कार्यालयों के सफल निरीक्षण में भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर से प्रोफेसर मणीन्द्र अग्रवाल, निदेशक, प्रोफेसर ब्रज भूषण, उप निदेशक, श्री विश्व रंजन, कुलसचिव, प्रोफेसर अर्क वर्मा, प्रभारी प्रोफेसर राजभाषा प्रकोष्ठ के निदेशन में श्री विजय कुमार पाण्डेय, राजभाषा अधिकारी, श्री जगदीश प्रसाद, वरिष्ठ तकनीकी अधीक्षक (अनुवाद), श्री दुर्गेश कुमार मिश्र, कनिष्ठ तकनीकी अधीक्षक (अनुवाद), श्री अरविन्द कुमार सैनी, कनिष्ठ सहायक एवं श्री नितेश कुमार, उप परियोजना प्रबंधक का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

अक्षर साहित्यिक महोत्सव-2024

'अक्षर'– भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर का साहित्यिक महोत्सव, शिवानी केन्द्र (हिंदी एवं अन्य भारतीय भाषाओं का संपोषण एवं समन्वय केन्द्र), राजभाषा प्रकोष्ठ, 'गाथा'– एक ऑडियो होस्टिंग प्लेटफॉर्म, एस आई आई सी, आईआईटी कानपुर 'इन्क्यूबेशन कंपनी' एवं 'हिंदी साहित्य सभा'– आईआईटी कानपुर के छात्रों का एक संगठन, द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित एक तीन दिवसीय साहित्यिक महोत्सव है, जिसकी शुरुआत वर्ष 2022 में की गई थी। यह इस संस्थान द्वारा आयोजित अपनी तरह का एक अनूठा साहित्यिक महोत्सव है जो साहित्यिक और सांस्कृतिक उत्सव के दौरान कवियों, लेखकों, संगीतकारों, नर्तकों और फिल्म निर्माताओं सहित विभिन्न कला रूपों को एक साथ लाता है। यह महोत्सव न केवल अपने छात्रों को बल्कि परिसरवासियों को भी भारतीय भाषाओं तथा विभिन्न कला रूपों से परिचय कराता है। अपने–अपने क्षेत्रों में सर्वश्रेष्ठ और सबसे प्रशंसित कलाकारों को एक साथ लाकर हम अपने छात्रों को न केवल उनके कठिन शैक्षणिक जीवन के बीच एक अलग वातावरण प्रदान करते हैं बल्कि उनकी कुछ छिपी हुई प्रतिभाओं को निखारने के लिए उनकी आंतरिक रचनात्मकता को भी प्रेरित करते हैं। इसके तृतीय संस्करण का आयोजन दिनांक 17 से 19 अक्टूबर 2024 के बीच किया गया।

इस संस्थान के पूर्व छात्र एवं श्रीमती गौरा पंत 'शिवानी' जी के पुत्र तथा मिकी और विनीता चैरिटेबल ट्रस्ट के संस्थापक श्री मुक्तेश पंत 'मिकी' ने अक्षर–2024 को एक नई ऊंचाई प्रदान करने हेतु अहम सहयोग उपलब्ध कराया। जिसके लिए हम उनका सादर आभार प्रकट करते हैं।

प्रथम दिवस के कार्यक्रम

अक्षर साहित्यिक महोत्सव– 2024 का उद्घाटन दिनांक 17.10.2024 को अपराह्न 02:30 बजे इस संस्थान के आउटरीच ऑडिटोरियम में प्रोफेसर कुमार वैभव श्रीवास्तव, अधिष्ठाता प्रशासन, प्रोफेसर शलभ, अधिष्ठाता शैक्षिक कार्य, प्रोफेसर तरुण गुप्ता, अधिष्ठाता अनुसंधान एवं विकास, प्रोफेसर सुमन सौरभ, सह अधिष्ठाता हाल अफेयर्स, श्री विश्व रंजन, कुलसचिव द्वारा प्रोफेसर कांतेश बालानी, समन्वयक शिवानी केन्द्र, प्रोफेसर अर्क वर्मा, सह–समन्वयक शिवानी केन्द्र एवं प्रभारी प्रोफेसर राजभाषा प्रकोष्ठ तथा श्री अमित तिवारी संस्थापक एवं निदेशक (गाथा) की उपस्थिति में किया गया।

तत्पश्चात सुश्री सुदीप्ति जी द्वारा एक लघु–सत्र का आयोजन किया गया जिसमें प्रख्यात उपन्यासकार शिवानी जी की कहानियों और उपन्यासों के साहित्य के संबंध में अनुभव साक्षा किया गया। इसके पश्चात कथारंग समूह द्वारा शिवानी जी की दो कहानियों (माई और सती) का सजीव वाचन किया गया। इस समूह में सुश्री नूतन वशिष्ठ, सुश्री अनुपमा शरद, पुनीता अवस्थी, अनमोल मिश्रा एवं कौंतेय जय शामिल थे।

तत्पश्चात एक ओपन माइक कार्यक्रम (बच्चों का कोना) का आयोजन किया गया। जिसमें संस्थान परिसर के छोटे–छोटे बच्चों ने, अपनी प्रतिभा के प्रदर्शन से लोगों को मंत्रमुग्ध कर दिया। इसी क्रम में उभरते सितारे उभरती प्रतिभाओं के समागम का भी आयोजन किया गया। जिसमें पंद्रह वर्ष से ऊपर के उभरते कवियों ने अपनी कविताएं प्रस्तुत की। इसी क्रम में दास्तानगोईः दास्तान–ए–साहिर लुधियानवी का आयोजन किया गया, जिसमें प्रसिद्ध शायर, कवि एवं गीतकार साहिर लुधियानवी साहब की शुरुआती शोहरत, मुंबई में उनके अनुभव और हिंदी फिल्म जगत के प्रसिद्ध गीतकार/शायर/कवि बनने की कहानी का सजीव वाचन श्री हिमांशु बाजपेयी और प्रज्ञा शर्मा के द्वारा किया गया।

तत्पश्चात वाराणसी के रूपवाणी थियेटर समूह द्वारा, सुप्रसिद्ध कवि, आलोचक, नाटककार एवं भारत भूषण अग्रवाल पुरस्कार से सम्मानित श्री व्योमेश शुक्ल के निर्देशन में, सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' की प्रसिद्ध कविता 'राम की शक्ति पूजा' का मंत्रमुग्ध कर देने वाला नाट्य रूपांतरण प्रस्तुत किया। इस दौरान पूरा सभागार भरा हुआ था एवं सभी ने खड़े होकर इस समूह का उत्साहवर्धन किया।

द्वितीय दिवस के कार्यक्रम

'सिनेमाः महज मनोरंजन या सामाजिक परिवर्तन का साधन' विषय पर बॉलीवुड के प्रसिद्ध निर्माता व निर्देशक अतुल तिवारी, सुहैल तातारी, मेघना मलिक, तरुन शुक्ला और आनंद कक्कड़ के साथ भारतीय सिनेमा के सामाजिक प्रभाव पर विस्तृत परिचर्चा हुई। इसका संचालन श्री आनंद कक्कड़ ने किया। तत्पश्चात, प्रसिद्ध युवा गायक 'राहगीर' ने अपनी स्वरचित कविताओं को प्रस्तुत किया। ये संस्थान के युवा विद्यार्थियों के बीच बहुत प्रसिद्ध हैं एवं सभी ने इस कार्यक्रम का बहुत लुत्फ़ उठाया। तत्पश्चात, श्रीमती अमृता भूषण, श्रीमती डॉ. संगीता श्रीवास्तव और बच्चों ने कथक नृत्य प्रस्तुत किया जिसे लोगों ने बहुत सराहा। इसी क्रम में पश्चिम बंगाल से आई हुई ईशा चक्रवर्ती एवं समूह द्वारा एक अर्ध–शास्त्रीय संगीत और गज़ल कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। इस कार्यक्रम से लेकर दिवस अंत तक सभागार पूरी तरह से भरा रहा। तत्पश्चात, यूसुफ खान निज़ामी, सिकंदराबाद घराना दरगाह हज़रत निजामुद्दीन औलिया दिल्ली द्वारा एक कव्वाली कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया।

तत्पश्चात, बनारस घराने की पद्मश्री डॉ. सोमा घोष द्वारा हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया एवं दिवस का अंतिम कार्यक्रम अनिरुद्ध वर्मा 'रागों के रंग अनिरुद्ध वर्मा के संग' समूह द्वारा शास्त्रीय हिंदुस्तानी रागों पर एक ताजा प्रस्तुति थी।

तृतीय दिवस के कार्यक्रम

'कृष्ण वाच्यः मानव रूपी भगवान से शिक्षा' कार्यक्रम में प्रसिद्ध मनोचिकित्सक एवं लेखक डॉ. आलोक बाजपेयी एवं प्रख्यात लेखिका भावना मिश्रा के साथ वार्तालाप हुई जिसमें डॉ. आलोक बाजपेयी ने श्री कृष्ण के जीवन के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला और सबसे बड़ी बात रही कि उन्होंने इस दौरान 5 गीता के बारे में जानकारी उपलब्ध करायी जिसमें उद्धव गीता, काम गीता, अनु गीता, पाण्डव गीता एवं भगवत् गीता शामिल है।

तत्पश्चात, 'भारतीय भाषाओं में तकनीकी नवाचारः अत्याधुनिक स्थिति' विषय पर प्रो. निशीथ श्रीवास्तव एवं प्रो. अर्णव भट्टाचार्य द्वारा भारतीय भाषाओं में तकनीकी नवाचार पर गहन चर्चा की गई।

कार्यक्रम का समापन कवि सम्मेलन और मुशायरा से हुआ, जिसमें देश के सर्वश्रेष्ठ कवियों और शायरों जैसे जनाब वसीम बरेलवी, राजेश रेड्डी, वसीम नादिर, अबरार काशिफ, व्योमेश शुक्ल, स्वयं श्रीवास्तव, मनु वैशाली, एकाग्र शर्मा एवं सिद्धार्थ सिंह ने भाग लिया। कवियों ने अपनी भावपूर्ण कविताओं और गजलों से श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया एवं इतने उच्चकोटि के कवियों का सानिध्य पाकर दर्शक अभिभूत हो गये। तत्पश्चात राजभाषा अधिकारी श्री विजय कुमार पाण्डेय के द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ अक्षर–2024 का समापन हुआ। इस दौरान एक पुस्तक मेले का भी आयोजन किया गया, जिसमें देश भर के प्रमुख प्रकाशक शामिल हुए। पुस्तक मेले में कुल 32 स्टाल लगाए गए।

डॉ. सुदेशना सिन्हा

डॉ. सुदेशना सिन्हा भौतिकी विभाग में प्रोफेसर हैं और भारतीय विज्ञान शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान (आईआईएसईआर), मोहाली में उप निदेशक पद पर कार्यरत हैं। उन्होंने वर्ष 1985 में भा.प्रौ.सं. कानपुर से रसायन विज्ञान में अपनी पांच वर्षीय एकीकृत मास्टर डिग्री पूरी की। आप मुख्य रूप से नॉनलीनियर भौतिकी के क्षेत्र में काम करती हैं। डॉ. सिन्हा एक रिवॉलूशनरी कंप्यूटिंग तकनीक (कैओस कंप्यूटिंग) के आविष्कारकों में से एक हैं, जिसे अमेरिका स्थित कैओलॉजिक्स कंपनी द्वारा व्यावसायिक रूप से विकसित किया गया है। उन्हें भौतिकी के लिए बिड़ला पुरस्कार से सम्मानित किया गया है, साथ ही जे.सी. बोस राष्ट्रीय फेलोशिप से भी सम्मानित किया गया है। आप भारतीय विज्ञान अकादमी (आईएएस), बैंगलोर, भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी (आईएनएसए), नई दिल्ली और विश्व विज्ञान अकादमी (टीडब्लूएएस), ट्राइस्टे की एक निर्वाचित फेलो भी हैं। अंतस परिवार के साथ एक साक्षात्कार में, डॉ. सिन्हा ने अपने शोध, चुनौतियों, भा.प्रौ. सं. कानपुर में अपने दिनों तथा अन्य विषयों के बारे में बात की। साक्षात्कार के प्रमुख अंश इस प्रकार से हैंः

अंतस परिवारः आपने अपना करियर भा.प्रौ.सं. कानपुर में रसायन विज्ञान में मास्टर डिग्री के साथ शुरू किया; फिर, आपने नॉनलीनियर भौतिकी में शोध करके इसमें विशेषज्ञता हासिल की। आप कैओस कंप्यूटिंग के आविष्कारकों में से एक हैं और कॉम्पलेक्स नेटवर्क के विशेषज्ञ हैं– आपने अपने करियर में एक विशाल क्षेत्र को कवर किया है। हमें अपनी सफर के बारे में बताएं और साथ ही यह भी साझा करें कि आपको लगातार नए क्षेत्रों की खोज करने के लिए क्या प्रेरित करता रहता है।

डॉ. सिन्हाः नॉनलीनियर डायनेमिक्स वास्तव में एक अंतःविषयक शोध क्षेत्र है, और अनुप्रयुक्त गणित, भौतिकी, रसायन विज्ञान और जीव विज्ञान से लेकर इंजीनियरिंग विज्ञान तक के क्षेत्रों के शोधकर्ताओं को आकर्षित करता है। इस क्षेत्र की अंतःविषयकता मुझे वास्तव में आकर्षित करती है, और मेरे भा.प्रौ.सं. कानपुर के वृहद प्रशिक्षण ने मुझे शैक्षणिक सफर में जो भी नई तकनीकें चाहिए थीं, उन्हें सीखने में

सक्षम बनाया। शोध में, आप जिस प्रश्न को हल करना चाहते हैं, वह प्रमुख होता है, और किसी को भी उस प्रश्न को हल करने में प्रयास करने के लिए किसी भी तकनीक का उपयोग करने का प्रयास करना चाहिए। इसलिए जितना अधिक कोई व्यक्ति विभिन्न विषयों में विचारों और तकनीकों को समझेगा, प्रश्न को हल करने में उतना ही अधिक प्रभावशील होगा। परिणामों का महत्व किसी के विषय से परे भी हो सकता है, और इसके लिए सभी को सतर्क रहना चाहिए एवं उन संभावित अनुप्रयोगों को करना चाहिए।

अंतस परिवारः आपको करियर के विकल्प के रुप में कॉर्पोरेट जॉब के स्थान पर पीएचडी करने और एक फैकल्टी मेंबर बनने के लिए किस बात ने प्रेरित किया? आपके कार्य का कौन सा पहलू आपको सबसे ज्यादा आकर्षित करता है?

डॉ. सिन्हाः शैक्षणिक कार्य एक व्यवसाय से कहीं बढ़कर है, जीवन जीने का एक तरीका है। शैक्षणिक जगत में रहते हुए आप अपनी पसंद का कार्य कर रहे होते हो और इसके लिए आपको भुगतान भी मिलता है! सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि शिक्षा जगत में करियर एक तेज दौड़ नहीं है, बल्कि एक लंबी दूरी की दौड़ है। शिक्षा जगत के बारे में सबसे आकर्षक बात यह है कि कुछ मायनों में यह वाकई सीमाओं से परे है। जब कोई पेपर लिखता है, तो उसे दुनिया भर के शोधकर्ता पढ़ते हैं और यह जानने से ज्यादा रोमांच की कोई बात नहीं है कि आप उन लोगों तक पहुँचे हैं जिनसे आप पहले कभी नहीं मिले हैं या कभी भी वास्तविक रूप से नहीं मिलेंगे। यह उन पेशों में से एक है जो बौद्धिक परिदृश्य में भावी पीढ़ी के लिए पदचिन्ह (चाहे कितने भी छोटे हों) छोड़ने का अवसर प्रदान करता है। यह एक ऐसा पेशा भी है जो आंतरिक रूप से गैर-पदानुक्रमित है। आप अपने समय के स्वामी हैं और आपकी योग्यता की भावना सिर्फ किसी विशिष्ट संगठन में आपके स्थान से निर्धारित नहीं होती है। अंत में, शिक्षक, शैक्षणिक कार्य में लगे रहते हैं एवं जीवंत युवा प्रतिभाओं के बीच रहते हैं। हालांकि कड़ी मेहनत, हमेशा ही स्फूर्तिदायक होती है जो व्यक्ति को अधिक स्वतंत्र बनाती है।

अंतस परिवारः आपने टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ फंडामेंटल रिसर्च, मुंबई से पीएचडी की है और इंटरनेशनल सेंटर फॉर थियोरेटिकल फिजिक्स के एसोसिएट सदस्य रही हैं। आपको क्या लगता है कि राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय शोध प्रणालियों में क्या अंतर या समानताएं हैं?

डॉ. सिन्हाः मुझे टीआईएफआर और आईसीटीपी के परिवेश में कोई खास अंतर नहीं लगा। मुझे लगता है कि विश्वस्तरीय स्थल, चाहे वे किसी भी भौगोलिक स्थान पर हों, बहुत अलग नहीं हैं। संस्थान के वातावरण के बाहर जीवन में अंतर निश्चित रूप से काफी अलग हो सकता है।

अंतस परिवारः आपके करियर में सबसे बड़ी चुनौतियां क्या रहीं और क्या भा.प्रौ.सं. कानपुर से स्नातक के दौरान आपके अनुभव ने आपको किसी भी तरह से सामने आने वाली बाधाओं को दूर करने में मदद की?

डॉ. सिन्हाः मेरे करियर की सबसे बड़ी चुनौती बच्चे के जन्म के बाद शिक्षा जगत में वापस आना और यह विश्वास हासिल करना था कि आप फिर से उसी स्तर पर काम कर सकती हैं, जिस स्तर पर आपने छोड़ा था। यहां मूलभूत विषय यह बात स्वीकार करना है कि विराम, उत्पादन क्षमता में कुछ गिरावट लाता है और यह बिल्कुल ठीक है। आपको बस शोध में वापस जाने के लिए इच्छाशक्ति और ताकत जुटानी होगी और काम पर वापस जाने और मातृत्व के साथ सहज होने के लिए स्वयं में संतुलन बनाए रखना होगा। अब भा.प्रौ.सं. कानपुर की दृढ़ता ने मुझे बेहद लचीला बना दिया था और इस गहरी मानसिक दृढ़ता ने मुझे बच्चे के जन्म के बाद स्वाभाविक रूप से पेशे से जुड़े रहने के लिए लियन अवधि के बाद हार न मानने में मदद की।

अंतस परिवारः भा.प्रौ.सं. कानपुर में आपके जीवन ने आपकी रुचि को कैसे आकार दिया और आपके कैरियर पथ को तय करने में आपकी कैसे मदद की?

डॉ. सिन्हाः भा.प्रौ.सं. कानपुर ने मुझे जो सबसे महत्वपूर्ण बातें सिखाईं, उनमें से एक थी नई चीजें सीखने के प्रति आत्मविश्वास। मूल रूप से हमने यह बात "सीखी कि सीखा कैसे" जाता है। सीखने की प्रक्रिया के प्रति हमने जो दृष्टिकोण अपनाया, उसने न केवल पाठ्यक्रम की विषय वस्तु को सीखने में मदद की बल्कि हमारी अधिक साहसी होने में भी मदद की और हमें अपने विभिन्न व्यवसायों की आवश्यकताओं के साथ विकास करने में मदद की। व्यक्तिगत रूप से, मैंने अपनी पीएचडी के दौरान क्षेत्र बदला, और नए विषयों में निडरता से सीखने की यह शिक्षा बहुत काम आयी। साथ ही, भा.प्रौ.सं. कानपुर द्वारा प्रदान की गई वास्तव में व्यापक शिक्षा ने मेरे शैक्षणिक पथ के लिए एक अमूल्य आधार प्रदान किया। भा.प्रौ.सं. कानपुर का दूरदर्शी पाठ्यक्रम वैश्विक स्तर पर पेश किए जाने वाले सर्वश्रेष्ठ पाठ्यक्रमों के बराबर था।

अंतस परिवारः क्या आपको कॉलेज जीवन या अपने करियर में कम लिंग अनुपात के कारण किसी चुनौती का सामना करना पड़ा? आपके अनुसार भा.प्रौ.सं. कानपुर और आईआईएसईआर में कम लिंग अनुपात का क्या कारण है और इसका शोध और नवाचार में महिलाओं पर क्या प्रभाव पड़ता है?

डॉ. सिन्हाः वैसे, हमारे समय में जेंडर असंतुलन गंभीर विषय था (पूरे

बैच में हम सिर्फ पाँच लड़कियां थीं)। हालांकि मुझे यह कहना है कि मुझे कभी भी ऐसा महसूस नहीं हुआ कि मेरे जेंडर के कारण किसी प्रोफेसर ने मेरे साथ कोई भेदभाव किया हो। मुझे अच्छी तरह से स्मरण है कि मुझे अच्छे और बुरे दोनों ग्रेड मिले हैं जिसकी मैं हकदार थी। व्यक्तिगत स्तर पर, वास्तव में ऐसे विषम जेंडर अनुपात वाले परिवेश में कार्य करना बहुत मुश्किल था। हमने स्वयं की पहचान कायम करने के लिए तरीके खोजे। बेशक, यह असंतुलन तब तक नहीं बदलेगा जब तक कि भा.प्रौ.संस्थानों में प्रवेश के लिए जेईई कोचिंग पर अधिक निर्भरता रहेगी क्योंकि समाज में आज भी लड़कियों को कोचिंग देने में कम निवेश किया जाता है। दीर्घ कालिक अवधि में चूँकि भा.प्रौ.सं. का नेटवर्क कुछ हद तक ''लड़कों के क्लब'' जैसा है, इसलिए लड़कियों के लिए ऐसे व्यवसायों में पैर जमाना मुश्किल हो सकता है जहाँ नेटवर्किंग, आजीविका प्रगति के लिए महत्वपूर्ण हो। हालांकि मैं यह भी कहना चाहूंगी कि भा.प्रौ.सं. कानपुर के वृहद जेंडर–असंतुलन परिवेश में अपने प्रारंभिक वर्षों को मैंने हमेशा एक अवसर के रूप में देखा जिससे मुझे जीवन में आगे चलकर कार्यस्थल पर संवेदनशील जेंडर–आधारित विषयों से निपटने के लिए बहुमूल्य कौशल हासिल करने का अवसर प्राप्त हुआ।

अंतस परिवार: हम अक्सर इस बारे में कई रोमांचक कहानियां सुनते हैं कि शुरुआती दिनों में कैंपस कैसा हुआ करता था। क्या आप भा.प्रौ.सं. में अपने कुछ यादगार अनुभव साझा कर सकते हैं?

डॉ. सिन्हा: जैसा कि आप जानते हैं, शुरुआती वर्षों में, बैच का आकार छोटा होता था (लगभग 250 या उसके आस पास) और यह कैंपस जीवन को कुछ अलग ही अनुभव दिलाता था। यह एक सघन समूह होता था जिसमें पूरे बैच में अधिक घनिष्ठ वार्तालाप के अवसर मिलते थे। मुझे कल्चरल फेस्ट के आयोजन का उत्साह याद है जो शायद आज के जैसा शानदार नहीं हुआ करता था लेकिन फिर भी यह बेहद जीवंत था और इसमें छात्रों का एक बड़ा समूह शामिल था। मुझे कैंपस के राग और थिएटर प्रस्तुतियां बहुत पसंद थीं जिनमें तात्कालिक स्किट से लेकर क्लासिक नाटक तक शामिल थे। मुझे एफटीआईआई द्वारा संचालित फिल्म समालोचना पर पाठ्यक्रम से लेकर एल 7 में ब्लॉक बस्टर तक सब कुछ पसंद था जिसमें वांछित मांग पर कई बार सीक्वेंस को दोहराया जाता था। फिर हमारे अपने टीवी शो बनाने के अनुभव थे जहाँ गड़बड़ियां और गलतियां मजेदार होती थीं!

अंतस परिवार: क्या आप अभी भी भा.प्रौ.सं.कानपुर के अपने मित्रों के संपर्क में हैं?

डॉ. सिन्हा: हां, मैं भा.प्रौ.सं. कानपुर के अपने कुछ मित्रों के संपर्क में हूं। दिलचस्प बात यह है कि हाल के वर्षों में सोशल मीडिया के आविर्भाव के कारण मैंने अपने कुछ मित्रों के साथ फिर से संपर्क स्थापित किया है।

अंतस परिवार: शोध इंटर्नशिप के लिए छात्रों के आवेदनों में आप क्या देखते हैं? एक छात्र अपने आवेदन को कैसे प्रभावी बना सकता है?

डॉ. सिन्हा: हम उम्मीद करते हैं कि आवेदक प्रतिभाशाली एवं शैक्षणिक रूप से मजबूत हों जैसा कि अधिकांश आवेदक होते हैं। लेकिन खुद को अलग दिखाने के लिए छात्र को संभावित विशेषज्ञता वाले क्षेत्र में, किसी विशिष्ट चीज के लिए अपनी रुचि और उत्साह को व्यक्त करना चाहिए।

अंतस परिवार: आप उन छात्रों को क्या सलाह देंगी जो कॉलेज समय का अधिकतम लाभ उठाने के लिए शोध करने के इच्छुक हैं?

डॉ. सिन्हा: दुर्भाग्य से, मुझे लगता है कि इन दिनों जेईई के लिए बहुत ज्यादा एकाग्र तैयारी की ज़रूरत होती है। इसलिए मैंने सुना है कि भा.प्रौ.सं. के छात्र अब, आम तौर पर, भा.प्रौ.सं. में प्रवेश करने तक थोड़े–थोड़े परिचित हो जाते हैं। मुझे उम्मीद है कि वे निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखेंगे (और यह शोध में करियर बनाने के लिए विशेष रूप से प्रासंगिक है): भा.प्रौ.सं. कानपुर में प्रवेश उतना प्रासंगिक नहीं है जितना कि यह संस्थान एक शानदार शिक्षा के लिए अवसर प्रदान करने के लिए जाना जाता है।

अंतस परिवार: आप अपने अब तक के जीवन को कैसे संक्षेप में प्रस्तुत करेंगी? और अगर आपको मौका मिले तो आप भा.प्रौ.सं. कानपुर में जीवन या अपनी उच्चतर शिक्षा में क्या बदलाव करना चाहेंगी?

डॉ. सिन्हा: मैं भाग्यशाली रही हूँ कि मुझे वह करने का अवसर मिला जो मुझे पसंद है, और जो मैं करती हूँ उसे पसंद करती हूँ। मैंने जो भी रास्ते चुने, उनमें से किसी के लिए मुझे कोई पछतावा नहीं है, क्योंकि वे सभी खुद को वह करने के अवसर देने की इच्छा से प्रेरित थे, जो मुझे सबसे ज्यादा पसंद है।

अंतस परिवार: धन्यवाद..

धीरज धरम मित्र अरु नारी।
आपद काल परखिये चारी।।

भावार्थ

यह चौपाई श्री रामचरित मानस के अरण्यकाण्ड में उद्धृत है। बुरे समय में यह चार चीजें हमेशा परखी जाती हैं, धैर्य, मित्र, पत्नी और धर्म।

श्री प्रवीण त्रिपाठी

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर का अपने पूर्व छात्रों के साथ अटूट संबंध रहा है। संस्थान अपने छात्रों के भविष्य को संवारने एवं उसे निखारने के लिए सतत् रूप से प्रत्यनशील रहता है और उनकी आजीविका उन्नयन में भागीदार बनकर अपने आपको सदैव गौरवान्वित महसूस करता है। इसके बदले संस्थान के पूर्व छात्रों ने भी अपने मातृ-संस्थान के प्रति प्रगाढ़ संबंधों को कायम रखने में कोई कसर नहीं छोड़ी है और संस्थान ने जब कभी भी अपने पूर्व छात्रों को याद किया तो वह हमेशा संस्थान के साथ खड़े रहे। पूर्व छात्र संस्थान की बेहतरी के लिए समय-समय पर अपना शैक्षणिक, बौद्धिक एवं आर्थिक सहयोग देने में भी कभी पीछे नहीं रहे। संस्थान के ऐसे पूर्व छात्रों की एक लंबी श्रृखंला है जिन्होंने संस्थान के उत्कर्ष में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। आइए अंतस के इस अंक के माध्यम से मिलते हैं ऐसे ही एक पूर्व छात्र श्री प्रवीण त्रिपाठी जी से...

अंतस परिवार: अपने प्रारंभिक दिनों के बारे में कुछ बताइए जैसे कि अपने परिवार, मित्रों और बचपन की यादों के बारे में? अपनी स्कूल की शिक्षा के बारे में भी बताइए।

प्रवीण त्रिपाठी: मेरी स्कूली शिक्षा बनारस में हुई। हमारे पिता जी एक डैम साइट पर नियुक्त थे जहाँ 30 किलोमीटर के दायरे में कोई स्कूल नहीं था तो हम घर पर ही पढ़ाई किया करते थे। फिर हमारी पढ़ाई जौनपुर में हुई और बाद में बनारस के क्वींस कॉलेज में हुई।

अंतस परिवार: आपने भा.प्रौ.सं. कानपुर में इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग करने के बाद मार्केटिंग को क्यों चुना और इसके पीछे क्या वजह थी?

प्रवीण त्रिपाठी: मुझे इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग मिल तो गयी थी पर द्वितीय वर्ष तक मुझे यह पता लग गया था कि मुझे इंजीनियर नहीं बनना है या क्या बनना है ये नहीं पता था क्योंकि भा.प्रौ.सं. कानपुर से इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग के बाद मैं अमेरिका जाकर मास्टर्स या पीएचडी कर सकता था या एकेडेमिक्स में जा सकता था या किसी अनुसंधान कंपनी को ज्वाइन कर सकता था। हमें अमेरिका जाना नहीं था। हमारे समय में 5 वर्षीय कार्यक्रम होता था और 55 कोर्स में से 8 कोर्स ह्यूमैनिटीज एंड सोशल साइंस में करने अनिवार्य थे। हमने आखिरी सेमेस्टर में वो विषय लिए जिनका मैनेजमेंट से सरोकार था जैसे ऑपरेशन्स रिसर्च। एक कोर्स फिलोसॉफी में किया, इकोनॉमिक्स के 3 कोर्स किये, साइकोलॉजी के 2 कोर्स किये तो अंततः जब मैं 5 साल के बाद निकला तो मेरे 13 कोर्स किसी न किसी तरह मैनेजमेंट से संबंधित थे। मेरा आईआईएम अहमदाबाद में दाखिला हो गया, जिसे सबसे अच्छा माना जाता था वहीं मुझे एक कंपनी से प्लेसमेंट ऑफर मिल गया। वहीं से मेरे करियर की शुरुआत एडवरटाइजिंग से हुई।

अंतस परिवार: भा.प्रौ.सं. कानपुर में बिताए अपने बीते दिनों के बारे में आप क्या कहना चाहेंगे, सबसे यादगार अनुभव क्या रहा है? आपके लिए कोई स्पेसिफिक प्रोफेसर या मेंटर था जो आपके करियर में प्रभावित रहा?

प्रवीण त्रिपाठी: बहुत सी बातें हैं। होस्टल में सोप बॉक्स होता जिसके सदस्य वाक्पटु होते थे। किसी भी विषय पर बोल लेते थे। ये सब देख कर मुझे आश्चर्य होता था मतलब इतनी विविध तरह की प्रतिभाएं थीं। कक्षा में मानो हमारे लिए तो एक नया संसार था आईआईटी कानपुर में आना; जिसने प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से मुझे बहुत प्रभावित किया। जैसे हमारा एक साथी था सहपाल दत्त जोकि बाद में बहुत बड़ी कंपनी का आर एण्ड डी हेड रहा और रिटायर हुआ। उन्हें इतिहास का बड़ा अच्छा ज्ञान था। कभी वो दक्षिण अफ्रीका तो कभी नीदरलैंड्स के इतिहास के बारे में बात करता था और ये सब सुन-सुन कर मेरी इतिहास में रुचि जागी और मैंने भी इतिहास के बारे में पढ़ना शुरू किया। तो कह सकते हैं कि आईआईटी में इतने लोगों ने प्रभावित किया कि उसकी लिस्ट बनाना ही बड़ा मुश्किल है। क्लासिकल म्यूजिक के भी कई प्रोग्राम होते थे। कई प्रोफेसर क्लासिकल म्यूजिक के बड़े शौक़ीन थे। लाइब्रेरी अद्भुत थी जहाँ मैंने इंजीनियरिंग छोड़ कर बाकी सब तरह की किताबें पढ़ी जिनमे से एक थी 'एन्साइक्लोपीडिया ऑफ इंडियन यूनिवर्सिटीज'। ऐसा वातावरण था और इतनी स्वचछंदता थी कि आप जो चाहें कर सकते थे। अवसरों की तो कोई कमी नहीं थी।

अंतस परिवार: आपने अभी कहा कि आप कई लोगों से प्रभावित थे। क्या आप उनमें से किन्हीं 2-3 नामों का जिक्र कर सकते हैं?

प्रवीण त्रिपाठी: मेरा सहपाठी अखिलेश बाजपेयी जो कि अत्यंत मेधावी था और उसने मैकेनिकल इंजीनियरिंग टॉप किया और आनंद दयाल जो हर बार टॉप करता था उसने मजाक करते हुए कहा कि अच्छा हुआ कि तू अब तक सो रहा था वरना मेरे टॉप करने का तो सवाल ही नहीं उठता था। दूसरे प्रोफेसर सीएनआर राव, जोकि हमें केमिस्ट्री पढ़ाते थे, उनकी प्रतिभा अद्भुत थी। एल 7 में हमारी कक्षा होती थी, वो हमेशा पढ़ाने के प्रति बहुत ही समर्पित थे। परीक्षा के पहले वो एक डाउट-क्लियरिंग सेशन रखते थे। 25 छात्रों का एक ट्यूटोरियल होता था। 8 ट्यूटर्स थे 2 लेक्चरर्स थे। एक बार तो सुबह 9:30 से लेकर रात 3 बजे तक हमारा सेशन चला। यकीन मानिए ऐसा समर्पण मैंने कहीं नहीं देखा कि जब तक एक भी डाउट रहेगा तब

तक सेशन समाप्त नहीं होगा। दूसरा किस्सा ये है कि जब हमारे पूर्व राष्ट्रपति जाकिर हुसैन नहीं रहे तब भी हमारी कक्षा जारी रही। ऐसा इसलिए कि वो खुद शिक्षाविद् थे और उनको श्रद्धांजलि देने का ये उपयुक्त तरीका था। वह घटना भी हमारे दिमाग में अभी तक अंकित है।

अंतस परिवार: कोई ऐसा प्रोफेसर रहा है जिसने आपको बहुत प्रभावित किया?

प्रवीण त्रिपाठी: ह्यूमैनिटीज में स्टीवियस राममोहन राव अपने आप में एक कक्षा थे।

अंतस परिवार: आपके पास 40 से अधिक वर्षों का विशाल अनुभव रहा है? इस दौरान आपने खुद को कैसे मोटिवेट रखा और अपने इस शानदार करियर को आप किस प्रकार देखते हैं?

प्रवीण त्रिपाठी: इसमें मोटिवेट करने जैसी कोई बात ही नहीं थी क्योंकि मैंने जो चाहा वो किया। अगर आप जो काम करना पसंद करते हैं तो वो काम ही आपका मोटिवेशन होगा। पहला काम ऑप्टिमाइजर को सेटअप करने का था। पहली बार एडवरटाइजिंग में कंप्यूटर का इस्तेमाल हुआ। उन दिनों में कोई भी कंप्यूटर के बारे में जानता नहीं था। वो मेनफ्रेम का जमाना था। ये 1979 की बात है। 1978 में जो हमने ऑप्टिमाइजर बनाया था, वो टाटा इंस्टिट्यूट ऑफ फंडामेंटल रिसर्च के कंप्यूटर पर बनाया था। इतनी शिद्दत थी उस वक्त इस काम को करने की, मुझे याद है जब हम डीबग कर रहे थे तो एक बार 72 घंटे तक मैं बिलकुल नहीं सोया और अगले ही दिन मेरी कलकत्ता में एक प्रेज़ेंटेशन के लिए फ्लाइट थी। हम यूनियन कार्बाइड की लिए प्रेज़ेंटेशन बना रहे थे। वो इस प्रेज़ेंटेशन से बहुत खुश थे। फिर जब हमने उस सिस्टम का पहला आउटलाइन लिखा था तो हिंदुस्तान लिवर के कंट्रोलर ने ये कहा था कि यह निर्णय लेने और सटीकता का सर्वोत्तम मिश्रण था।

अंतस परिवार: काम के अतिरिक्त आप किन गतिविधियों में भाग लेते हैं और आपकी क्या रुचियां हैं?

प्रवीण त्रिपाठी: पढ़ने में मेरी बहुत रूचि है। पहले कंप्यूटर बेस्ड किताबें पढ़ता था। मैं 2002 में चीन गया था जहाँ मैंने 1 साल तक काम किया। चीन के बारे में मैंने अब तक 30 किताबें पढ़ ली होंगी। हम अमेरिका और ब्रिटेन के बारे में ही सोचते रहते हैं। भारत में हम चीन के बारे में ज़्यादा सोचते नहीं हैं। लेकिन मेरे ख्याल से जो दुनिया को अगले 50 वर्षों में सबसे अधिक प्रभावित करेगा वह चीन ही है। दलाई लामा में मेरी बहुत रूचि है क्योंकि बचपन में मैं उनसे मिला हूँ। वो मसूरी में रहते थे और बनारस विश्वविद्यालय में पढ़ाने आते थे। मुझे रेलवे में भी रुचि है। मैं इंडियन रेलवे फैन क्लब एसोसिएशन का भी सदस्य हूँ और हर साल हमारी वार्षिक कन्वेंशन होती है जोकि अगले साल फरवरी में आसनसोल में होगी।

अंतस परिवार: सालों के दौरान, आपने नई मार्केटिंग ट्रेंड्स और तकनीकों के साथ खुद को कैसे अपडेट रखा? अगले दस सालों में मार्केटिंग का भविष्य कैसे विकसित होता हुआ नजर आता है?

प्रवीण त्रिपाठी: सबसे पहला केंद्र बिंदु ये है कि आप अपने ग्राहक को कितनी अच्छी तरह समझते हैं। हमने 1979 में सबसे पहले कंप्यूटर का प्रयोग मीडिया प्लानिंग के लिए किया था। फिर 1995 में टीआरपी मेजरमेंट सिस्टम हमने लांच किया फिर 2014 में इसका बड़ा सिस्टम भी मैंने ही लांच किया।

अंतस परिवार: क्या आप अपने करियर में किसी विशेष मार्केटिंग कैंपेन या प्रोजेक्ट के बारे में बता सकते हैं जो आपके लिए खास रहा हो? अपने करियर के दौरान आपने जो महत्वपूर्ण पाठ सीखे हैं, वे कौन से हैं जो हर मार्केटर को जानने चाहिए?

प्रवीण त्रिपाठी: मैंने मीडिया प्लानिंग और रिसर्च में काम किया है तो सबसे पहला काम एक मीडिया प्लानिंग सपोर्ट सिस्टम को बनाना था जो हमने जनवरी 1981 में रिलीज किया था जो कि समय से कहीं आगे था। जब नंदन नीलकणी जी चुनाव लड़ रहे थे, तब हमने 4 पत्रकारिता और 4 कानून के छात्रों को रखा जो हर दिन लोगों के पास जाकर उनकी ऑडियो और वीडियो रिकॉर्डिंग करते थे और शाम को बैठकर हम उन विषयों पर चर्चा करते थे कि किन मुद्दों पर हमें बात करनी चाहिए। हमने चुनाव शुरू होने के 30 दिन पहले इस कार्य को शुरू किया जो चुनाव के दौरान काफी दिलचस्प लगता था। संभावित या मार्केटिंग में चाह रखने वालों को मैं भी यही कहना चाहूँगा कि आप अपने ग्राहक को जानिए और दूसरा यह कि अपने डिस्ट्रीब्यूटर या रिटेलर को समझिए क्योंकि वो आपको और आपके प्रतिद्वंदियों के ग्राहकों को बड़ी अच्छी तरह से समझता है।

अंतस परिवार: स्टाककाम इंडिया में प्रबंध निदेशक के पद पर रहते हुए आपको क्या अनुभव हुआ?

प्रवीण त्रिपाठी: हम विश्व की पहली मीडिया प्लानिंग एजेंसी बने। स्टारकॉम इंडिया का सबसे पहला उद्देश्य यह था कि अलग–अलग बैकग्राउंड के लोगों को काम पर रखा गया मैंने ज्यादातर उन लोगों को रखा जो पहले मीडिया प्लानिंग नहीं करते थे और इसकी वजह से हमारा एक विलक्षण दृष्टिकोण उभरा। स्टारकॉम को इंडियन प्लानिंग का नासा कहा जाने लगा। उसका कारण यही था कि मेरी टीम विविधताओं से भरी थी।

अंतस परिवार: आप सोशल मीडिया पर काफी सक्रिय हैं? आपको क्या लगता है ये प्लेटफॉर्म, मार्केटिंग सेक्टर को किस प्रकार प्रभावित करते हैं?

प्रवीण त्रिपाठी: सोशल मीडिया आपको दुनिया का एक ही पक्ष दिखाता है। एक व्यक्ति के तौर पर सोशल मीडिया का अत्यधिक उपयोग एक लत की तरह है जो कि बिल्कुल अच्छा नहीं है। सोशल मीडिया का उपयोग भी किया जा रहा है, और दुरुपयोग भी लेकिन मार्केटर के तौर पर इसका उपयोग अच्छा है। अपने विकास के लिए सोशल मीडिया से उठकर वास्तविक दुनिया में जीना सीखें।

अंतस परिवार: भा.प्रौ.सं. कानपुर के छात्रों को जो कि मार्केटिंग में करियर बनाना चाहते हैं, उनको क्या सलाह देना चाहेंगे? छात्रों के लिए करियर के विकल्पों के बारे में आपके विचार क्या हैं?

प्रवीण त्रिपाठी: मेरी पहली सलाह यह है कि आप अपने जूनून को पहचानने की कोशिश करें। जो कार्य करने में आपको आनंद आता है उसी में करियर बनाएं।

अंतस परिवार: भा.प्रौ.सं. कानपुर में आपने किस प्रकार की सांस्कृतिक और सामाजिक गतिविधियों में हिस्सा लिया?

प्रवीण त्रिपाठी: स्टूडेंट फिल्म सोसाइटी हुआ करती थी जिसका मैं भी सदस्य था। मैं अच्छा खिलाड़ी नहीं था, न ही वाद–विवाद प्रतियोगिता में भाग लेता था। क्रिकेट जरूर खेलता था। अधिकतर वक्त लाइब्रेरी में बैठा रहता था। इंजीनियरिंग को छोड़कर, बाकी सारी किताबें पढ़ा करता था।

अंतस परिवार: भा.प्रौ.सं. कानपुर के कैंपस और सुविधाओं के बारे में आपका क्या विचार है? आपके विचार में भा.प्रौ.सं. कानपुर की प्रगति और वैश्विक उपस्थिति को कैसे सुधारा जा सकता है?

प्रवीण त्रिपाठी: आईआईटी कानपुर का कैंपस अब पहले से ज्यादा हरा–भरा है। पर मुझे ऐसा लगता है कि नए हॉस्टलों में ज्यादा खुलापन नहीं है जितना हॉल 1, हाल 2 या हॉल 3 में था। जहाँ तक आईआईटी कानपुर की वैश्विक उपस्थिति की बात है तो इसका विकास तभी होगा जब यह यूपी और बिहार के गरीबी रेखा के नीचे रहने वाले लोगों को अपने ज्ञान और तकनीक से उनका जीवन बेहतर बना सकेगा। यूपी के विकास से ही आईआईटी का विकास संभव है।

अंतस परिवार: आप भा.प्रौ.सं. कानपुर पूर्व छात्र एसोसिएशन और आईआईटी कानपुर फाउंडेशन में 'भा.प्रौ.सं. कानपुर विजन 2020 की संचालन समिति' में सदस्य भी रह चुके हैं। कुछ अनुभव साझा करें।

प्रवीण त्रिपाठी: संचालन समिति 2010 में बनी थी जब आईआईटी कानपुर ने अपने 50 साल पूरे कर लिए थे। तब इसमें 9 सदस्य थे 3 एकेडेमिक्स, 3 इंडस्ट्री और 3 आईआईटी कानपुर के थे। उन समितियाँ में रहते मुझे व्यापक अनुभव हुआ। प्रोफेसर मलिक और अभय भूषण जी भी इसका हिस्सा थे। मेरे विचार में भा.प्रौ.सं. कानपुर पूर्व छात्र एसोसिएशन और आईआईटी कानपुर फाउंडेशन प्रेरणास्रोत का कार्य कर सकते हैं लेकिन वास्तव में आईआईटी कानपुर का कायाकल्प इससे जुड़े व्यक्ति ही कर सकते हैं।

अंतस परिवार: आप अपने जीवन को किस तरह देखते हैं? अपने जीवन से मिली सीखों के बारे में बताइए।

प्रवीण त्रिपाठी: पहला यह कि आप अपने जुनून के प्रति डटे रहिये। जीवन में थोड़े–बहुत उतार–चढ़ाव आएंगे, कठिनाइयां भी आएगी लेकिन आप ज्यादा खुश रहेंगे। दूसरा यह कि लोगों से सीखते रहिये। हर एक इंसान की अलग कहानी है जिनके संघर्षों से आप बहुत कुछ सीख सकते हैं और उनके जीवन से आपको प्रेरणा मिल सकती है।

अंतस परिवार: धन्यवाद.

अद्‌भुत अमेजन!

अमेजन! दुनिया की सबसे बड़ी नदी! दुनिया की सबसे बड़ी नदी बेसिन भी है। और इसमें एक घना रहस्यमय जंगल उगा है– अद्‌भुत अमेजन!

मैंने हमेशा से ही अमेजन जाने का सपना देखा है। सौभाग्य से, रियो डी जेनेरियो में एक सम्मेलन हुआ जिसने मुझे अपना सपना पूरा करने का मौका दिया। रियो डी जेनेरियो से, मैं 4 घंटे की हवाई यात्रा करके मनौस पहुंचा, जो अमेजन जंगल का प्रवेश द्वार है।

मनौस से अमेजन नदी की कई सहायक नदियों से होते हुए लगभग 20–25 मिनट की नाव यात्रा के बाद, हम अपने गंतव्य-अमेजन इको लॉज पर पहुँचे। नदी के किनारे पर स्थित, लॉज को जंगल के एक छोटे से क्षेत्र को साफ करके बनाया गया था। यह मूल रूप से छोटी झोपड़ियों का एक समूह है, जिनमें से प्रत्येक को लकड़ी के खंभों का उपयोग करके ऊँचाई पर खड़ा किया गया है, बिल्कुल हमारे अपने सुंदरवन की तरह। मुझे बाद में पता चला कि यह चींटियों को कमरों में घुसने से रोकने के लिए है।

हम सबसे पहले उकारी नामक दुर्लभ प्रजाति के बंदर को देखने गए। वे स्वाभाविक रूप से लाल चेहरे वाले होते हैं, लेकिन बिल्कुल भी शर्मीले नहीं होते। उनमें से एक तो मेरे कंधे पर चढ़कर फल लेने लगा। वापस आते समय हमने कई तरह के फूल, पेड़ और जानवर देखे, जिनमें एक बड़ा कछुआ भी शामिल था।

हालाँकि तकनीकी रूप से दक्षिणी गोलार्ध में सर्दी थी, क्योंकि अमेजन भूमध्य रेखा के पास है, इसलिए दिन में सूरज काफी तेज

होता है। इसलिए, हमें दोपहर के भोजन के बाद थोड़ी देर आराम करने की सलाह दी गई।

दोपहर में, मैंने रियो नीग्रो नदी में डुबकी लगाई। अमेजन नदी दो बड़ी नदियों, रियो नीग्रो और रियो सोलिमोस के संगम से बनी है। रियो सोलिमोस पेरू के पहाड़ों से निकलती है, और मैले रंग की होती है। रियो नीग्रो कोलंबिया से निकलती है। रियो नीग्रो शब्द का शाब्दिक अर्थ है काली नदी, और नदी वास्तव में काली है। यह

ह्यूमिक एसिड की उपस्थिति के कारण है। इस अम्लीय प्रकृति के कारण, ऐसे उष्णकटिबंधीय जलवायु में भी कीड़े काफी कम होते हैं। इसलिए, रियो नीग्रो के तट पर पर्यटकों के अनुकूल लॉज अधिक लोकप्रिय हैं।

अगले दिन सुबह की शुरुआत अमेजन के जंगल में 2 घंटे की पैदल यात्रा से हुई। चींटियों को अंदर न आने देने के लिए फुल पैंट पहनना अनिवार्य था, वह भी जूतों के अंदर कसकर बांधना आवश्यक था। यहाँ का जंगल बहुत घना नहीं था, और मैं अपने गाइड से इसके बारे में पूछने की अपनी जिज्ञासा को रोक नहीं पाया। उसने कहा कि रेत के उच्च अनुपात के कारण, वहाँ पेड़ बहुत घने नहीं हैं। मेरा अगला सवाल स्पष्ट था- बहुत घने प्रसिद्ध अमेजन के जंगल में कैसे जाया जाए? उसने मुझे प्यार से मुस्कुराते हुए जवाब दिया, ''यह मनौस के आस-पास कहीं नहीं है, और एकमात्र तरीका है कि एक गाइड के साथ एक हाथ से चलने वाली नाव किराए पर लेना और कई दिनों तक नौकायन करना है।'' बेचारा मैं! मेरी इच्छा मेरे दिल में ही रह गई! मैंने खुद से सोचा कि मैं शायद अगले जन्म में अमेजन के साथ अनिश्चितता की ओर बढ़ सकूँ ।

जंगल की एक खासियत रबर के पेड़ हैं। हमें दिखाया गया कि कैसे रबर के पेड़ की छाल को काटकर रस निकाला जाता है और कैसे उन्हें गर्म करके बड़ी रबर की गेंदें बनाई जाती हैं जिन्हें फिर नदी के किनारे ले जाया जाता है।

एक और दिलचस्प पेड़ था ''चलता हुआ पेड़''। पानी की तलाश में, जड़ें जमीन से ऊपर आती हैं, और इस तरह फैलती हैं कि वे पैरों की तरह दिखती हैं। हमारे समूह की एक छोटी लड़की यह सुनकर बहुत उत्साहित हुई। उसने पूछा, ''ओह, क्या अगर हम इंतज़ार करें तो हम पेड़ को चलते हुए देख सकते हैं?'' हमारे गाइड ने जवाब दिया कि दुर्भाग्य से पेड़ साल में केवल 20 सेमी. ही चलते हैं।

लॉज में दोपहर का भोजन बहुत स्वादिष्ट था, जिसमें अमेजन की प्रसिद्ध पिरारुकू मछली और ब्राजील की कॉफी शामिल थी। उसके बाद, मैंने लॉज के परिसर में बने एक प्राकृतिक स्विमिंग पूल में आराम किया।

दोपहर में हमने एक ''भारतीय'' गांव का दौरा किया। इस गांव में सादा जीवन था जिसमें न इंटरनेट, न टीवी, और न ही मोबाइल फोन की सुविधा थी। जीवन की दिनचर्या सूर्योदय से शुरू होती है और सूर्यास्त के समय समाप्त हो जाती है। दु:ख की बात है कि ये युवा, शहरी जीवन का अभ्यस्त होने के बाद, यहां नहीं रहना चाहे।

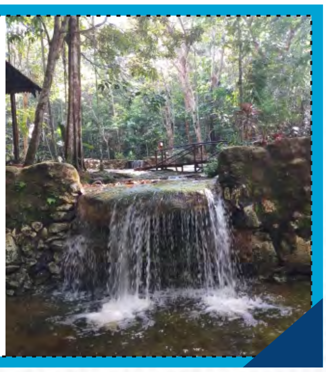

अगला रोमांच प्रसिद्ध पिरान्हा मछली को देखना था। हम नाव से नदी के बीच में एक छोटे से कृत्रिम द्वीप पर गए। नाव को चाको नाम का एक ''भारतीय'' लड़का चला रहा था। द्वीप पर, उसने हम लोगों में से प्रत्येक को एक मछली पकड़ने वाली छड़ी दी जिसके अंत में मांस का एक टुकड़ा लगा हुआ था। मछली पकड़ने की सबसे बड़ी ज़रूरतों में से एक है अंतहीन धैर्य। इसमें मदद करने के लिए, मैंने कैपिरिन्हा (गन्ने के रस, नींबू और बर्फ से बना प्रसिद्ध ब्राजीलियाई पेय) का एक गिलास मंगवाया। थोड़ी देर बाद, एक पिरान्हा वास्तव में पकड़ी गयी। चाको ने हमें दांत दिखाने के लिए उसका मुंह पकड़ा। हम कितने भाग्यशाली हैं कि हमें इतने नजदीक से लेकिन सुरक्षित दूरी से दांतों की प्रसिद्ध क्रूर रेखा देखने को मिली! पिरान्हा 30–40 मछलियों के झुंड में एक साथ रहती हैं, और हालांकि वे छोटी होती हैं, लेकिन इतने तीखे दांतों वाली इस सेना से निपटना किसी के लिए भी मुश्किल होता है। यहाँ यह उल्लेख करना उचित है कि पिरान्हा द्वारा किसी व्यक्ति को मिनटों में हड्डियों में बदल देने की हॉलीवुड की कल्पना बस एक कल्पना है–और सच्चाई नहीं। ब्राजील में पिरान्हा को पकड़ना या खाना दंडनीय अपराध है। इसलिए, इसे वापस नदी में छोड़ दिया गया।

आखिरी रोमांच सूर्यास्त के बाद था। एक छोटी नाव में, हमें अमेजन के जंगलों में घुमाया गया। चाँद की एक किरण, चारों ओर घना जंगल, कभी–कभी कुछ मछलियाँ उछल–कूद करती हुई– एक वास्तविक आकर्षक अनुभव था! अचानक, चाको ने हमारी नाव को एक अंधेरे द्वीप के किनारे पर लगा दिया, पानी में कूद गया, और द्वीप के जंगलों में गायब हो गया। हम हैरान रह गए! अगर वह वापस नहीं आता, तो वापस जाने का विचार तो दूर की बात है, हमें नहीं लगता था कि हम एक और घंटा भी जीवित रह पाएंगे! उस रोमांचक स्थिति में लगभग अनंत काल के बाद (वास्तव में, हमारे गाइड ने हमें बताया कि यह केवल 2–3 मिनट था), वह हाथ में कुछ लेकर लौटा। यह एक बच्चा कैमन मगरमच्छ था! चाको ने पहले कुशलता से मगरमच्छ के मुँह को रस्सी से बाँधा। उसने चेतावनी दी कि एक छोटे मगरमच्छ के भी इतने दाँत और शक्ति होती है कि वह हमारी उंगलियों को फाड़ सकता है। फिर उसने हम में से प्रत्येक को उसे पकड़ने दिया। त्वचा छूने पर प्लास्टिक जैसी लग रही थी क्योंकि वह पानी से बाहर थी। मैंने कभी नहीं सोचा था कि मैं एक जीवित मगरमच्छ को छू पाऊंगा, चाहे वह कितना भी छोटा क्यों न हो। अमेजन की यात्रा ने यह संभव कर दिया!

अगले दिन वापसी की उड़ान से, मैंने विशाल अमेजन जंगल को रोमांच और खुशी के एक अजीब भाव के साथ देखा, साथ ही साथ उदासी और लालसा का भी एक रंग था। मुझे उम्मीद है कि मैं एक बार फिर इस अद्भुत जगह पर जा पाऊँगा!

–प्रोफेसर अर्णव भट्टाचार्य
संगणक विज्ञान एवं अभियांत्रिकी
भा.प्रौ.सं. कानपुर

आईआईटी कानपुर में एक तेंदुआ

आईआईटी में कल रात घुस आया कहीं से एक तेंदुआ,
जरा संभल कर निकलना घर से ओ बबुआ।।

यहाँ आते ही उसको भी लग गई बुद्धिमानी की हवा,
वन अधिकारी दे नहीं पा रहे उसको बेहोशी की दवा।।

कुछ तो यहां का वातावरण लगा होगा उसको शहर से भी अच्छा,
देखते ही देखते उसे ढूंढते हुए यहां तक आ पहुंचा उसका भी बच्चा।।

वन अधिकारी घूम रहे हाथ में लेकर ट्रेंकुलाइजर गन,
तेंदुए महाशय ले रहे मज़े यहां के हॉटडॉग और क्रीम–बन।।

सुबह खबर मिली वो पहुंच गया आईआईटी के केवी स्कूल और गुरुद्वारे,
आसपास के रहवासी कैद हो गए बच्चों समेत अपने अपने घर–द्वारे।।

कैंपस के बच्चे घर में रहकर हो रहे हैं उदास,
वनकर्मी नहीं कर पा रहे तेंदुए की तलाश।।

आखिरकार मिल ही गया आज तेंदुए को पकड़ने का एक सुनहरा मौका,
तभी वनकर्मियों ने जाल फेंककर मार दिया मौके पे चौका।।

तेंदुए जी भी जाल में फंसकर लगे पूरे जोर से अपने हाथ पैर चलाने,
तभी ट्रक में डाल चालक महोदय चले उसे नवाबगंज चिड़ियाघर पहुंचाने।।

तेंदुए महाशय के साक्षात्कार करने की रह गई हमारी अधूरी हसरत,
अच्छा अब हम भी चलते है दैनिक जीवन में करने रोज की अपनी कसरत।।

–भरत सोमैया
विद्युत अभियांत्रिकी
भा.प्रौ.सं. कानपुर

ए चांद ज़रा मुस्करा

ए चांद ज़रा मुस्करा
देख तेरी परछाईए
जानने को तेरी व्यथा
यह नन्हे दीप मन में आतुर
चहुं ओर तेरे टिमटिमा रहे
निष्ठुर
दिल में दाग, गालों पर गहरे गड्ढ़े
करता इन को आतुर और आतुर
जितना यह तेरे पास आते
उतना तू मन के राज छुपाता
अरे तू तो इनका मामा है
फिर भी राज छुपाता
नन्हे दीपों को तरसता तड़पाता है
तू हठीला है यह तुझ से भी हठीले हैं
तेरी परछाई का करते पीछा तुझ तक आ पहुंचे हैं
जानता तू भी है, बिन जाने तेरी व्यथा
नहीं मानेंगे, बस जायेंगे तेरे आस पास
पकड़ लेंगे जकड़ लेंगे तेरा हाथ
फिर तू तड़पेगा छुड़ाने को हाथ
धरा के कोने कोने से आए यह दीप
न मानेंगे न छोड़ेंगे तेरा हाथ बिन जाने तेरी व्यथा
हर गड्ढ़े में घुस जान ही लेंगे तेरे राज
कब तक नहीं खोलेगा मन की पोटली
यह भी कम हठीले नहीं तेरी ही तो बहन के जाए हैं
ए चांद ज़रा मुस्करा बच्चों से न व्यथा छुपा
ए चांद ज़रा मुस्करा

स्पष्टीकरणः यहां नन्हे दीपों से कवि का आशय वैज्ञानिकों से है जो चांद के शोध कार्यो से जुड़े हैं।

–विष्णु ढींगरा
(प्रोफेसर दीपक ढ़ींगरा के पिताजी)
पृथ्वी विज्ञान
भा.प्रौ.सं. कानपुर

उच्च-दांव वाला सबक

रवि हमेशा से ही सतर्क व्यक्ति रहा है। 27 साल की उम्र में, उसकी दुनिया बेंगलुरु में अपनी सॉफ्टवेयर नौकरी और वर्षों से कड़ी मेहनत से बनाई गई मामूली बचत के इर्द-गिर्द घूमती थी। लेकिन एक शाम, सोशल मीडिया पर स्क्रॉल करते समय, एक विज्ञापन ने उसका ध्यान खींचा: "रोज़ाना 500 डॉलर कमाए! विशेषज्ञों से लीवरेज्ड ट्रेडिंग सीखें-कोई अनुभव की जरूरत नहीं!"

जिज्ञासा उस पर हावी हो गई। आकर्षक विज्ञापन में युवा पुरुषों को अपनी सफलता की कहानियों और ग्लैमरस जीवनशैली का प्रदर्शन करते हुए दिखाया गया था, जो कि लीवरेज्ड ट्रेडिंग की बदौलत संभव हुआ। रवि ने हिचकिचाहट दिखाई, लेकिन आखिरकार लिंक पर क्लिक कर दिया। कुछ ही मिनटों में, वह ऐसे ट्यूटोरियल देख रहा था, जो ट्रेडिंग को पैसे कमाने का सबसे आसान तरीका बता रहे थे।

रवि ने सोचा, "यह वित्तीय स्वतंत्रता के लिए मेरा टिकट हो सकता है।"

शुरुआत करने वालों की किस्मत

रवि ने एक ट्रेडिंग प्लेटफॉर्म के लिए साइन अप किया, अपनी बचत के एक हिस्से से अपने खाते में पैसे डाले और छोटी शुरुआत की। ऑनलाइन फोरम से मिले अनुमान और सुझावों के आधार पर उसके पहले कुछ ट्रेडों से मामूली मुनाफा हुआ। अपनी शुरुआती सफलता से उत्साहित होकर, उसने बड़े जोखिम उठाने का फैसला किया।

सिर्फ दो हफ्तों में, उसके 2,000 डॉलर बढ़कर 3,200 डॉलर हो गए। रोमांच काफी था, और रवि को लगा कि वह अजेय हैं। "यह जितना मैंने सोचा था, उससे कहीं ज्यादा आसान है!" उसने खुद से कहा।

पतन

लेकिन जिंदगी ने कुछ और ही सोच रखा था। एक आगामी उत्पाद लॉन्च के कारण काम बहुत व्यस्त हो गया, और रवि ट्रेडिंग के लिए समय नहीं दे पा रहे थे। एक शाम, उसने आवेग में आकर दो बड़े लीवरेज्ड ट्रेड किए: एक कच्चे तेल पर और दूसरा GBP/INR मुद्रा जोड़ी पर। उसने कहीं पढ़ा था कि कच्चे तेल की कीमतें बढ़ने वाली हैं, और पाउंड के रुपये के मुकाबले मजबूत होने की उम्मीद है। अपनी भविष्यवाणियों पर भरोसा करते हुए, उसने स्टॉप-लॉस ऑर्डर सेट करने की जहमत नहीं उठाई।

अगले कुछ दिनों में, बाजार ने उसकी उम्मीदों को धोखा दिया। अप्रत्याशित भू-राजनीतिक घटनाक्रमों के कारण कच्चे तेल की कीमतें गिरने लगीं। इस बीच, भारत में आश्चर्यजनक आर्थिक डेटा जारी होने के बाद पाउंड के मुकाबले रुपया तेजी से चढ़ा। रवि के ट्रेड्स बहुत ज्यादा घाटे में थे और लीवरेज ने उसके घाटे को कई गुना बढ़ा दिया।

पहले तो उसने शांत रहने की कोशिश की। "बाजार पलट जाएगा," उसने खुद को आश्वस्त किया। लेकिन जैसे-जैसे दिन बीतते गए, उसके खाते की शेष राशि खतरनाक दर से कम होने लगी। रवि अब अपनी पूरी बचत खोने की संभावना को देख रहा था।

चिंता का चक्र

रातों की नींद हराम होना आम बात हो गई थी। रवि बिस्तर पर लेटा हुआ अपने फोन को घूरता रहता था और अपने ट्रेड्स को बर्बाद होते देखता रहता था। लखनऊ में रहने वाले उसके माता-पिता ने रोजाना फोन कॉल के दौरान उसके व्यवहार में आए बदलाव को नोटिस किया।

"क्या हुआ बेटा? " उसकी माँ ने पूछा।

"कुछ नहीं, माँ! बस काम का दबाव है," रवि ने झूठ बोला, अपनी गलतियों का बोझ उन पर नहीं डालना चाहता था।

लेकिन उसके घाटे का बोझ उस पर एक टन ईंटों की तरह पड़ गया। उसकी भूख खत्म हो गई और वह अपने दोस्तों से दूर रहने लगा। आर्थिक रूप से नए सिरे से शुरुआत करने के विचार ने उसे भयभीत कर दिया। "मैं इतना लापरवाह कैसे हो सकता हूँ?" उसने खुद को कोसा।

टर्निंग पॉइंट

लिक्विडेशन के कगार पर, कुछ चमत्कार हुआ। ओपेक द्वारा उत्पादन में कटौती की घोषणा के बाद कच्चे तेल की कीमतों में सुधार होने लगा। साथ ही, बैंक ऑफ इंग्लैंड द्वारा ब्याज दरों में वृद्धि के संकेत के बाद पाउंड में मजबूती लौट आई। रवि के ट्रेड, जो गहरे लाल रंग में थे, फिर से हरे रंग की ओर बढ़ने लगे।

कई दिनों में पहली बार, रवि ने राहत की सांस ली। उसने बाजारों को करीब से देखा, हर टिक के साथ उसका दिल धड़क रहा था। सप्ताह के अंत तक, वह दोनों ट्रेड से बाहर निकलने में कामयाब रहा, न तो लाभ हुआ और न ही नुकसान।

कहानी से सीख

इस अनुभव ने रवि को भावनात्मक और मानसिक रूप से थका दिया।

उसे एहसास हुआ कि वह सब कुछ खोने के कितने करीब आ गया था जिसके लिए उसने इतनी मेहनत की थी।

अपने छोटे से अपार्टमेंट में बैठकर, उसने इस कठिन परीक्षा पर विचार किया। ''इंटरनेट एक दोधारी तलवार हो सकती है, उसने सोचा। यह त्वरित लाभ का वादा करता है लेकिन आपको जोखिमों के बारे में चेतावनी नहीं देता है। मैं आसान पैसे के भ्रम में पड़ गया।''

रवि ने फिर कभी आवेग में आकर व्यापार न करने की कसम खाई। उसने किसी भी वित्तीय प्रयास में उतरने से पहले खुद को अच्छी तरह से शिक्षित करने का भी वादा किया। सबसे महत्वपूर्ण बात, उसने महत्वाकांक्षा और लालच के बीच सीमाएं तय करना सीखा।

उस दिन से, रवि ने साइबर दुनिया में सावधानी से कदम रखा, हमेशा खुद को एक अमूल्य सबक याद दिलायाः हर चमकती हुई चीज सोना नहीं होती, और उच्च दांव की दुनिया में, विवेक लापरवाही पर भारी पड़ता है।

–डॉ. अमर कुमार बेहेरा
डिजाइन विभाग
भा.प्रौ.सं. कानपुर

युवा है तू युवा

अंधकार में एक दिया बनके जल सकता है,
चक्रवात प्रचंड भले हो कितना तू आगे बढ़ सकता है,
युवा है तू युवा जो ठान ले तू तो क्या नहीं कर सकता है?
जीवन की रणभूमि में घाव निश्चित ही मिलेंगे,
विचलित हुए बिना भी तू ये युद्ध लड़ सकता है,
सिंधु में जब नाव है तो धार क्या मझधार क्या,
मांझी साथ न भी हो तो तू स्वयं किनारा बन सकता है,
युवा है तू युवा जो ठान ले तू तो क्या नहीं कर सकता है?
किन्तु–परन्तु की अनिश्चिताओं से परे है तू,
असंभव को तू निश्चित ही संभव कर सकता है,
युवा है तू युवा जो ठान ले तू तो क्या नहीं कर सकता है?
भारत का अभिमान है तू, तुझसे हैं आकांक्षाएं बड़ी,
इतिहास बदल सकता है, वर्तमान को जी सकता है, भविष्य गढ़ सकता है,
युवा है तू युवा जो ठान ले तू तो क्या नहीं कर सकता है?

–हसन फरहान
पी.एच.डी. छात्र
एच.एस.एस
भा.प्रौ.सं. कानपुर

सच्चा दशहरा

पर्व विजयदशमी का सब लोग मनाते हैं,
अपने मन के रावण को क्यों नहीं जलाते हैं।
तिल–तिल कर घुटती यह धरती, उन दैत्यों के महा संहार से,
मानव न रह जाए वंचित उस दैवीय आभास से।

बुरे समय में तकिये के गिलाफ, और आस्तीनों के कोने ही बनते हैं सहारा,
उन सूख चुके आँसुओ के धब्बों को उन्होंने कभी नहीं उभारा।
लगता है आज सभी ने बुराई की सेज सजाई है,
जलाकर रावण का पुतला, स्वयं सीता के चरित्र की चिता बनाई है।

मंचन कर के राम का, जो इज्जत किसी ने कमाई है,
रामलीला के अंत में मिली हुई कीमत ललचाई आँखो से उठाई है।
करते हैं वर्णन श्री राम की गौरव गाथा का, सीता माँ के पतिव्रत का, लक्ष्मण की शौर्य गाथा का।
अरे! त्रेता के थे वो जब उन्होंने धरती को स्वर्ग बनाया था,

तुम्हें तो कोई चिंता नहीं, जब स्वयं दुश्चरित्र होकर उनके बारे में तुम कहते हो,
क्यों नहीं स्वयं चरित्रवान होकर धरती का उद्धार कर लेते हो।
रावण को तो हर साल बड़ी खुशी से जलाओगे, अपने मन के रावण को मारकर,
कब तुम सच्चा दशहरा मनाओगे?

–श्रेया त्रिवेदी
पुत्री सुबोध कुमार
सुरक्षा विभाग
भा.प्रौ.सं. कानपुर

स्टूडेंट जिमखाना आईआईटी कानपुर: कार्यप्रणाली और स्वर्णिम इतिहास

प्रत्येक शैक्षणिक संस्थान का इतिहास उसकी संस्कृति और मूल्यों के साथ–साथ संस्थापना की नींव, तार्किक क्षमता, उत्कृष्ट शिक्षा तंत्र और प्रगतिशील नीतियों से प्रेरित और परिपूर्ण होती है। भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) कानपुर की स्थापना सन् 1959 में हुई। आईआईटी कानपुर की स्थापना के बाद सन् 1962 में (कानपुर इंडो–अमेरिकन प्रोग्राम) ने आईआईटी कानपुर की नींव बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। संस्थान ने अमेरिकी विश्वविद्यालयों से मेंटरशिप, संस्कृति और छात्रसंघ प्रणाली सहित कई नीतियों को अपनाया और अनुकरण किया। सन् 1962 में ही, अमेरिकी शिक्षा के तहत सोची–समझी कार्य–प्रणाली के आधार पर विद्यार्थियों में कॉर्पोरेट जीवन, उच्च शिक्षा मूल्यों को बढ़ावा देने, प्रबंधन प्रणाली, दूरदर्शिता, नीति निर्धारण, संस्थान के छात्र संगठन के सामान्य उद्देश्य को आगे बढ़ाने, और छात्रों के बीच नेतृत्व क्षमता को विकसित करने के लिए स्टूडेंट्स जिमखाना की स्थापना की गयी।

स्टूडेंट्स जिमखाना आईआईटी कानपुर के छात्रों का एक आनुवांशिक संगठन है, जो विद्यार्थियों के हितों के लिए नित नई नीतियां, प्रस्ताव, और हितधारकों के साथ अपने संस्थान के विकास के लिए सदैव समर्पित है। आधुनिक दृष्टिकोण और गौरवशाली भविष्य की परिकल्पना के साथ, विगत वर्षों में विभिन्न भूतपूर्व छात्रों ने स्टूडेंट्स जिमखाना को स्थापित करने और इसे आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। स्टूडेंट्स जिमखाना पूरी तरह से छात्रों द्वारा संचालित संगठन है, जिसमें विभिन्न काउंसिल, प्रकोष्ठ, और छात्र सीनेट शामिल हैं। जिमखाना मॉडल का मुख्य उद्देश्य ही स्टूडेंट्स कम्युनिटी को उनके वास्तविक जीवन की चुनौतियों और महत्वपूर्ण निर्णय लेने वाली प्रक्रियाओं से अवगत कराकर उनमें नेतृत्व, जिम्मेदारी और प्रबंधन कौशल का जज्बा विकसित करना है ताकि छात्रों को उनके आने वाले भविष्य के लिए बेहतर ढंग से तैयार किया जा सके। आईआईटी कानपुर के निदेशक, स्टूडेंट्स जिमखाना के मुख्य संरक्षक और अधिष्ठाता विद्यार्थी कार्य मुख्य परामर्शदाता होते हैं।

जिमखाना में प्रेसिडेंट, चेयरपर्सन सीनेट, छात्र सीनेट और चार मुख्य परिषदें: एकेडमिक्स और करियर काउंसिल, विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी काउंसिल, गेम्स और स्पोर्ट्स काउंसिल, तथा मीडिया और सांस्कृतिक काउंसिल हैं, जो संस्थान के विभिन्न क्षेत्रों में कार्यरत हैं। और छात्र जिमखाना की कार्यकारी महत्वपूर्ण जिम्मेदारियाँ निभाती हैं। प्रत्येक काउंसिल के प्रमुख जनरल सेक्रेटरी (महासचिव) होते हैं जो परिषद में एक व्यापक उद्देश्य से विशिष्ट गतिविधियों को पूरा करने के साथ–साथ संबंधित मामलों को निष्पादित करते हैं। जिमखाना प्रेसिडेंट जो जिमखाना के शीर्ष नेतृत्व होते हैं, संस्थान के सभी मंचों पर छात्रों का प्रतिनिधित्व करते हैं। एकेडमिक्स सीनेट (संस्थान की सर्वोच्च नीति–निर्धारक संस्था, इंस्टीट्यूट अफेयर्स कमेटी, एंटी–रैगिंग कमेटी सहित सभी प्लेटफॉर्म पर जिमखाना प्रेसिडेंट छात्रों की शिकायतों को दूर करने और हल करने के लिए सक्रिय रूप से भाग लेते हैं। अमेरिकी प्रतिनिधि सभा या भारतीय

लोकसभा अध्यक्ष की तरह, स्टूडेंट्स जिमखाना के पास सीनेट का अध्यक्ष होता है और इसे चेयरपर्सन सीनेट कहते हैं। स्टूडेंट्स जिमखाना में छात्र सीनेट, सीनेट के सदस्यों से बना है, जिन्हें सीनेटर कहा जाता है, जो अपने स्वयं के बैच द्वारा चुने जाते हैं। सीनेट सभी छात्रों की सामूहिक आवाज का प्रतिनिधित्व करती है। जिमखाना प्रेसिडेंट और सीनेट चेयरपर्सन संस्थान की कई समितियों में विशेष आमंत्रित नॉमिनी होते हैं और छात्र मामलों से संबंधित सभी नीतियों में भाग लेते हैं।

स्टूडेंट्स जिमखाना में सीनेट छात्रों के हित से जुड़ी परिषदों के कार्यों के लिए समय–समय पर सामान्य दिशा–निर्देश निर्धारित करती है। सीनेटर अपने स्वयं के सीनेट अध्यक्ष का चुनाव करते हैं। स्टूडेंट्स जिमखाना संस्थान की नीति और निर्णय प्रक्रिया में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। सीनेट संस्थान के सभी छात्रों के लिए एक व्यापक मंच है, इसमें कई उप–समितियां हैं जिनके पास सीमित डोमेन हैं और विशिष्ट मुद्दों के लिए भूमिका निभाती हैं। इसके अलावा, सीनेट के पास सीनेट स्नातक/स्नातकोत्तर समिति (एसयुजीसी/एसपीजीसी) जैसी विभिन्न संस्थान समितियों के लिए अपने स्वयं के नामांकित स्टुडेंट्स होते हैं। सभी शैक्षणिक विभागों में विभागीय स्नातक और स्नातकोत्तर समितियां होती हैं, जिनमें संकाय सदस्य और छात्र जिमखाना के नामांकित छात्र शामिल होते हैं। स्टूडेंट्स जिमखाना के अंतर्गत कार्यरत एकेडमिक्स और करियर काउंसिल छात्र समुदाय की सभी शैक्षणिक समस्याओं, करियर विकास और शोध आवश्यकताओं के समाधान हेतु समर्पित है। एकेडमिक्स विंग संस्थान में सभी शैक्षणिक मामलों की देखरेख करता है और संस्थान के नीति–निर्माताओं तथा स्नातकोत्तर छात्रों के बीच एक महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में कार्य करता है। यह विंग स्नातक और स्नातकोत्तर (यूजी और पीजी) छात्रों के लिए एकेडमिक ओरिएंटेशन का आयोजन करता है और रजिस्ट्रेशन, टर्मिनेशन, अवकाश नियम और ग्रेडिंग नीतियों जैसे प्रमुख शैक्षणिक मुद्दों का भी समाधान करता है। यह काउंसिल विज्ञान, शोध और तकनीकी संगोष्ठियों के आयोजन के साथ–साथ अपने नवाचारों, वैज्ञानिक दृष्टिकोण और तकनीकी कौशल के बल पर काउंसिल संस्थान के गौरव को निरंतर बढ़ाने के लिए प्रयासरत है। रिसर्च और करियर से संबंधित कार्यशालाओं, व्याख्यानों और प्रतियोगिताओं की एक श्रृंखला की व्यवस्था करते हुए, काउंसिल काम करने और अपने

कौशल दिखाने के लिए स्टूडेंट्स को एक उत्कृष्ट मंच प्रदान करती है।

आईआईटी कानपुर की विज्ञान और प्रौद्योगिकी काउंसिल नवाचार और रचनात्मकता का एक प्रमुख केंद्र है, जो छात्रों को अत्याधुनिक तकनीकों का अन्वेषण करने और उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए सशक्त बनाती है । यह परिषद छात्रों को आधुनिक आविष्कारों और तकनीकी नवाचारों में रुचि लेने के लिए प्रोत्साहित करती है। विभिन्न क्लबों, हॉबी समूहों और टीमों के माध्यम से परिषद सभी छात्रों की रुचियों और जरूरतों को पूरा करती है और आवश्यक संसाधन भी उपलब्ध कराती है। विज्ञान और प्रौद्योगिकी काउंसिल, इंटर–आईआईटी समागम सहित विभिन्न तकनीकी प्रतियोगिताओं में संस्थान का प्रतिनिधित्व करती है। उचित प्रौद्योगिकी और आधुनिक तकनीकों का उपयोग कर, यह काउंसिल न केवल संस्थान के गौरव को बढ़ाती है बल्कि छात्रों के करियर–संबंधी कौशल और तकनीकी दक्षताओं को विकसित करने में भी निरंतर प्रयासरत रहती है।

मीडिया और सांस्कृतिक काउंसिल, आईआईटी कानपुर मीडिया, संस्कृति, संगीत, नृत्य, नाटक, कला कौशल के साथ छिपी प्रतिभाओं को निखारने का केंद्र है। विगत कई वर्षों से असंख्य छात्रों के लिए परिसर के अनुभव को समृद्ध किया है। समर्पित टीम और संबंधित क्लबों के नेतृत्व में, परिषद हर वर्ष अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रमों और आर्ट परफॉर्मेंस का आयोजन करती है। विभिन्न क्लबों और सोसाइटियों की विस्तृत श्रृंखला के माध्यम से, यह परिषद छात्रों को अपनी रुचियों और प्रतिभाओं को प्रदर्शित करने के कई महत्वपूर्ण अवसर प्रदान करती है, ताकि वे इस मंच का उपयोग कर अपनी क्षमताओं को एक सफल वास्तविकता में बदल सकें। गीत–संगीत, नृत्य, नाटक, कला–प्रदर्शन, चित्रकारी एवं लेखन जैसी सांस्कृतिक गतिविधियों में, मीडिया और सांस्कृतिक काउंसिल हर वर्ष इंटर–आईआईटी सहित अन्य प्रतियोगिताओं में अच्छा प्रदर्शन करती है। इन आयोजनों में छात्रों की प्रतिभा और समर्पण के बल पर, काउंसिल संस्थान के गौरव को नई ऊंचाइयों तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण योगदान देती है।

आईआईटी कानपुर की गेम्स और स्पोर्ट्स काउंसिल परिसर में सभी खेल आयोजनों के प्रबंधन और संचालन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है और खेलों को बढ़ावा देने के लिए पूरी तरह समर्पित है। परिषद छात्रों को उनकी खेल रुचियों को आगे बढ़ाने के लिए सभी आवश्यक सुविधाएं प्रदान करती है तथा इंटर–आईआईटी तथा अन्य प्रतियोगिताओं में उनके उत्कृष्ट प्रदर्शन से संस्थान का गौरव बढ़ाने में योगदान देती है. यह परिषद न केवल परिसर में खेल संस्कृति को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, बल्कि छात्रों को दृढ़ संघर्ष और निःस्वार्थ जुनून के साथ खेल जगत की उपलब्धियों से प्रेरणा लेकर विभिन्न प्रतियोगिताओं, जैसे प्रदेश स्तरीय टूर्नामेंट और इंटर–आईआईटी स्पोर्ट्स मीट में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित भी करती है।

–योगेश सिंह
पदार्थ विज्ञान विभाग
भा.प्रौ.सं. कानपुर

गुब्बारेवाली

होठों पर मुस्कान थी उसके,
चेहरे पर एक थकान थी,
बेच रहीं, वो गुब्बारे,
9 साल की नन्ही जान थी!!

अपनी रूठी किस्मत को मनाने निकल गई,
खेलने की उम्र में, कमाने निकल गई,
दुनिया भी बेरहम, देखती रहीं,
लगता उनकी अक्ल, घास खाने निकल गई!!

गुब्बारा बिकने पर खुश होती,
एक और गुब्बारा फिर फुलाती है,
सांसें भी अब हवा मांग रहीं,
इतना ज़ज्बा कहाँ से लाती है!!

शिक्षक अब मजदूर बने है,
अर्थ कमाने को मजबूर बने है,
शिक्षा पाकर भी घर बैठे है,
कुछ भिक्षा से फल–फूल रहे है!!

लगता है एक बवाल करेगी,
बच्ची की बात कमाल करेगी,
क्यों अनपढ़ मुख्य बने है?
सत्ता से तीखा सवाल करेगी!!

पानी बेचे सब बैठे है,
दुकानों पर शिक्षा का रोला है,
'ए छोटू चाय लाना'
किसी शिक्षक ने ये बोला है!!

शिक्षा पाकर मुख्य बनो तुम,
गुब्बारा कोई और फुला लेगा,
कर्तव्य अधिकार दोनों को जानो,
ये जीवन द्वार खुला देगा!!

गुब्बारा पकड़कर उड़ जाओ तुम,
सफलता के अनंत आसमान में,
'गुब्बारे वाली' भी अब चमकेगी,
इतिहास–ए–हिंदुस्तान में!!

गुब्बारे वाली के जैसे,
कितनों ने बचपन अपना खोया है!
दुःख, दर्द, पीड़ा को इसकी,
'हेमन्त' ने शब्दों में पिरोया है!!

–हेमन्त लाटा
पूर्व छात्र
भा.प्रौ.सं. मण्डी

साइबर गाथाः सुरक्षा का प्रकाश

साइबर की दुनिया, सुहानी मगर भारी,
हर कदम पे सावधानी, हर पल की तैयारी।।
सरलता के संग इसमें, छिपा एक द्वार,
जहाँ खुले तो मिले ज्ञान, पर बंद हो तो हार।।

सावधान! सावधान! ये दुनिया है अजब,
कभी देती खुशी, कभी दर्द का सबब।।
सावधान! सावधान! ये खेल है निराला,
जो समझेगा इसे, वही चलेगा मतवाला।।

सूचनाओं की गलियां, रोशनी से भरी,
मगर हर कोने में अंधेरा भी खड़ा करी।।
डाटा है तुम्हारा धन, इसे संभालो,
फिशिंग के कांटों से खुद को बचा लो।।

हर ईमेल की चिट्ठी, हर संदेश अनजान,
पहचानो क्या है सच्चा, क्या है झूठा सामान।।
पासवर्ड का पहरा हो, अनूठा और सटीक,
जो इसे खोले बिना, न टूटे कोई चीत।।

सावधान! सावधान! ये दुनिया है अजब,
कभी देती खुशी, कभी दर्द का सबब।।
सावधान! सावधान! ये खेल है निराला,
जो समझेगा इसे, वही चलेगा मतवाला।।

कैमरे की आँखों से, हर पल तुम दिखते हो,
हर क्लिक तुम्हारा, हजार सवाल लिखते हो।।
सोच-समझकर पोस्ट करो, हर तस्वीर, हर हाल,
वरना यही चुपचाप, करेगा जीवन बेहाल।।

तुम हो मालिक अपने, इस डिजिटल जहान के,
मगर सतर्क रहना, हर अनजान मेहमान के।।
सरलता तुम्हारी शक्ति है, सुरक्षा है तुम्हारी ढाल,
सावधानी से बढ़ना, यही है जीवन का कमाल।।

सावधान! सावधान! ये दुनिया है अजब,
कभी देती खुशी, कभी दर्द का सबब।।
सावधान! सावधान! ये खेल है निराला,
जो समझेगा इसे, वही चलेगा मतवाला।।

ऑनलाइन खरीदारी में, ध्यान रखना खास,
सही वेबसाइट चुनो, न करो झूठा विश्वास।।
हर लेन-देन सुरक्षित हो, ओटीपी हो पास,
वरना धन के साथ जाएगी, चैन और विश्वास।।

कॉल अगर हो अनजानी, बात बढ़ाओ मत आगे,
जो मांगे निजी जानकारी, उसे पल में ठुकरा दे।।
चालबाज हैं शिकारी, हर दिन है नया जाल,
तुम्हारी चतुराई ही, बनेगी सुरक्षित ढाल।।

गाओ साथ! गाओ साथ! ये संदेश नया लाओ,
सुरक्षा की रोशनी से, दुनिया को जगमगाओ।।
गाओ साथ! गाओ साथ! हर घर तक पहुँचाओ,
साइबर की ये गाथा, आओ सबको सिखलाओ।।

—नन्दा रानी, पीएचडी
कंप्यूटर साइंस एण्ड इंजीरियरिंग
भा.प्रौ.सं. कानपुर

वह किनारे खड़ा आदमी

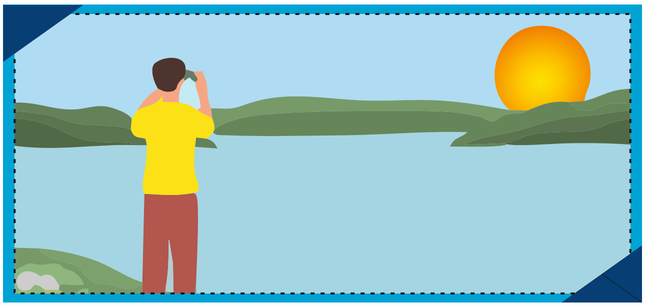

अथक अनन्तर प्रतिभा से पोषित
सपने सागर पार के, दृष्टि में समेटे हुये
भगीरथ प्रयास में
वह किनारे खड़ा आदमी,
व्यापकता से उद्भाषित
संकीर्णता से परिभाषित
नाविक पर प्रस्फुर करता
वह अंधकार में खड़ा आदमी,
अभिभावक के वैभव से उज्जवल
युवा शक्ति के जोश का प्रतिफल
अथाह समुंदर की लहरों से घुलता
वो किनारे खड़ा आदमी,
डूबते को तिनके की भाँति
देव लोक से पधारा-अचल गिरीश की भाँति
अभिसारिता की रस्सी पकड़े दिखता
वो किनारे खड़ा आदमी,
मन के ज्वारों में बहता
संकल्प के दलदल में रहता
वो किनारे खड़ा आदमी
आखिर!
कब तक खड़ा रहता।

—प्रकल्प शर्मा
उप कुलसचिव (विधि)
भा.प्रौ.सं. कानपुर

साइबर क्राइम

डिजिटल क्रांति के इस युग में साइबर स्पेस हमारे जीवन का अभिन्न हिस्सा बन चुका है। इंटरनेट ने न केवल व्यक्तिगत और व्यावसायिक कार्यों को सरल बनाया है, बल्कि यह ज्ञान और सूचना के विस्तार का भी मुख्य स्रोत है। साइबर तकनीक ने संचार, शिक्षा, स्वास्थ्य, व्यापार और मनोरंजन में क्रांति ला दी है। मोबाइल और लैपटॉप के जरिए एक क्लिक पर जानकारी, ऑनलाइन बैंकिंग, शॉपिंग और वर्क फ्रॉम होम जैसी सुविधाएं समय और दूरी की बाधाओं को समाप्त कर रही हैं। हालांकि, इसके साथ कई खतरे और चुनौतियां भी जुड़ी हैं।

सुरक्षा की आवश्यकता: साइबर दुनिया जितनी सरल है, उतनी ही संवेदनशील भी है। हैकिंग, फिशिंग, मालवेयर और डेटा चोरी जैसे साइबर अपराध तेजी से बढ़ रहे हैं। हमारे व्यक्तिगत और वित्तीय डेटा की सुरक्षा का मुद्दा आज सबसे बड़ा खतरा बन चुका है। इसलिए, हर व्यक्ति को अपने डिवाइस और डेटा की सुरक्षा के लिए मजबूत पासवर्ड, एंटीवायरस सॉफ्टवेयर और दो–स्तरीय सत्यापन का उपयोग करना चाहिए।

1. सुरक्षित वेबसाइट का उपयोग करें: हमेशा 'https://' वाले वेबसाइट्स पर ही भरोसा करें।

2. पब्लिक वाईफाई का प्रयोग न करें: पब्लिक वाई–फाई पर संवेदनशील जानकारी साझा करने से बचें।

3. सोशल मीडिया सावधानी: सोशल मीडिया पर अपनी व्यक्तिगत जानकारी साझा करने में सतर्कता बरतें।

4. फिशिंग ईमेल से बचाव: अनजान लिंक पर क्लिक न करें और किसी भी संदिग्ध ई–मेल को तुरंत हटा दें।

5. नियमित अपडेट: अपने सॉफ्टवेयर और डिवाइस को नियमित रूप से अपडेट करते रहें।

6. डिजिटल अरेस्ट जैसी स्थिति से बचें: अपराधी, पुलिस के अधिकारी बनकर, पासपोर्ट के अधिकारी बनकर, कस्टम के अधिकारी बनकर, साइबर क्राइम के अधिकारी बनकर या फिर अन्य अधिकारी बनकर वीडियो कॉल करते हैं और आपके सामने रूपये का भुगतान करने जैसी स्थिति पैदा करते हैं ध्यान रहे आपको हर स्थिति में पैसे का भुगतान नहीं करना है, ऐसी स्थिति में वो आप पर समय नष्ट नहीं करेगा। कोई भी अधिकारी आपको वीडियो कॉल नहीं करता है, अगर जरुरत पड़ने पर कॉल करेगा भी तो अधिक समय नहीं देगा, कोई जरुरत से ज्यादा समय दे रहा है तो समझ जाइये वो अपराधी हो सकता है, उसकी शिकायत कोतवाली में अवश्य करें ।

लोग पता नहीं कैसे अपराधियों के चंगुल में फंस जाते हैं जबकि हम सभी को पता है कि किसी भी सरकारी अधिकारी से बात करने के लिए हम लोग कितना फोन मिलाते हैं और बात करने की कोशिश करते हैं लेकिन उनके पास समय ही नहीं होता, और ये वाला फर्जी अधिकारी हमको दिन में चार बार फोन करता है और आधा–आधा घंटे

तक बात करता है, हम फिर भी नहीं समझ पाते ।

आई आई टी कानपुर द्वारा जारी सामान्य सुरक्षा दिशा–निर्देश: संस्था का उद्देश्य सभी उपयोगकर्ताओं को सुरक्षा उपायों के बारे में जागरूक करना और संभावित साइबर हमलों से बचाव करना है।

1. पासवर्ड सुरक्षा: पासवर्ड साझा न करें और इसे किसी सार्वजनिक मशीन पर सेव न करें। पासवर्ड को लंबा और जटिल रखें (कम से कम 8 अक्षरों का, जिसमें एक बड़ा अक्षर, एक छोटा अक्षर, एक संख्या, और एक विशेष चिन्ह हो)।

2. बायोमेट्रिक फिंगरप्रिंट: कुछ विशेष मशीनों के लिए बायोमेट्रिक फिंगरप्रिंट का प्रयोग कर सकते हैं। बायोमेट्रिक फिंगरप्रिंट की भी कॉपी करने में कुछ अपराधियों को महारथ हासिल है।

3. डिवाइस सुरक्षा: यदि संभव हो तो दो–कारक प्रमाणीकरण का उपयोग करें। सार्वजनिक वाईफाई का उपयोग न करें और HTTPS जाँच करें।

4. मैलवेयर से बचाव: किसी भी संदिग्ध लिंक या अज्ञात फ़ाइलों को न खोलें। एंटीवायरस सॉफ्टवेयर का उपयोग करें और समय–समय पर अपडेट रखें।

5. साइबर अपराधियों द्वारा किसी कंपनी, संस्था अथवा बैंक के मिलते जुलते फर्जी वेबपेज बना दिए जाते हैं जिनमे लॉगिन करने से हमारा यूजर नेम और पासवर्ड उनके पास पहुँच जाता है, जिसका वो दुरुपयोग करते हैं।

6. किसी भी स्थिति में पैसे का भुगतान न करें, किसी भी अनजान लिंक पर क्लिक न करें तथा किसी भी अनजान QR कोड को स्कैन न करें ।

नेटवर्क, ई–मेल और ब्राउज़र संबंधी सुरक्षा :

1. नेटवर्क एक्सेस: अपने क्रेडेंशियल्स से ही लॉगिन करें। अगर डिवाइस संक्रमित है, तो हेल्प डेस्क की मदद लें। आईआईटी कानपुर नेटवर्क के बाहर से पहुँच के लिए वीपीएन का उपयोग करें। अज्ञात

ई–मेल, संदिग्ध लिंक पर क्लिक न करें।

2. एंटीवायरस और फायरवॉलः रीयल टाइम सुरक्षा के लिए फायरवॉल और एंटीवायरस चालू रखें।

3. सुरक्षित ब्राउजिंगः आपके पासवर्ड को किसी भी ऐसे ब्राउजर में सेव न करें जिसमें पासवर्ड को सुरक्षित रखने के लिए कोई उचित सुरक्षा (जैसे मास्टर पासवर्ड, एन्क्रिप्शन) का प्रावधान न हो। यदि ब्राउजर में पासवर्ड सेव किए जाते हैं तो वे आसानी से एक्सेसिबल या असुरक्षित हो जाते हैं, ऐसे में कोई भी व्यक्ति आपके डिवाइस तक पहुंच पाकर आपके सेव किए गए पासवर्ड चुरा सकता है। महत्वपूर्ण डेटा का नियमित बैकअप रखें और संवेदनशील डेटा एन्क्रिप्ट करें। अपना मोबाइल बच्चों के पास न छोड़ें, अपराधी उनके साथ गेम खेलने के बहाने उनसे दोस्ती करके आपका ओटीपी और जरूरी जानकारी पता कर सकते हैं ।

7. डीपफेक तकनीकः एआई का उपयोग करके नकली वीडियो, ऑडियो, या तस्वीरें बनती हैं, जो असली लगती हैं। इसका दुरुपयोग फर्जी खबरें फैलाने, ब्लैकमेल, धोखाधड़ी, महिला उत्पीड़न, और चुनाव प्रभावित करने में किया जा सकता है। इससे बचने के लिए जागरुकता बढ़ाना, डीपफेक पहचानने वाली तकनीक का उपयोग, कड़े कानून, सोशल मीडिया निगरानी और सूचना सत्यापन जरूरी है। संदिग्ध सामग्री साझा न करें और फर्जी वीडियो की पहचान कर संबंधित प्राधिकरण को रिपोर्ट करें।

साइबर स्पेस की सरलता का पूरा लाभ उठाएं, लेकिन सुरक्षा और सावधानियों का साथ कभी न छोड़ें।

–देवेन्द्र नरायण राजपूत
वरिष्ठ परियोजना सहयोगी
कंप्यूटर सेंटर
भा.प्रौ.सं. कानपुर

बीज का बोध

एक बीज गिरा
जमीन पर
पता नहीं फेंका गया
या बोया गया।

धरती ने कारण नहीं पूछा
माँ है अपना लिया
धरा का धर्म है पोषण
समेट कर सुला दिया।

अद्भुत है ये आलिंगन
ना लोभ, ना ईर्ष्या, ना भेद
फिर बीज चाहे कांटा बने
बेल बने या छायादार पेड़।

बीज का धर्म है उगना
बस चाहिए एक पोषित वातावरण
भूमि आलिंगन, नमी, हवा
और एक नए जीवन का आवरण ।

बीज की चाहत नहीं
बड़ा होकर कुछ अलग करने की
उसे बस ललक है
जो हूँ उसमें अच्छा बनने की।

ये तो नियति ने तय कर दिया है
कि क्या बनना है
इसलिए पौधों में कोई द्वेष नहीं
जो हूँ उसे बेहतर करना है।

समय भी है पोषक
जैसे जैसे बीतता है
अलग अलग मौसम लाकर
सब पौधों को सींचता है।

बीज से ही बनेगा पेड़
पौधा शुरुआत है
ये सफर देखेगा मौसम कई
समय की ही तो बात है।

फिर पेड़ देगा जन्म बीज को
और खुद मिट्टी में होगा दफ़न
और बीज गिरेगा जमी पर
समय पूरा होगा एक दिन।

धरती, पेड़, हवा, पानी
धूप, समय और मौसम
बीज से पौधा, पौधे से बीज
जनम मरण, फिर से जनम।

'अनिल' भाग्यशाली है वो
जो ये बोध कर पाता है
बीज लक्ष्य से नहीं
स्वयंबोध से पेड़ बन पाता है।

मेजर अनिल कुमार (भारतीय सेना)
संगणक विज्ञान एवं अभियांत्रिकी विभाग
भा.प्रौ.सं. कानपुर

पगली अम्मा

नाम तो था वैसे उनका चोरनी–अम्मा, सबके शहरी खेतों (किचन गार्डेन) से गाजर मूली जो चुराती थीं। पर माँ कभी चोर नहीं हो सकती, न ही कभी गलत हो सकती है– ऐसा अरुण गोविल जी ने लॉकडाउन में दूरदर्शन पे चली रामायण में डिक्लेयर कर दिया था, इसलिए पगली अम्मा! जितनी बुजुर्ग थीं उससे कहीं ज्यादा की ही लगती थी, वक्त के थपेड़ों से ज्यादा मुश्किलों की मार ने चेहरे में रेखायें खींच दी थी। काया भी पतली दुबली कमजोर सी ही कि जरा जोर का धक्का दो तो इलाहाबाद में जाकर मिलेंगी, माफ कीजिएगा प्रयागराज! लेकिन इस कृषकाय सी दिखने वाली महिला पे मत जाइएगा, बिजली सी फुर्ती थी उनमें, लोगो के घरों में सफाई का काम करती थीं और पलक झपकते ही सब कुछ साफ हो जाता था। न बाँस बचता था, न बाँसुरी और न ही बजाने वाला।

मैं कुछ दिनों के लिए पिता जी के सर्विस बंगलॉ पर आयी हुई थी, इतने दिनों से खाँसी चिपकी हुई थी कि पढ़ना–लिखना छूट गया था, सो पिता जी ने अपने पास बुला लिया था कि यहाँ सेवा हो जायेगी। सेवा मतलब, रोज सुबह नाक दबाकर पिता जी के हाथ का बनाया हुआ कड़वा काढ़ा पीना, रोते–खपते अगर वो गले से नीचे उतर गया तो सब्जियों के छिलके का सूप जिसमें करेला प्रमुख होता था और अगर उससे भी जीवित रह गये तो खाने में उबली हुई बेस्वाद खिचड़ी जो नयी हल्दी लगी दुल्हन से भी ज्यादा पीली होती थी और साथ में लाल–लाल चुकन्दर, ये मेरा रोज का मेन्यू था। हर दिन बच्ची सेम खाना खाकर बोर हो जायेगी ऐसा सोच के सोमवार और शनिवार को उबली हुई दाल के पानी में अदरक और काली मिर्च मिलाकर पीने का भी विकल्प था, साइड डिश के तौर पे। और ये सब पिताजी स्वयं अपने हाथों से बनाते थे घंटो खड़े रहकर। वाह! क्या दिन थे! पिता जी का यह प्यार और सेवा–भाव आंखों में आंसू ले आता था। वैसे मुझे शक है कि ये आंसू करेले के कारण भी हो सकते हैं क्योंकि सोमवार और शनिवार को मैं ज्यादा भावुक होती थी!

बड़ी दुविधा थी, अगर ठीक हो गयी तो परीक्षा देनी पड़ेगी और अगर ऐसे ही बीमार रही तो ये कन्द मूल फल खाते–खाते जीवन जीने की इच्छा ही समाप्त हो जायेगी। इन सब में आशा की किरण लेकर आती थी पगली अम्मा। हाथों में झाड़ू घुमाती हुई, चेहरे पर शैतानी हँसी लिए, आंखों से घर के हर सामान का जायजा लेती हुई और प्यार से मुझे पुकारती हुई–बिट्टू दरवाजा खोलो, मै आ गयी! समय से तो पगली अम्मा का अलग ही बैर था। सुबह का झाड़ू–पोछा जो उन्होंने शाम के 4 बजे से पहले कभी किया हो तो नाम बदल देना उनका (अगर पता हो तो)। पर जबसे ये बीमार आत्मा पिता जी के घर पधारी थी, अम्मा नियत समय पर आ धमकती थी। पहले–पहल जब बिट्टू दिखी थी उन्हें घर में तो अम्मा ने घूर–घूर के उसकी ऐसे जाँच पड़ताल की थी मानो कि पिता जी कोई वनमानुष पकड़ लाए हों पर हर तीसरे सेकेण्ड बिट्टू की खों–खों सुनने के बाद वो पहला और आखिरी दिन था जब अम्मा देर से आयी उसके बाद तो बिट्टू की आंखे ही अम्मा की घण्टी से खुलतीं। अम्मा चार घरों में सफाई करती थी, सफाई मतलब 'सफाई' और पिता जी के घर का नंबर सबसे अन्त में आता था उनकी गिनती में, कभी कभी नहीं भी आता था पर अब तो वो सबको मना करके सबसे पहले बिट्टू की सेवा में हाजिर होती थीं। ये बात पड़ोसन चाची ने बिट्टू को नाक–भौं सिकोड़ते हुये शिकायती लहजे में बतायी थी। बिट्टू के कसैले मन पे जैसे शहद की चंद बूंदे पड़ गयी थी ये सुनकर।

पिताजी का घर और हृदय दोनों बहुत बड़ा था सो घर की निगरानी के लिए पगली अम्मा की नियुक्ति हुई थी और अम्मा की निगरानी के लिए परम–प्रतापी, परम–तेजस्वी श्रीमान प्रदीप की! पिताजी की सेवा, भक्ति और आज्ञा पालन में इसकी सीधी प्रतिस्पर्धा हनुमान जी से थी। पिताजी हनुमान जी के फैन थे और ये महाशय पिताजी के। जो पिताजी ने कह दिया वो इसके लिए पत्थर की लकीर है। पिता जी ने घर का सामान लाने और रख–रखाव की पूरी जिम्मेदारी उसे सौंपी थी जिसे वो पूरी तन्मयता के साथ निभाता था, यहां तक कि एक दिन बिट्टू को भी एक पैकेट ब्रेड एक्स्ट्रा मंगवाने के लिए कड़ी कार्रवाई से गुजरना पड़ा।

''कल ही तो लाये थे''

''खत्म हो गया, दूसरा लाओ'' बिट्टू ने मुँह बनाया।

''खत्म हो गया? ऐसे कैसे खत्म हो गया?'' प्रदीप चकराया।

बिट्टू चुप, कहे भी तो क्या? आज तक पिता जी ने उसे किसी सामान के लिए दोबारा नहीं पूछा था, बस! आर्डर हुआ और सामान हाजिर। यहां तक कि हर गर्मी की छुट्टियों में बिट्टू एक–न–एक सामान जरुर तोड़ती–कभी मंहगी घड़ी तो कभी विलायती कैमरा। और तोड़कर पिता जी को थमा देती, पर पिता जी कभी उसे कुछ नहीं कहते, उल्टा सामान ठीक कराकर उसे हाथों में देते हुए पूछते, देख के बताओ ठीक चल रहा है कि नहीं।

और यहाँ ये चपड़गंजू बिट्टू के घर में, उसी से सवाल कर रहा था। खैर बिट्टू भी क्या करती? पिता जी ने घर की पावर ऑफ अटार्नी भी तो उसे ही दे रखी थी। हारकर ब्रेड खाने का इरादा ही छोड़ दिया बिट्टू ने। बिट्टू से थोड़ा छोटा ये बालक अम्मा के लिए भी बहुत मोटा सर दर्द था। तुम डार–डार हम पात–पात! बचपन में ये मुहावरा

बिट्टू को समझ नहीं आता था, इन दोनो ने समझा दिया। अम्मा जैसे ही घर में घुसती, प्रदीप जाने कहाँ से प्रकट हो जाता। बिट्टू अम्मा को देख के जितनी खुश होती, अम्मा प्रदीप को देख कर उतना ही मुरझा जाती। मानो चोर के सामने तिजोरी खुली रख दी पर गले कोतवाल बांध दिया। अम्मा आगे–आगे प्रदीप पीछे–पीछे। अम्मा दालान तक में झाड़ू लगाती तो प्रदीप उनकी पूंछ बनकर चिपका रहता। अम्मा खीझतीं, ''क्यों प्रदीप हम यहाँ से तुम्हारा क्या उठा लेगें, गलियारा ही तो है, तुम हमें सफाई नहीं न करने देते।''

''वहीं तो नहीं करने देनी है अम्मा!'' प्रदीप अपनी बिना उगी मूंछों पर ताव देते हुए कहता, अम्मा पोछा लगाती तो प्रदीप नजर रखने के चक्कर में या जान–बूझकर उसपे जूते रख कर चल देता और अम्मा उबल पड़ती। हर रोज यूं ही प्रदीप अम्मा को चिकोटी काटकर भाग जाता और अम्मा सूज के टमाटर हो जाती और फिर होता एलान–ए–जंग! दोनों घर को हल्दीघाटी का मैदान बना लेते और मूक दर्शक होती बेचारी बिट्टू! मुंह खोले भी तो कैसे? खोलती है तो बस खों–खों करती है, ये कोरोना को तो लोगों ने यूं ही सर चढ़ा लिया, वरना खांसी तो उसकी भी मौसी है। हकीम उस्मान के पास शक की बीमारी का इलाज हो सकता है पर मनहूस इस खांसी का नहीं। पगली अम्मा और प्रदीप के रोज–रोज के प्रकरण से पार पाती बिट्टू को एक और 'प' ने आ घेरा। ये थी 'पंडिताइन' काफी भली औरत है ऐसा उनका स्वयं मानना है। और याद रखिए बिट्टू यहाँ भी मूक–दर्शक है, सो मानना उसकी मजबूरी।

इस बड़े से घर में इन तीन प्राणियों का हर दिन का यही क्रिया–कलाप था। पिता जी तो सुबह के भूले की भांति शाम को ही घर लौटते। बीच का 'फिल–इन–द–ब्लैंक' उन्हें समझाता भी तो कौन? बिट्टू तो गूंगी गुड़िया से थोड़ी ही बेहतर स्थिति में थी। बोलती कम थी पर आँखों से सबका खांका खींचती थी कि शायद कभी किसी दिन देश के किसी बड़े से संस्थान की पत्रिका में इन किरदारों को कलम से उतारने का मौका मिलेगा। इन किरदारों की कड़ी में एक नाम और था जिन्हें हम पीछे छोड़ आए–पंडिताइन। बहुत मानती थी बिट्टू को, इतना कि जान नहीं छोड़ती थी उसकी, सुबह शाम की आरती की माफिक नियमित दर्शन देती थीं।

बिट्टू को तो लगने लगा था कि वो इंसान नहीं चुम्बक है। तभी तो दिमागी रूप से हिले हुए सभी प्राणी उससे चिपक जाते थे। सोचती थी जाने पिता जी इन सबको कैसे झेलते हैं, फिर खुद को आइने में देख कर समझ जाती थी कि सालों की प्रैक्टिस है। खैर पंडिताइन आती, अपनी यहाँ–वहाँ की बारहखड़ी सुनाती, थोड़ा पगली अम्मा को छेड़तीं, थोड़ा प्रदीप के पर काटती, पर बिट्टू से कहती बस तेरे लिए ही आयी हूँ, तेरी चिंता होती है। बिट्टू कैसे कहे आपकी ये चिंता सही नहीं जाती। घर में पहले से मौजूद दो महारथियों के द्वंद युद्ध देखने–सुलझाने के बाद, बिट्टू में थोड़ी ही जान बचती थी–आधी खाँसी ले जाती, आधी पंडिताइन। बिट्टू पढ़े भी तो कैसे? प्रतियोगी परीक्षाएं सर पर थी, और तीन प्रखर बुद्धि के स्वामी भी!

वैसे बिट्टू भी कोई सीधी न थी, अव्वल दर्जे की पियक्कड़ थी। जिस दिन पांव धरे थे पिता जी के घर में, उस दिन टाटा टी चाय पत्ती का आधा किलो का डिब्बा पूरा भरा हुआ था, और कुछ ही दिनों में पूरा साफ। आपको क्या लगा? अरे भाई बिट्टू चाय पत्ती उबाल के कोई नये प्रकार की विस्की नहीं बनाती, चाय ही पीती है। चाय कोई छोटा नशा है? या तो बच्चे ये नशा करके आईआईटी पहुंचते हैं या पहुँचने के बाद यह नशा करते हैं, सरकार को देशी ठेके बाद में पहले चाय के ठेके बंद करवाने चाहिए जो लगभग हर गली नुक्कड़ पे हैं, कहाँ जाएगा आज का युवा? उड़ता पंजाब के बाद डूबता यूपी इस चाय के चक्कर में ही बनेगा।

पिता जी की पारखी नजरों से कुछ नहीं छुपता था, खासकर बिट्टू की चाय की लत। बाकी सारे वीर तो दिन भर लड़–झगड़ कर सांझ होने तक युद्ध विराम का बिगुल बजाके चुपके से खिसक लेते थे, पर बिट्टू चाय का पतीला, छन्नी और दिन–भर के पाँच जूठे कप आखिर कहाँ छुपाये? ये बचपन में गणित का रिपोर्ट कार्ड छुपा लेने से कहीं अधिक मुश्किल था। वो कहते है न, वक्त और टेक्नोलॉजी ने चोर को जितना शातिर किया है, पुलिस को उतना ही चौकन्ना। और चोर पुलिस का ये खेल पिता जी और बिट्टू तो बचपन से खेल रहे है, जिसमें गणित के नंबरों की गवाही देने पूरा मुहल्ला आता था, फेल होते कौशल मियां के अब्बाजान भी! पिता जी तो बस बिट्टू की भलाई चाहते थे, बचपन से जिस चाय नाम की चिड़िया से दूर रखा, बिट्टू आज उसी के पैग बनाए जा रही है। शुरू–शुरू में तो पकड़ी गयी, पर बीमारी में बुद्धि इतनी भी मंद नहीं हो जाती। फॉरेंसिक टीम लीडर शाम को पहुचे इससे पहले बिट्टू सारे सबूत साफ कर देती। सारे कप धुल जाते, छन्नी घिस–घिस कर ऐसी सफेद की जाती की देख के लगे ही न कि इसने किसी युग में चाय देखी भी थी, और पतीला–पतीला तो नींबू की शक्ति वाले विम बार से ऐसा चमकाया जाता कि अम्मा उसी में में अपना चेहरा देख, सिंगार–पटार करके घर को चल देती साँझ को। इस स्वच्छ भारत अभियान को अन्जाम देना इतना आसान नहीं थ। जैसे हिंदी फिल्मों में हीरों की हाथों खून होने के बाद लाश ठिखाने लगाते समय कोई न काई देख ही लेता है, ठीक उसी तरह सबूत मिटाते समय ऐन मौके पे पण्डिताइन टपक पड़ती। बिट्टू पूरे समय पंडिताइन का चेहरा कम और घड़ी–घड़ी घड़ी की ओर ज्यादा देखती। पंडिताइन को उसके चेहरे के भाव दिखते, पर वो फिर भी न खिसकती। खैर जैसे–तैसे उनकी विदाई कर बिट्टू समय

से रेस लगाती हुई 7 बजने से पहले रसोई ऐसी साफ कर देती की जैसे उसने वहाँ की चौखट का कलश कभी गिराया ही न हो।

पर वो कहते हैं न गुरू, गुरू होता है, चेला, चेला! मुजरिम कितनी भी कोशिश कर ले, निशान तो छोड़ ही जाता है। यहाँ भी वही हुआ, बस सबूत नाक के नीचे नहीं ऊपर था। चाय बनाने की जगह के ठीक ऊपर वाली स्लैब पर चाय पत्ती का डिब्बा चीख–चीख कर चिल्ला रहा था कि हुजूर! मेरा खजाना लूटा गया है, और चोर कोई और नहीं, राजकुमारी बिट्टू है। मजबूर राजा भी क्या करता, चुप–चाप खजाने को तड़के 5 बजे उठकर भर दिया करता था और 11 बजे उठने वाली राजकुमारी को लगता कि आखिरकार इतने सालों में उनसे पिता जी से राज–ए–उल्फत छिपाना सीख लिया है।

इस चाय पे चर्चा में बिट्टू अकेली नहीं होती थी, उसकी संगिनी थी पगली अम्मा। सुबह उठकर मुँह–हाथ धो लेने के बाद बिट्टू को पहली तलब चाय की लगती और जैसे ही छानने को होती, कि अम्मा आ टपकती। बिट्टू पूछती– अम्मा चाय पियोगी? अम्मा भला क्यूं मना करे, धम्म से वहीं बैठ जाती हाँ की मुद्रा में, सो रोज का यही नियम था। बिट्टू का चाय बनाना, अम्मा का आ जाना और बिट्टू का एक कप चाय को दोगुना कर देना। चाय परोसने का भी एक रिवाज है, कि ये कभी अकेली नहीं दी जाती, इसके संगी–साथी होते हैं बिस्कुट, नमकीन, समोसा या आम के आचार के साथ गरमा–गरम पराठे। अब बिट्टू भला ये सब कहाँ से लाये, कभी जीवन में कड़छी पकड़ी हो तो बनाये, चाय बना लेती है यही दुनिया पे एहसान करती है। सो अम्मा का वो चाय के साथ 2 रोटी और सब्जी परोस दिया करती, अम्मा खुशी–खुशी खाती और कभी न नहीं करती।

ऐसी ही किसी चाय पे चर्चा में एक दिन अम्मा अपनी जीवनी सुनाने लगी, कहानी की रेलगाड़ी चली उनकी शादी से और आकर रूकी उनके पति की अकाल मृत्यु पे। हर सावित्री अपने सत्यवान के लिए यमराज से नहीं लड़ पाती, पर उसके बाद जीवन भर परिस्थितियों से लड़ती रहती है। कैसी विडम्बना है कि उनका नाम भी सावित्री था। जितनी सिलवटें उनके माथे पे थी, उससे ज्यादा उनके नसीब में, पचास की उम्र में यू हीं कोई 70 वर्ष का नहीं लगता। अम्मा बताने लगी कि कैसे उनके पति एक रोज बीमार पड़े, कैसे उसके बाद उनके ससुराल वालों ने उन्हें घर से अलग कर दिया। कैसे इन्होंनें तिनका–तिनका जोड़कर घर बनाया, कैसे अकेले चार बालकों का भरण–पोषण किया यह सोचकर कि एक दिन वो उनका सहारा बनेंगे, कैसे वो आज भी उनका पोषण कर रही है, कैसे उनके अपने दो बेटों ने उन्हें अपने ही घर से एक बार फिर अलग कर दिया, कैसे वो एक बार फिर हिम्मत करके साल दर साल थोड़ा–थोड़ा करके अपना आशियाना फिर खड़ा कर रही है, अम्मा के जीवन में कई मौसम आए कई गए, बस मेहनत–मजदूरी और मजबूरी का मौसम नहीं बदला। बेमन से उनकी ऑटोबायोग्राफी सुनती बिट्टू बिना सोचे फूट पड़ी, ''तो अम्मा क्यूं खिला रही हो ऐसे बच्चों को, क्यूं करनी है उनकी चिंता, जैसे को तैसा दो, तुम भी उन्हें छोड़ दो''

अम्मा हक्की–बक्की रह गयी, जिस बिट्टू को इतना मानती थी, ऐसे कैसे बोल गयी वो, फिर नम आँखों से बिट्टू को समझाती हुई बोली–''ऐसे कैसे छोड़ दू बिट्टू, औलाद हैं वो मेरी, उनके लिए ही जीती आयी हूँ। वो भले भूल जाए मैं नहीं भूल सकती''। पिता जी भी अक्सर यही बात कहते हैं, जाने सब एक ही स्कूल से पढे हैं क्या– यादों में गोता खाती बिट्टू को ध्यान आया कैसे बड़े से बड़ा कांड करने पर पिता जी उसे डांटतें, पर फिर वही उसकी उँगली पकड़ कर सहारा देकर बड़ी से बड़ी मुश्किल से बाहर भी निकालते। सोचने लगी कि ये माँ–बाप भी न जाने किस मिट्टी के बने होते है। पता नहीं कौन से ज़माने के लोग है, मैं होती तो बिल्कुल ऐसा न करती, छोड़ देती ऐसे बच्चों का हाथ कि जाओं अपनी करनी खुद झेलो।

मन ही मन कुडबुडाती बिट्टू जब पलटी तो देखा–जो अम्मा वक्त के इन थपेड़ों से नहीं टूटी, बच्चों को खो देने के विचार तक से कांप गयी थी। बिट्टू ने उनकी आँखें देखी तो वो भी जानी पहचानी सी लगी, बिल्कुल वैसे ही नम आँखे माँ की थी जब बिट्टू पूरे दिन की स्कूल गयी हुई समय से घर नहीं लौटी थी बोर्ड–इग्जाम के समय और उसकी कोई खोज–खबर भी नहीं मिल रही थी। पत्थर से मन वाली बिट्टू थोड़ा तो नरम हुई और जल्दी से अम्मा का ध्यान बटाने को गरमा–गरम चाय छान लायी। हर मर्ज़ की एक ही दवा पता थी बिट्टू को, सो बना लायी। साथ में रोटी अचार भी प्लेट में सजा दिया, सब्जी ना थी उस दिन, न बनाने का माद्दा ही था बिट्टू में। पिता जी की इकलौती बिटिया अक्सर दिल की साफ पर काम में नालायक होती है। सो इतना ही कर पायी बिट्टू। अम्मा आज बेमन से झाड़ू लगा रही थी, जिन घावों पर वक्त ने मरहम नहीं पर परतें चढ़ा दी थी, बिट्टू ने अपने अनुभव हीन सवालों से उन्हें कुरेद दिया था। चाय आयी तो अम्मा ने तुरन्त ही झाड़ू किनारे पटक दी और फुर्ती से आकर रसोई की दीवार के सिरहाने बैठ गयी। बिट्टू को थोड़ा आश्चर्य हुआ उनके इस मूड स्विंग से, अभी–अभी तो यह उदास थी, खाना और चाय देखते ही चेहरे की रंगत बदल गयी। अम्मा ने शायद बिट्टू के चेहरे के ये भाव पढ लिए थे। सो खाते–खाते अचानक रोटी का एक कौर हवा में दिखाते हुये बोल पड़ी, ''बिट्टू, सबसे बड़ी है यह रोटी। माँ–बाप, भाई–बहन, पति–बच्चे सब छोड़ जायेगें। पर अंत तक संघर्ष इस रोटी का होगा। हम चाहें रिश्तों के लिए कितनी ही जान दे दें, पर खानी और कमानी तो ये रोटी ही है न, इतना कह कर और दो मिनट का मौन धरकर अम्मा फिर अपने खाने में जुट गयी, पर बिट्टू को

जैसे किसी ने जड़ कर दिया था। उसके लिए समय एक पल को जैसे रुक गया, जैसे अर्जुन को ज्ञान देते समय गोविन्द ने समय को रोका था। जीवन के कुरूक्षेत्र में बिट्टू को अम्मा की बातें गीता का सार लगीं। सच ही तो है, सबसे बड़ी है रोटी, सारी लड़ाई इसी की है, सुनने में बात बहुत छोटी सी है, पर बिट्टू को उस दिन बहुत बड़ी लगी। एक अरसा हो गया था बिट्टू को खुलकर हंसे हुए, मुस्कुराए हुए। वो शरीर से ही नहीं, मन से भी बीमार थी। एक के बाद एक परीक्षा तो देती थी पर सफलता किस चिड़िया का नाम है ये वह भूल चुकी थी। पिता जी ने हमेशा उसका उत्साह बढ़ाया, पर जीवन के असली संघर्षों से दूर रखा, उसने कभी जाना ही नहीं कि दो वक्त की रोटी का जुगाड़ करने की जद्दोजहद क्या होती है। अम्मा ने उसकी आँखों से यही परदा हटा दिया, और जीवन का वो रूप दिखाया जिसे देखकर राजकुमार सिद्धार्थ, गौतम बुद्ध हो गये थे।

बिट्टू के घायल पंखों को जैसे अम्मा ने अपने शब्दों से सिल दिया था। उन्होंने जाने-अन्जाने अपना संदेश बिट्टू के मन की बोतल में बंद करके भावनाओं के अथाह समुंदर में कहीं फेंक दिया था। बिट्टू जानती है कि हताशाओं का सुनामी फिर आयेगा, हताशाओं का ज्वार-भाटा फिर उठेगा, पर उनके साथ ही तैरती हुई आएगीं वो बोतल, बिट्टू मन की बोतल का ढ़क्कन खोल कर संदेश पढ़ेगी, अम्मा की आवाज कहीं दूर से गूँजेगी। "बिट्टू, सबसे बड़ी है रोटी, रूकना नहीं!" बिट्टू पीछे मुड़कर देखेगी, अम्मा का धुँधला साया दिखाई देगा। बिट्टू मुस्कुराकर संदेश बोतल में बंद करके फिर से फेंक देगी मन के अथाह समुंदर में और उड़ जायेगी नये हौसलों के साथ।

अम्मा को नहीं पता बिट्टू कहां है? शायद बिट्टू याद भी न हो, भले ही ये नाम उन्होंने ही दिया था पहले दिन क्योंकि उसका असली नाम पूछने की हिम्मत उनमें हुई नहीं और बाद में कभी जरूरत पड़ी नहीं। बिट्टू भी आज अपने सपनों को पूरा करने की दौड़ में व्यस्त है, ठोकर खाती है, गिरती है, संभलती है, फिर उठ खड़ी होती है। पगली अम्मा उसे बस गाहे-बगाहे याद आती है, नहीं जानती अम्मा कहां है। होंगी कहीं किसी के शहरी खेत से लौकी-तरोई चुराती हुई, या शायद खाट पकड़ ली हो। कौन जाने। अगर कुछ याद है तो उनका जादुई संदेश।

आपके जीवन में भी कोई पगली अम्मा रही होगी। जिसने मन के चिराग में हौसलों का जिन्न बांध कर दे दिया होगा, ख्वाहिशें पूरी करने के लिए... आपके, मेरे और हम सबके जीवन की उस पगली अम्मा को सलाम!

—ज्योति मिश्रा
पी.एच.डी. छात्रा
भा.प्रौ.सं. कानपुर

संघर्ष का सफर

"संघर्ष की कहानियां हर किसी की होती है,
जो सफल होते हैं उनकी छप जाती है,
और जो असफल होते हैं
उनकी दब जाती हैं।"

ऐसे क्यों तुम रुक गये
यात्रा अभी शुरू हुई है और
तुम अभी से थक गये।

इसकी बातें, उसके उलाहने
घरवालों की गालियाँ, रिश्तेदारों के ताने
सबको दिल पर लगाकर तुम बैठ गये।
यात्रा तो अभी शुरू हुई है, और
तुम अभी से थक हार गये।

पैसे की तंगी, बेरोजगारी
कर्जे का बढ़ता नित भार
इन सबको लेकर रुक गए
यात्रा तो अभी शुरू हुई है
और तुम अभी से थक गये।

प्रतिस्पर्धा के बढ़ते इस संग्राम में
कितने आये और कितने गये और तुम बैठ गये
यात्रा तो अभी शुरू हुई है
और तुम अभी से थक हार गये।

अभी तो क्षण-क्षण परिश्रम करना पड़ेगा
कितनी ही अग्निपरीक्षा से गुजरना पड़ेगा
एक दिन में नहीं पहना जाता
सफलता का ताज
उसके लिए काम करना पड़ता है आज
माना कि बहुत कठिन है डगर,
पर यकीन मानो सफलता जरूर चूमेगी तुम्हारे कदम।

तब खुशियों की होगी सब ओर बौछार
मिलेगा तुमको सबसे बड़ा मान-सम्मान प्यार
जिस दिन होगे तुम सफल
लिखी जायेगी तुम्हारी कहानी
वो भी तुम्हारी जुबानी

जिस दिन खुशियों के मिलेंगे ये रंग
जीत जाओगे तब तुम अपनी जंग।

—संदीप कुमार कटारिया
इंसपायर फैकल्टी
भा.प्रौ.सं. कानपुर

मायाजाल: एक अप्रत्याशित संघर्ष

अर्जुन वर्मा एक साधारण परिवार का खुशमिज़ाज इंसान था। अपने छोटे से कस्बे में, वह अपने परिवार के साथ एक संतोषजनक और शांतिपूर्ण जीवन जी रहा था। उसकी पत्नी– पूजा, बेटी– परी, और बेटा– नक्ष, उसकी दुनिया थे। अर्जुन नई तकनीकों के बारे में सीखने का बेहद शौकीन था। वह खुद को टेक्नोलॉजी का जानकार समझता था और अक्सर दोस्तों को ऑनलाइन सुरक्षित रहने की सलाह दिया करता था।

एक दिन, सोशल मीडिया पर स्क्रॉल करते हुए, अर्जुन ने एक आकर्षक विज्ञापन देखा– ''सपनों की नगरीः एक नई दुनिया का अनुभव करें।'' यह एक वर्चुअल रियलिटी एप्लीकेशन था, जो लोगों को वादा करता था कि वह उन्हें एक असली से भी बेहतर आभासी दुनिया में ले जाएगा। अर्जुन, जो तकनीक का दीवाना था, इस विज्ञापन को देखकर खुद को रोक नहीं सका। उसने उत्साह में एप्लीकेशन डाउनलोड किया और जल्दी से इसे आजमाने लगा। जैसे ही उसने वर्चुअल रियलिटी हेडसेट लगाया, वह ''सपनों की नगरी'' की दुनिया में खो गया। यह एक अद्भुत अनुभव था, हरी–भरी वादियां, रोमांचक एडवेंचर, और एक ऐसा माहौल, जहां वह खुद को असली जिंदगी से कहीं ज्यादा स्वतंत्र महसूस कर रहा था। कुछ दिन तक सब सामान्य रहा। फिर एप्लीकेशन से उसको ''अनुभव को बेहतर बनाने'' के लिए एक प्लगइन इंस्टॉल करने का पॉप–अप संदेश आया। अर्जुन को थोड़ा अजीब लगा, लेकिन उसके अनुभव ने उसे इतना भरोसा दिला दिया था कि उसने बिना सोचे–समझे प्लगइन इंस्टॉल करने लगा। स्क्रीन पर बार–बार अनुमतियों के लिए पॉप–अप आते गए–कॉन्टैक्ट्स, कैमरा, लोकेशन, मैसेजेस, और यहां तक कि कीबोर्ड एक्सेस। अर्जुन ने बिना पढ़े हर आग्रह को अनुमति दे दिया।

एक रात, अर्जुन के फोन पर उसके दोस्तों के कॉल्स और मैसेज आने लगे। उसके सबसे करीबी दोस्त, जो हमेशा उससे खुश रहते थे, गुस्से में थे। उन्होंने कहा कि अर्जुन ने उनके सोशल मीडिया अकाउंट पर आपत्तिजनक टिप्पणियां की हैं और उन्हें गलत मैसेज भेजे हैं। अर्जुन को समझ नहीं आया कि ये सब क्या हो रहा है। जब उसने अपना सोशल मीडिया चेक किया, तो उसने देखा कि उसके अकाउंट से भद्दी पोस्ट्स की गई थीं। दोस्तों और रिश्तेदारों के इनबॉक्स में भद्दे मैसेज भेजे गए थे। उसके दोस्तों और परिवार ने उसे गलत समझ लिया। उसकी इज्जत मिट्टी में मिल गई। अर्जुन की समस्याएं यहीं खत्म नहीं हुईं। एक दिन, वह कुछ सामान खरीदने के लिए ऑनलाइन पेमेंट कर रहा था, लेकिन ट्रांजैक्शन फेल हो गया। फिर, उसने देखा कि उसके बैंक अकाउंट से कई अनजान ट्रांजैक्शन्स हो चुके थे। उसकी जिंदगी भर की बचत खत्म हो चुकी थी। वह घबरा गया और बैंक की ब्रांच में पहुंचा। बैंक अधिकारियों ने जांच के बाद पूछा, ''क्या आपने कोई संदिग्ध एप्लीकेशन इस्तेमाल किया है और किसी अनजान लिंक पर क्लिक किया है?" अर्जुन को याद आया कि उसने ''सपनों की नगरी'' एप्लीकेशन के साथ प्लगइन इंस्टॉल किया था। अर्जुन का दिमाग घूम गया। उसने ''सपनों की नगरी'' एप्लीकेशन के बारे में बताया। अधिकारियों ने कहा, ''यह एप्लीकेशन आपकी निजी जानकारी जैसे पासवर्ड, बैंक डिटेल्स, और निजी डेटा चुरा सकता है। जिसके जरिए आपका अकाउंट खाली किया गया है। अब आपको तुरंत साइबर पुलिस में रिपोर्ट दर्ज करानी चाहिए।'' यह सुनकर अर्जुन को समझ आया कि उसने एक बहुत बड़ी गलती कर दी है।

अर्जुन के सोशल मीडिया अकाउंट से की गयी आपत्तिजनक टिप्पणियां और भद्दे मैसेज के कारण दोस्त, रिश्तेदार, और समाज ने उसे गलत समझ लिया। उसके जिंदगी भर की बचत खत्म हो जाने से, उसकी आर्थिक स्थिति खराब हो गई। यहां तक कि पूजा भी परेशान थी और नक्ष तथा परी अपने पिता को ऐसे हालात में देखकर सहम गए थे। अर्जुन ने खुद को दोष देना शुरू कर दिया। उसकी रातों की नींद उड़ गई। उसने खुद को अपने परिवार और समाज के सामने एक असफल इंसान मान लिया। अर्जुन की जिंदगी बिखर चुकी थी। एक रात, निराशा के अंधेरे में, अर्जुन ने सोचा कि अब जिंदगी जीने लायक नहीं बची। वह आत्महत्या करने के लिए छत पर गया। लेकिन जब उसने छलांग लगाने का इरादा किया, तो उसके दिमाग में अपनी माँ और पिता के संघर्ष की छवि उभर आई। उन्होंने कितनी मेहनत से उसे बड़ा किया था। उसे पूजा और बच्चों के चेहरे याद आए। परी का मासूम चेहरा और नक्ष की हंसी ने उसे रोक लिया। वह रो पड़ा और खुद से कहा, ''मैं हार नहीं मान सकता। मुझे अपनी गलती सुधारनी होगी।''

अर्जुन ने साइबर पुलिस में शिकायत दर्ज कराई और साइबर क्राइम हेल्पलाइन से संपर्क किया। उसने इंटरनेट पर शोध करना शुरू किया और खुद को साइबर सुरक्षा के बारे में शिक्षित किया। उसे समझ आया कि कैसे साइबर अपराधी लोगों को उनकी कमजोरी के जरिए जाल में फंसाते हैं। उसने अपने दोस्तों और परिवार से माफी मांगी और उन्हें अपनी स्थिति समझाई। कई लोगों ने उसकी बात समझी, लेकिन कई अभी भी नाराज़ थे। अर्जुन ने तय किया कि वह इस चुनौती का सामना करेगा और अपना सम्मान वापस पाएगा। अर्जुन ने अपनी कहानी को एक ताकत बनाया। उसने एक जागरूकता अभियान शुरू किया और अपने शहर में लोगों को साइबर सुरक्षा के बारे में सिखाने के लिए वर्कशॉप शुरू की। उसने एक मोबाइल एप्लीकेशन बनाया, ''डिजिटल प्रहरी'', जो लोगों को ऑनलाइन खतरों के बारे में सचेत करता था और उन्हें सुरक्षित रहने के टिप्स देता था। उसने धीरे–धीरे अपनी आर्थिक स्थिति को सुधारने के लिए छोटे फ्रीलांस प्रोजेक्ट्स किए और अपने परिवार के साथ समय बिताना शुरू किया। अर्जुन का एप्लीकेशन और जागरूकता अभियान जल्द ही लोकप्रिय हो गए। वह अपने शहर में एक नायक बन गया। जो लोग कभी उससे नाराज थे, वे अब उसकी तारीफ करने लगे। उसने न केवल अपनी जिंदगी को फिर से संवारा, बल्कि यह भी साबित कर दिया कि इंसान हार की स्थिति से बाहर आकर नए

कीर्तिमान स्थापित कर सकता है।

आज अर्जुन अपने परिवार के साथ एक खुशहाल जीवन जी रहा है। उसने अपनी गलती से सीख लेकर खुद को और अपने आस–पास के लोगों को सुरक्षित रखने का जिम्मा उठाया। उसने साबित कर दिया कि जीवन में कठिनाई चाहे कितनी भी बड़ी क्यों न हो, उम्मीद और मेहनत से उसे पार किया जा सकता है।

–बिकाश साहा
संगणक विज्ञान एवं अभियांत्रिकी
भा.प्रौ.सं. कानपुर

विवेकानंद की कविता

चेहरे पर इतना तेज़ कि, हर कोई चकित रह जाए।
देह में इतनी शक्ति कि, सिंह जैसा 'निडर' कहलाए।
स्वप्न इतने ऊँचे कि, आसमां भी झुक जाए।
ज्ञान का भंडार इतना कि, वो 'महापुरुष' कहलाए।
जीवन में इतना अनुशासन कि, दूसरों के लिए 'प्रेरणा' बन जाए।
मातृभूमि के लिए इतना प्रेम कि, भारत माता का 'लाड़ला' कहलाए।
आत्मविश्वास इतना दृढ़ कि, मन में असीम 'उत्साह' भर जाए।
इच्छा शक्ति इतनी प्रबल कि, उन्हें पढ़ हर कोई 'सफल' हो जाए।
चरित्र इतना पवित्र कि, अमेरिकी लोग भी 'भाई–बहन' हो जाएं।
भाषण इतना बुलंद कि, विदेशी जमीन पर भारत की 'जयकार' हो जाए।
हृदय में इतनी करुणा कि, गरीबों का 'मित्र' बन जाए।
बुद्धि में इतना विवेक कि, वो 'विवेकानंद कहलाए।

–सचिन मीणा
बीटेक, सिविल अभियांत्रिकी
पूर्व सचिव हिंदी साहित्य सभा
भा.प्रौ.सं. कानपुर

ए रेलगाड़ी

ए रेलगाड़ी
तुम दिखी थी सुबह
पटरियों पर कदम रखे
जा रहीं थीं कहीं।

सोचा मैंने उस वक्त कि
नया दिन है तुम्हारे लिए
जाने कहां पहुंच जाओ
जब तक सूरज ढले?

मैं तो वहीं खड़ा रहा
वक्त चला पर मैं नहीं
उस जालिम की भी मजबूरी है

सूरज ढला तो ख्याल आया
कि अब भी मैं स्थिर हूं वहीं
शायद कभी
चल पड़ना भी जरूरी है।।

ए मुसाफिर,
देखा था मैंने भी तुम्हें
उगते सूरज की आड़
में उस पुल पे खड़े

एक ख्याल आया मुझे
रुक कर तुम्हें देखूं ज़रा
सुबह से शाम तक दिन
कैसे काटते हो भला?

मैं तो उस वक्त ना रुकी
मुझे भी पहुंचना था कहीं
यह मेरी मजबूरी है

शाम ढलने पर पहुंची सही
पर मन तो अब भी था वहीं
शायद कभी
रुक जाना भी जरूरी है।।

–मो. सुफयान
बीएस, मैथ एण्ड
साइंटिफिक कंप्यूटिंग
भा.प्रौ.सं. कानपुर

रोशनी का सफर: दिये से एलईडी तक

आज एलईडी बल्ब की दूधिया रोशनी से नहाए हुए हमारे घरों में कभी एक दौर दिया, ढिबरी, लालटेन, लैंप और पेट्रोमैक्स का भी था। दशकों तक हिंदुस्तान के बिजली–विहीन गाँवों और कस्बों में रोशनी करने वाले इन साधनों को आज एलईडी की चमक–दमक में बिलकुल भुला दिया गया है। साथ ही, विस्मृत कर दिया गया है रोशनी के उस सफर को भी, जिसके तमाम पड़ावों से गुज़रते हुए हम आज यहां तक पहुँचे हैं। बात उन दिनों को लौटाने की नहीं है, सभी जानते हैं कि समय का पहिया पीछे नहीं घूमता। बात है अतीत को याद रखने की, उसे सँजोने की और कम–से–कम इतिहासकार का तो यह फर्ज बनता ही है।

ढिबरी, लालटेन और लैंप को रोजमर्रा के जीवन में सीमित संसाधनों में तकनीकी के कुशल प्रयोग और स्थानीय स्तर पर नवाचार (इनोवेशन) के बेहतरीन उदाहरण के तौर पर लिया जा सकता है। रोज़मर्रा के जीवन में उपयोग होने वाली ऐसी प्रौद्योगिकी के बारे में इतिहासकार डेविड आर्नाल्ड ने 'एवरीडे टेक्नोलॉजी' में बहुत सुंदर ढंग से लिखा है। आप ढिबरी को ही लें, जो अक्सर दवाई या तेल की खाली शीशियों से बनाई जाती थी। ऐसी शीशियाँ जिनके ढक्कन टिन के बने होते थे, उनमें छेद कर कपड़े की बाती (लत्ता) लगा दी जाती थी और शीशी में मिट्टी का तेल (केरोसीन) भर दिया जाता था और जलने के लिए तैयार हो जाती थी ढिबरी। दिया और ढिबरी का दौर आज भले ही बीत गया हो लेकिन शाम में जब रोशनी करने का समय (भले एलईडी से ही सही!) होता है, तो भोजपुरी इलाक़े में आज भी उसे 'दियालगानी क बेरा' (दिया जलाने का वक्त) ही कहा जाता है।

लालटेन को जलाना, उसके शीशे को साफ़ करना, बत्ती को चढ़ाना–उतारना, रोशनी को कम या ज्यादा करना एक अलग ही स्तर के कौशल और दक्षता की माँग करता था। लालटेन का शीशा इस कदर नाज़ुक होता था कि जरा भी तेज आँच लगने से या लालटेन के भभकने पर उसके फूटने का खतरा हमेशा बना रहता था। लालटेन की बत्ती अगर ज्यादा ऊपर आ जाती तो शीशे पर कालिख भी जम जाती, जिसे पोंछना भी तलवार की धार पर चलने से कम जोखिम भरा नहीं था। क्योंकि आपने शीशे पर जरा भी जोर आजमाया कि वह चटकने के लिए हमेशा तैयार रहता। और जहाँ तक बात पेट्रोमैक्स को जलाने और उसमें मेंटल लगाने के लिए आवश्यक तकनीकी कौशल की है तो उसे तो फणीश्वर नाथ रेणु अपनी कालजयी कहानी 'पंचलाइट' में अमर ही कर चुके हैं।

सेल लगी टॉर्च का भी अपना एक दौर था, एक–दो सेल वाली छोटी जेबी टॉर्चों से लेकर हाथ भर लम्बी एवरेडी की सिल्वर टॉर्च को भला कैसे भुलाया जा सकता है। टॉर्च में बल्ब या बैटरी बदलना, टॉर्च के शीशे को साफ करने का काम भी बड़ों से लेकर बच्चे तक बखूबी करते थे। यहाँ तक कि खराब हो चुकी बैटरी को फोड़कर उसका इस्तेमाल स्लेट को काला करने या गाय–भैंसों के सींग को काला करने के लिए कर लिया जाता था।

इन्वर्टर के आगमन से पूर्व बैटरी से संचालित लाइट का भी दौर आया। अभी दस–पंद्रह बरस पहले तक पूर्वी उत्तर प्रदेश के घरों में चौकोर बॉक्स में लगी बैटरी और उसके ऊपर रखे स्टैंड में लगे दूधिया बल्ब प्रायः देखने को मिल जाते थे। चार्ज हो सकने वाली इस बैटरी में समय–समय पर पानी बदलने और बैटरी पर जमने वाले कार्बन को साफ करने का काम होता था।

जर्मन इतिहासकार वोल्फगैंग शिवेलबुश ने रोशनी के इसी सफर पर एक जबर्दस्त किताब लिखी थी, 'डिसइनचैंटेड नाइट' शीर्षक से। जिसमें उन्होंने उन्नीसवीं सदी में रोशनी के औद्योगीकरण, कृत्रिम रोशनी के विकास, आधुनिक चेतना के निर्माण में उसकी भूमिका और राजनीतिक प्रतीक के रूप में उसके इस्तेमाल के बारे में लिखा है। आज ज़रूरत है कि हम बीसवीं–इक्कीसवीं सदी के हिंदुस्तान में रोशनी के सफर के बारे में लिखें।

–विकास प्रकाश
(एस.आई.आई.सी.)
भा.प्रौ.सं. कानपुर

अंतस के 26वें अंक के सर्वश्रेष्ठ रचनाकार

जैसा कि आप सभी को विदित है कि अंतस पत्रिका में प्रकाशित तीन सर्वश्रेष्ठ रचनाओं के लेखकों को नगद पुरस्कार से सम्मानित किया जाता है। इसी क्रम में अवगत कराया जाता है कि 26वें अंक की शीर्ष तीन रचनाएं इस प्रकार हैं:

1. **मैं और बच्चे: डॉ. आकांक्षा द्विवेदी, सी3आई हब**
2. **पैसे देकर आज मैंने एक अनुभव कमाया:**
   अभिनव मिश्रा (कनिष्ठ सहायक) भर्ती अनुभाग
3. **वो साँवली सी लड़की:**
   श्री प्रकल्प शर्मा, उप कुलसचिव (विधि)

मोबाइल सुरक्षा

मोबाइल फोन ने हमारी जिंदगी बदल दी है। अब यह हमसे अविभाज्य हो गया है। और इस वजह से इसमें हमारे जीवन का बहुत सारा डेटा समाहित हो गया है। इसलिए हमलावर और दुर्भावनापूर्ण लोग अब मोबाइल फोन के ज़रिए हमें निशाना बना रहे हैं। इसलिए हमें भविष्य में ऐसे खतरों से खुद को बचाने के लिए सावधानी बरतने की जरूरत है। जैसा कि कहा जाता है– पछताने से बेहतर है सुरक्षित रहना। आइए देखें कि कौन–कौन से खतरे हैं और हम उनसे खुद को कैसे सुरक्षित रख सकते हैं।

सेक्सटॉर्शन

आजकल अनजान नंबरों से वीडियो कॉल आते हैं। जैसे ही व्यक्ति कॉल उठाता है, वीडियो कॉल पर लड़की अपने कपड़े उतारने लगती है। मानवीय स्वभाव की कमजोरी के कारण, व्यक्ति कॉल को डिस्कनेक्ट नहीं कर पाता है, बल्कि कॉल जारी रखता है। लड़की व्यक्ति की जानकारी के बिना यह सब रिकॉर्ड कर लेती है और बाद में व्यक्ति को ब्लैकमेल करती है। व्यक्ति को धमकाती है और उससे पैसे ऐंठती है। इसे सेक्सटॉर्शन कहते हैं।

ऐसी सेक्सटॉर्शन कॉल का शिकार होने से खुद को बचाने के लिए, निम्नलिखित सावधानियां बरती जा सकती हैं:

- कैमरा कवर का उपयोग करें। यह एक साधारण स्लाइडिंग कवर है जिसे कैमरे पर लगाया जा सकता है। इसका उपयोग करके आप कैमरे को ब्लॉक या अनब्लॉक कर सकते हैं। यह ऑनलाइन आसानी से उपलब्ध है और बहुत सस्ता है।
- आप ऐसे मोबाइल कवर भी खरीद सकते हैं जिसमें कैमरा कवर हो।
- इसके अलावा एक बहुत ही आसान उपाय यह है कि आप कैमरे को कवर करने के लिए बिंदी का उपयोग कर सकते हैं।
- इसके अलावा आप अपने सोशल मीडिया ऐप सेटिंग में अज्ञात नंबरों से आने वाली कॉल को साइलेंट या ब्लॉक कर सकते हैं।
- अगर आपको ऐसे कॉल आते हैं, तो आपको तुरंत अपनी कॉल लिस्ट और सोशल मीडिया ऐप दोनों में फोन नंबर को ब्लॉक कर देना चाहिए।

मालवेयर

आजकल हम ऐप स्टोर से बहुत सारे ऐप डाउनलोड कर लेते हैं, बिना यह जाने कि वे कितने जोखिम भरे हो सकते हैं। हमलावर इन ऐप स्टोर में ऐसे ऐप डालते हैं, जो कि सामान्य और उपयोगी ऐप होने का दिखावा करते हैं। लेकिन एक बार जब हम उन्हें डाउनलोड कर लेते हैं, तो वे हमारा डेटा चुरा सकते हैं या हमारे डेटा को डिलीट भी कर सकते हैं और हमें नुकसान पहुँचा सकते हैं। ऐसे ऐप को मालवेयर कहते हैं।

खुद को ऐसे मालवेयर का शिकार होने से बचाने के लिए, निम्नलिखित सावधानियां बरती जा सकती हैं:

- ऐप स्टोर से किसी भी ऐप को उपयोगी समझकर डाउनलोड न करें।
- ऐप को किसी विश्वसनीय स्रोत द्वारा विकसित किए जाने की पुष्टि करने के बाद ही डाउनलोड करें।
- आप https://www.csk.gov.in/security-tools.html से M-Kavach 2 ऐप डाउनलोड और इंस्टॉल कर सकते हैं। यह ऐप भारत सरकार के इलेक्ट्रॉनिकी और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय के सहयोग से विकसित किया गया है। इस ऐप का उपयोग करके आप फोन को स्कैन कर सकते हैं और फोन में इंस्टॉल किए गए मालवेयर के बारे में पता कर सकते हैं।

जूस जैकिंग

हम कई बार ऐसी स्थिति में होते हैं, जब हम यात्रा कर रहे होते हैं और हमारे मोबाइल फोन की बैटरी खत्म हो जाती है और हम अपना मोबाइल फोन चार्ज करना चाहते हैं। इसलिए हम अपने मोबाइल फोन को किसी सार्वजनिक चार्जिंग पॉइंट पर चार्ज करते हैं, जहाँ पहले से ही यूएसबी केबल मौजूद होती है और हम बस अपना फोन उस यूएसबी केबल में प्लग कर देते हैं। यह चिंता का विषय हो सकता है। भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) ने ऐसे सार्वजनिक चार्जिंग पॉइंट के इस्तेमाल के खिलाफ चेतावनी दी है। हमलावर ऐसे सार्वजनिक चार्जिंग पॉइंट को बदल सकता है और जब हम अपना फोन चार्जिंग के लिए कनेक्ट करते हैं, तो वह हमारे फोन से डेटा चुरा सकता है। इसे जूस जैकिंग कहते हैं।

खुद को ऐसे जूस जैकिंग अटैक का शिकार होने से बचाने के लिए, निम्नलिखित सावधानियां बरती जा सकती हैं:

- सार्वजनिक चार्जिंग प्वाइंट का इस्तेमाल न करें।
- इलेक्ट्रिक सॉकेट ढूंढ़ें और अपना खुद का चार्जर इस्तेमाल करें।

- फोन सेटिंग में, आप यूएसबी सेटिंग को बदलकर सिर्फ चार्जिंग की अनुमति दे सकते हैं। इस तरह फोन सिर्फ़ यूएसबी के जरिए चार्जिंग की अनुमति देगा और डेटा ट्रांसफर की अनुमति नहीं देगा।
- आप डेटा ब्लॉकर का इस्तेमाल कर सकते हैं। यह एक हार्डवेयर डिवाइस है, जो सिर्फ चार्जिंग की अनुमति देता है और डेटा ट्रांसफर को ब्लॉक करता है।

असुरक्षित वाईफाई हॉटस्पॉट

कई बार हम रेलवे स्टेशन, एयरपोर्ट, कॉफी शॉप आदि में मुफ्त, सार्वजनिक हॉटस्पॉट से कनेक्ट होते हैं, यह सोचकर कि वे सुरक्षित हैं। लेकिन ऐसे मुफ्त, सार्वजनिक वाईफाई हॉटस्पॉट नुकसानदेह हो सकते हैं। वाईफाई हॉटस्पॉट प्रदाता रेलवे स्टेशन, एयरपोर्ट, कॉफी शॉप से होने का दिखावा करके वास्तविक जैसे दिखने वाले हॉटस्पॉट को स्थापित कर सकता है। जहाँ वाईफाई प्रदाता हमारे सभी इंटरनेट ट्रैफिक डेटा को रिकॉर्ड कर सकता है। या जब हम किसी वेबसाइट पर जाते हैं, तो वे मूल वेबसाइट खोलने के बजाय हमें मूल दिखने वाली नकली वेबसाइट पर भेज सकता है और इस तरह हमारे पासवर्ड चुरा सकता है। ऐसे वाईफाई हॉटस्पॉट को असुरक्षित वाईफाई हॉटस्पॉट कहते हैं।

असुरक्षित वाईफाई हॉटस्पॉट के परिणामों से खुद को बचाने के लिए, निम्नलिखित सावधानियां बरती जा सकती हैं:

- केवल विश्वसनीय वाईफाई हॉटस्पॉट से कनेक्ट करें।
- अपने मोबाइल डेटा का उपयोग करें।

असुरक्षित ऑपरेटिंग सिस्टम (ओएस) और ऐप्स

हम फोन का इस्तेमाल करते हैं और ऐप्स डाउनलोड करते हैं, लेकिन हम फोन के ऑपरेटिंग सिस्टम (ओएस) और ऐप्स का ध्यान रखना या उनका रख-रखाव करना भूल जाते हैं। फोन के ऑपरेटिंग सिस्टम (ओएस) और ऐप्स के नियमित रख-रखाव के बिना, वे पुराने हो जाते हैं और विभिन्न साइबर खतरों के प्रति संवेदनशील हो जाते हैं।

असुरक्षित ऑपरेटिंग सिस्टम (ओएस) और ऐप्स का इस्तेमाल करने के दुष्परिणामों से बचने के लिए, निम्नलिखित सावधानियां बरती जा सकती हैं:

- नियमित रूप से ऑपरेटिंग सिस्टम (ओएस) अपडेट इंस्टॉल करें।
- नियमित रूप से ऑपरेटिंग सिस्टम (ओएस) सुरक्षा अपडेट इंस्टॉल करें।
- नियमित रूप से ऐप स्टोर से ऐप अपडेट्स इंस्टॉल करें।

मोबाइल फोन की जीवन अवधि समाप्त (ईओएल)

जैसे हम दवा या कोई खाद्य उत्पाद खरीदते हैं, तो उसके साथ कुछ एक्सपायरी जुड़ी होती है। जिसके बाद हम उसका सेवन नहीं कर सकते। इसी तरह जब हम मोबाइल फोन खरीदते हैं, तो उसके साथ भी कुछ एक्सपायरी जुड़ी होती है। हम आम तौर पर इसके बारे में नहीं जानते, लेकिन इसे मोबाइल फोन की जीवन अवधि समाप्त (ईओएल) कहते हैं। हमारा मोबाइल फोन हमें ऑपरेटिंग सिस्टम अपडेट और सुरक्षा अपडेट तब तक देता रहता है, जब तक कि उसका जीवन अवधि समाप्त (ईओएल) न हो जाए। इसके बाद वह हमें अपडेट देना बंद कर देता है। इन अपडेट के बिना हमारा फोन कई तरह के साइबर खतरों के प्रति संवेदनशील हो जाता है।

जीवन अवधि समाप्त (ईओएल) वाले मोबाइल फोन के इस्तेमाल के दुष्परिणामों से बचने के लिए निम्नलिखित सावधानियां बरती जा सकती हैं:

- ऐसे फोन का इस्तेमाल न करें, जिसका जीवन अवधि समाप्त (ईओएल) हो चुका हो।
- मोबाइल फोन खरीदने से पहले सुनिश्चित करें कि मोबाइल फोन के पास पर्याप्त वर्ष बचे हों उसकी जीवन अवधि समाप्त (ईओएल) होने से पहले।
- मौजूदा फोन के जीवन अवधि समाप्त (ईओएल) होने पर नया फोन खरीदने की आदत डालें।

चोरी

आजकल फोन में हमारी जिंदगी से जुड़ा बहुत सारा संवेदनशील और निजी डेटा होता है। इसलिए फोन चोरी होने से गंभीर नुकसान हो सकता है।

फोन चोरी के दुष्परिणामों से बचने के लिए निम्नलिखित सावधानियां बरती जा सकती हैं:

- लंबा और मजबूत पासवर्ड इस्तेमाल करें जिसका अंदाजा न लगाया जा सके। इसे याद रखें और कहीं भी न लिखें। इससे चोर हमारा फोन अनलॉक नहीं कर पाएगा।
- फोन की सेटिंग में जाकर आप फोन के लिए ऑटो लॉक टाइम सेट कर सकते हैं। ताकि जब फोन इस्तेमाल में न हो तो कुछ समय बाद वह अपने आप लॉक हो जाए।
- नियमित रूप से फोन के डेटा का बैकअप लें। फोन चोरी होने की स्थिति में यह बहुत मददगार होगा।

–सौरभ अग्रवाल
सिविल अभियांत्रिकी
भा.प्रौ.सं. कानपुर

सचेतन कहानी

सन् 1950 के आस–पास 'नयी कहानी' ने नये मूल्यों, नये जीवन–बोध, नये शिल्प और नये अनुभव–संसार की प्रामाणिक अभिव्यक्ति करने का संकल्प लेकर जो कदम बढ़ाया था, वह सन् 1960 तक आते–आते भटक गया और यह कहानी आंदोलन अपनी रूढ़ियों में फँसकर निस्तेज हो गया। इसका एक कारण यह भी था कि 'नयी कहानी' स्वतंत्रता–प्राप्ति के जिस नये वातावरण में नयी चुनौतियों के बीच पनपी थी, वे समाप्त हो गयीं और देश तथा समाज अपनी असफलताओं, कमियों और असमर्थताओं का बुरी तरह शिकार हो गया। स्वतंत्रता–प्राप्ति को लेकर उसके मन में जो सपने थे, वे सातवें दशक के आरंभिक वर्षों में ही चकनाचूर हो गए, पंचवर्षीय योजनाओं और पंचशील सिद्धांतों का अपेक्षित फल नहीं मिला। एक प्रकार से जनता को ऐतिहासिक मोहभंग की पीड़ा झेलनी पड़ी। राजनीतिक उठा–पटक, नये–नये दलों का निर्माण, दलों का टूटना–बिखरना, राजनीतिक आदर्शों–मर्यादाओं का छिन्न–भिन्न होना आदि जो राजनीतिक परिदृश्य सामने आए, उन्होंने साहित्य–जगत को भी प्रभावित किया। इन सभी कारणों से सातवें दशक में हिंदी कहानी में दो–तीन वर्षों के अंतराल पर और कभी–कभी समानांतर ही छोटे–मोटे कहानी–आंदोलन शुरू हुए।

'नयी कहानी' की आत्मपरकता और रूपवादी प्रवृत्ति के विरोध में 'सचेतन कहानी' का आंदोलन डॉ. महीप सिंह ने चलाया। सन् 1964 में उन्होंने 'आधार' पत्रिका का 'सचेतन कहानी विशेषांक' निकाला जिसमें उन्होंने लिखा, ''नयी कहानी के अंदर जो अंतर्विरोध थे, उन्हें स्पष्ट करने के लिए और जीवन के प्रति जो सचेतन दृष्टि हम चाहते थे, जिससे हम यह अनुभव करते थे कि जीवन को मात्र प्रदत्त वस्तु के स्तर पर नहीं जीना चाहिए, बल्कि सक्रियता से भोगना और जीना–आज के मनुष्य की नियति है, उसे अपनी रचनाओं के माध्यम से हम रेखांकित करना चाहते थे। हमारे इस आग्रह को सचेतन कहानी का आधार माना गया और लोगों ने इसे उसी रूप में अपनाया।'' 'सचेतन' शब्द की सार्थकता को स्पष्ट करते हुए वे आगे लिखते हैं, ''सचेतनता एक दृष्टि है जिसमें जीवन जिया भी जाता है और जाना भी जाता है।... सचेतनता जीवन की उस सक्रियता की बोधक है जिसमें मनुष्य को सर्वांग और संपूर्ण रूप में देखने की भावना को दर्शाने की भरसक कोशिश होती है।'

इस प्रकार महीप सिंह के अनुसार 'सचेतन कहानी' सक्रिय भाव–बोध की कहानी है। इसका संबंध जर्मनी के 'एक्टिविस्ट मूवमेंट' से भी है। डॉ. महीप सिंह के अनुसार, सचेतन दृष्टि आधुनिक दृष्टि है और आधुनिकता एक गतिशील स्थिति है जो हमारे सक्रिय जीवन–बोध पर निर्भर है।

सचेतन कहानी आंदोलन में पश्चिम से आयातित जीवन–मूल्यों– निराशा, कुंठा, ऊब, अकेलापन, अनास्था आदि का विरोध किया गया और भारतीय परिवेश के भीतर सहज गति से प्रवाहमान जीवन स्थितियों को स्वीकार कर संघर्षशील चेतना की सक्रियता पर बल दिया गया।

इस तरह 'सचेतन कहानी' की मुख्य विशेषता यह है कि इसने सचेत रूप से जीवन में सक्रियता, आशा, आस्था और संघर्ष का भाव संचारित करने पर बल दिया और प्रतिगामी मनोदशाओं का निषेध किया। उल्लेखनीय यह है कि 'सचेतन कहानी' का आंदोलन 'आधार' और 'संचेतना' पत्रिका के माध्यम से चर्चित हुआ और इन्हीं में प्रकाशित कुछ लेखकों की कहानियों तक ही सीमित रह गया।

सचेतन कहानी को गति देने वाले कथाकारों में महीप सिंह के अलावा मनहर चौहान, कुलदीप बग्गा, नरेंद्र कोहली, वेदराही, मधुकर सिंह, हिमांशु जोशी, श्रवण कुमार, योगेश गुप्त, हेतु भारद्वाज, राम दरश मिश्र, जगदीश चतुर्वेदी आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। महीप सिंह की 'उजाले के उल्लू', 'स्वरघात', जगदीश चतुर्वेदी की 'अधखिले गुलाब', मनहर चौहान की 'बीस सुबहों के बाद' और सुरेंद्र अरोड़ा की 'बर्फ' जैसी कहानियां 'सचेतन कहानी' का स्वरूप स्पष्ट करती हैं।

आधार ग्रंथ :

1. हिंदी कहानी के आंदोलनः उपलब्धियां और सीमाएं, रजनीश कुमार।
2. कहानी : नयी कहानी, नामवर सिंह।
3. एक दुनिया समानांतर, राजेंद्र यादव।
4. 'आधार' का सचेतन कहानी विशेषांक, सं. महीप सिंह।
5. हिंदी कहानी : समीक्षा और संदर्भ, विवेकी राय।
6. हिंदी कहानी की शिल्प विधि का विकास, लक्ष्मीनारायण लाल।

—साभार

डॉ. अमरनाथ

सुधी आलोचक और प्रतिष्ठित भाषाविद् के रूप में ख्याति प्राप्त डॉ. अमरनाथ का जन्म गोरखपुर जनपद (संप्रति महाराजगंज) के रामपुर बुजुर्ग नामक गाँव में सन् 1954 में हुआ था। इनकी प्रमुख रचनाएं– नारी का मुक्ति संघर्ष, आचार्य रामचंद्र शुक्ल और परवर्ती आलोचना, आचार्य रामचंद्र शुक्ल का काव्य चिंतन, समकालीन शोध के आयाम, हिंदी भाषा का समाजशास्त्र, हिंदी आलोचना की पारिभाषिक शब्दावली, हिंदी के अंत में हिंदी आदि हैं।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) आधारित लाइसेंसिंग सुरक्षा, डेटा उपयोग और शोधकर्ताओं व लेखकों की चिंताएं और अवसर

धीरे–धीरे सभी बड़े प्रकाशक माइक्रोसॉफ्ट, गूगल, ओपन एआई, एप्पल और मेटा जैसी तकनीकी कंपनियों के साथ लाइसेंसिंग (अनुज्ञापत्र) अनुबंध की ओर अग्रसर हैं। इस अनुबंध के तहत प्रकाशकों को इन तकनीकी कंपनियों द्वारा उनकी प्रकाशित सामग्री का उपयोग किये जाने पर मुआवजा/रॉयल्टी मिलनी चाहिए। यह कंपनियां, प्रकाशित सामग्री का उपयोग, उनके लार्ज लैङ्ग्वेज मॉडल (एलएलएम) या अन्य जेनरेटिव एआई (कृत्रिम बुद्धिमत्ता) मॉडलों को प्रशिक्षित करने के लिए करती हैं। उच्च गुणवत्ता की सूचना–सामग्री वाले शैक्षणिक शोधपत्र इन एलएलएम के लिए महत्वपूर्ण होते हैं। (एस2ओआरसी डेटा सेट) जिसमें करीब 81.1 मिलियन शैक्षणिक शोधपत्र शामिल हैं, इसकी सह–निर्माता लूसी लू वांग कहती हैं, ''इन मॉडलों को विज्ञान–संबंधित विषयों पर तर्क करने की बेहतर क्षमता प्रदान करने के लिए यह आवश्यक है कि इनको वैज्ञानिक जानकारी के बड़े भंडार पर प्रशिक्षित किया जाए।'' अभी जुलाई 2024 में ही एक प्रकाशक टेलर एंड फ्रांसिस ने माइक्रोसॉफ्ट के साथ अपने प्रकाशन में लेखकों के शोधकार्यों को बेचने का अनुबंध किया है, साथ ही राउटलेग, वाइली, सेज, कैंब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस और ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस भी इसी दिशा में अग्रसर हैं।

इस संबंध में प्रकाशन कंपनियों का तर्क है कि ये एआई फर्में पहले से ही उनके डेटा व सामग्री को बिना उनकी सहमति के उपयोग कर रही हैं इसलिए इस कार्य को वैध रूप देने के लिए लाइसेंसिंग अनुबंध ही एक मात्र विकल्प हैं। प्रकाशन कंपनी सेज के प्रवक्ता के अनुसार, ''हम मानते हैं कि इन फर्मों द्वारा हमारी सामग्री के उपयोग के लिए एक स्पष्ट अनुबंध का मार्ग ही उचित है। जिससे कि लेखकों, अधिकार धारकों (कॉपीराइट होल्डर्स) व संस्थाओं को इस एवज में उचित मुआवज़ा मिल सके और उनके अधिकारों की रक्षा हो सके।'' इन्फोर्मा जो टेलर एंड फ्रांसिस और राउटलेग प्रकाशन कंपनियों की मूल कंपनी है, ने हाल ही में एआई सौदों से 75 मिलियन अर्जित करने का खुलासा किया है, और प्रमुख कंपनी वाइली ने घोषणा की है कि वह "आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस से संबंधित अधिकारों के सौदों से 44 मिलियन डालर कमाएगी। कंपनी ने यह भी स्पष्ट किया है कि लेखक को इन सौदों में शामिल होने से बाहर जाने का कोई विकल्प नहीं दिया जाएगा।" इसका मतलब यह है कि लेखक को अपनी सामग्री व डेटा के एआई उपयोग के संबंध में किसी प्रकार की स्वतंत्रता नहीं मिलेगी, जब तक कि उनकी सामग्री से संबंधित कोई अलग से समझौता न किया गया हो जो कुछ विशेष शर्तों पर आधारित हो। द इंडिपेंडेंट पब्लिशर्स गिल्ड का शरद सम्मेलन हाल ही में 17 सितंबर, 2024 को लंदन में आयोजित हुआ। एआई और लाइसेंसिंग इस सम्मेलन में सबसे चर्चित विषय रहे।

एआई कंपनियों द्वारा शोध सामग्री का संभावित उपयोग

लीटर रिपोर्ट्स में प्रकाशित एक लेख के अनुसार, ''कैंब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस (सीयूपी) अब लेखकों से पूछ रही है कि क्या वे अपनी प्रकाशित सामग्री को एलएलएम के लिए लाइसेंस करना चाहते हैं।'',

सीयूपी ने एआई डेवलपर्स द्वारा शोध सामग्री के संभावित उपयोग पर चर्चा की है जिसके अनुसार यदि आपका कार्य जेनरेटिव एआई अनुबंध का हिस्सा है, तो इसका उपयोग निम्नलिखित के लिए किया जा सकता है:

- उन मूलभूत मॉडलों को प्रशिक्षित करना और परीक्षण करना जिनका उपयोग व्यक्तिगत सहायक (पर्सनल असिस्टेंट) और चैटबॉट उपकरण या खोजक्षमता सारांश (डिसकवरेबिलिटी समरीज) बनाने के लिए किया जाता है।
- इन शोध सामग्रियों को स्थायी तौर पर उपयोग की जाने वाली प्राधिकृत सामग्री के भंडार के एक हिस्से के रूप में देखा जाता है। ये एआई उपकरणों द्वारा प्रदान की गई जानकारी की सटीकता की जांच और सत्यापन के लिए उपयोगी हैं।

लेखकों को इस लाइसेंसिंग प्रणाली के द्वारा प्राप्त होने वाले लाभ

- प्रकाशकों और एआई फर्मों के बीच पारदर्शी लाइसेंसिंग अनुबंध (ट्रासपेरेंट लाइसेंसिंग एग्रीमेंट) लेखकों के अधिकारों का सम्मान करते हैं और उचित मुआवजे की सुनिश्चितता प्रदान करते हैं।
- इससे ऐसे उपकरणों की गुणवत्ता और सटीकता मे सुधार हो सकता है, जिनका उपयोग रोजमर्रा की जिंदगी में बढ़ता जा रहा है। यदि एआई उपकरणों द्वारा लेखकों व शोधकर्ताओं को उचित श्रेय दिया जाए तो उनकी शोधसामग्री को अधिक दृश्यता (विजिबिलिटी) और प्रभाव प्राप्त हो सकता है। जो

अंततः उनके कार्य की पहचान और मूल्य को बढ़ाता है।

लेखकों की चिंताएं

इन सभी अनुबंधों में लेखकों/शोधकर्ताओं के अधिकारों को नजरअंदाज किया गया है, जिससे लेखकों के मध्य यह विषय चिंताजनक है कि उनके शोधकार्यों का बिना किसी सूचना के और बिना उचित मुआवजा दिए एलएलएम के प्रशिक्षण के लिए उपयोग किया जा रहा है। सोसाइटी ऑफ ऑथर्स (एस. ओ. ए.) जिसमें करीब 12,000 सदस्य हैं, ने तकनीकी कंपनियों को पत्र लिखा है, जिसमें माइक्रोसॉफ्ट, गूगल, ओपनएआई, एप्पल और मेटा जैसी दिग्गज कंपनियां शामिल हैं। इसमें कहा गया है कि वे इन तकनीकी कंपनियों को अपने कार्यों को कृत्रिम बुद्धिमत्ता सिस्टम के विकास में उपयोग करने की अनुमति नहीं देते हैं।

एस. ओ. ए. नीति दल (अगस्त 2024) में जारी पत्र में कहा गया है:

''हमारे सदस्यों ने हमें निर्देशित किया है कि हम आपको स्पष्ट रूप से सूचित करें कि वे किसी भी प्रकार के एलएलएम या अन्य जेनरेटिव एआई मॉडलों के प्रशिक्षण, विकास, या संचालन में उनके कॉपीराइट–संरक्षित कार्यों के उपयोग की अनुमति नहीं देते हैं, जब तक कि उन्होंने इसके लिए विशेष रूप से लाइसेंसिंग अनुबंध को स्वीकार नहीं किया हो।'' यह चेतावनी देते हैं कि "इससे लेखकों की आजीविका को गंभीर नुकसान पहुँचता है और प्रोफेशन के भविष्य को भी खतरे में डालता है, जो अंततः हमारे रचनात्मक उद्योगों और सांस्कृतिक संपत्ति के लिए भी खतरा है।"

द क्रिएटिव राइट्स अलायंस (अगस्त 2024), जो 5,00,000 से अधिक रचनाकारों का प्रतिनिधित्व करती है, ने भी तकनीकी कंपनियों को कुछ इसी तरह का पत्र लिखा है। कई और मामले हैं जो इसी पक्ष में हैं कि तकनीकी फर्मों को कॉपीराइट–प्रोटेक्टेड शोधकार्यों का उपयोग बिना अनुमति के या मुआवजा दिए बिना नहीं करना चाहिए। साथ ही अधिकार धारकों के साथ पारदर्शिता बनाये रखने के लिए इन फर्मों को एक स्पष्ट लाइसेंसिंग की मांग करनी चाहिए। लेखकों ने टेलर एंड फ्रांसिस जैसे प्रकाशकों पर भी नाराज़गी जताई है जो माइक्रोसॉफ्ट के साथ लेखकों के शोध को 10 मिलियन डालर में बेचने का अनुबंध कर रहे हैं। जबकि सेज प्रकाशक ने पुष्टि की है कि वह किसी भी लाइसेंसिंग आय पर लेखकों, संपादकों, और संस्थाओं को अनुबंध के अनुसार रॉयल्टी का भुगतान करेगा।

कैंब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस (सीयूपी) के साथ अपने शोध सामग्री प्रकाशित करने वाले लेखक अधिक संतुष्ट हैं क्योंकि कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस (सीयूपी) सावधानीपूर्वक विचार कर रहा है कि उनकी सामग्री को जेनरेटिव एआई फर्मों को कैसे लाइसेंस दिया जाए और लेखकों के उचित निर्णय लेने में मार्गदर्शन के लिए उन्होंने सिद्धांतों का एक सेट (सेट ऑफ गाइडिंग प्रिन्सिपल) बनाया है।

इनमें शामिल हैं:

- लेखकों को उनके शोधकार्यों के लिए श्रेय देना।
- शोध सामग्री (कंटेंट) के लिए औपचारिक लाइसेंसिंग अनुबंधों का निर्माण करना।
- अधिकार धारकों से अनुमति प्राप्त करना।
- शोध सामग्री के उपयोग के लिए उचित मुआवजा प्राप्त करना।

सीयूपी का ''ऑप्ट–इन'' दृष्टिकोण सभी लेखकों और अधिकार–धारकों की सहमति प्राप्त करने पर केंद्रित है ताकि उनके कंटेंट को जेनरेटिव एआई तकनीकों के प्रदाताओं को लाइसेंस देने से पहले उनकी सहमति प्राप्त हो सके। सेज प्रकाशक ने भी बुकसेलर न्यूज़ में यह पुष्टि की है कि वह भी लेखकों व संपादकों के साथ किये गए अपने अनुबंधों के अनुसार किसी भी लाइसेंसिंग आय पर उनको रॉयल्टी का भुगतान करेगा।

कुल मिलाकर, जेनरेटिव एआई के संबंध में प्रकाशन का जो परिदृश्य विकसित हो रहा है वो लेखकों और प्रकाशकों के लिए अवसर और चुनौतियां दोनों प्रस्तुत करता है। यह माइक्रोसॉफ्ट, गूगल, और ओपन ए आई जैसी तकनीकी कंपनियों के साथ अकादमिक सामग्री की लाइसेंसिंग, लेखकों के डेटा और सामग्री के मुद्रीकरण और दृश्यता को बढ़ाने की संभावना रखता है। हालाँकि, लेखकों की इन अधिकारों के संबंध में चिंताओं को अनदेखा नहीं किया जा सकता है। कई लेखक मौजूदा चलन से नाराज़ हैं, वे महसूस करते हैं कि शोधकार्यों में किये गए उनके योगदान को उचित श्रेय व रॉयल्टी दिए बिना उनका शोषण हो रहा है।

सोसाइटी ऑफ ऑथर्स और क्रिएटिव राइट्स अलायंस जैसे संगठन लेखकों के अधिकारों का सम्मान करने और उचित मुआवजा सुनिश्चित करने के लिए पारदर्शी लाइसेंसिंग अनुबंधों की वकालत कर रहे हैं। इस बीच, कैंब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस जैसे प्रकाशक ''ऑप्ट–इन'' दृष्टिकोण अपना रहे हैं, लेखक की सहमति को प्राथमिकता देते हुए वे नीतिपरक लाइसेंसिंग के लिए सिद्धांत स्थापित कर रहे हैं।

जिस तरह से एआई और कॉपीराइट पर चर्चाएं और विकसित हो रही हैं, लेखकों, प्रकाशकों और तकनीकी कंपनियों के लिए यह आवश्यक हो जाता है कि एक ऐसा ढाँचा तैयार करें जो लेखकों के अधिकारों और प्रतिष्ठा की रक्षा करे। कृत्रिम बुद्धिमत्ता के इस युग में शोध को अधिक सुलभ बनाने में एआई के लाभ और लेखकों के शोध कार्यों का सम्मान करने की आवश्यकता के बीच संतुलन बनाना प्रकाशन कंपनियों के भविष्य के लिए अत्यंत आवश्यक है।

–रंगोली अवस्थी
सहायक पुस्तकालय सूचना अधिकारी
भा.प्रौ.सं. कानपुर

विरासत

स्मृति

सन् 1908 ई. की बात है। दिसंबर का आखरी या जनवरी का प्रारंभ होगा। चिल्ला जाड़ा पड़ रहा था। दो–चार दिन पूर्व कुछ बूँदा–बाँदी हो गई थी, इसलिए शीत की भयंकरता और भी बढ़ गई थी। सायंकाल के साढ़े तीन या चार बजे होंगे। कई साथियों के साथ मैं झरबेरी के बेर तोड़–तोड़कर खा रहा था कि गाँव के पास से एक आदमी ने जोर से पुकारा कि तुम्हारे भाई बुला रहे हैं, शीघ्र ही घर लौट जाओ। मैं घर को चलने लगा। साथ में छोटा भाई भी था। भाई साहब की मार का डर था इसलिए सहमा हुआ चला जाता था। समझ में नहीं आता था कि कौन–सा कसूर बन पड़ा। डरते–डरते घर में घुसा। आशंका थी कि बेर खाने के अपराध में ही तो पेशी न हो। पर आँगन में भाई साहब को पत्र लिखते पाया। अब पिटने का भय दूर हुआ। हमें देखकर भाई साहब ने कहा– ''इन पत्रों को ले जाकर मक्खनपुर डाकखाने में डाल आओ। तेजी से जाना, जिससे शाम की डाक में चिट्ठियाँ निकल जाएँ। ये बड़ी ज़रूरी हैं।''

जाड़े के दिन थे ही, तिस पर हवा का प्रकोप से कँप–कँपी लग रही थी। हवा मज्जा तक ठिठुरा रही थी, इसलिए हमने कानों को धोती से बाँधा। माँ ने भुँजाने के लिए थोड़े चने एक धोती में बाँध दिए। हम दोनों भाई अपना–अपना डंडा लेकर घर से निकल पड़े। उस समय उस बबूल के डंडे से जितना मोह था, उतना इस उमर में रायफल से नहीं। मेरा डंडा अनेक साँपों के लिए नारायण–वाहन हो चुका था। मक्खनपुर के स्कूल और गाँव के बीच पड़ने वाले आम के पेड़ों से प्रतिवर्ष उससे आम झुरे जाते थे। इस कारण वह मूक डंडा सजीव–सा प्रतीत होता था। प्रसन्नवदन हम दोनों मक्खनपुर की ओर तेजी से बढ़ने लगे। चिट्ठियों को मैंने टोपी में रख लिया, क्योंकि कुर्ते में जेबें न थीं।

हम दोनों उछलते–कूदते, एक ही सांस में गांव से चार फर्लांग दूर उस कुएँ के पास आ गए जिसमें एक अति भयंकर काला साँप पड़ा हुआ था। कुआँ कच्चा था, और चौबीस हाथ गहरा था। उसमें पानी न था। उसमें न जाने साँप कैसे गिर गया था? कारण कुछ भी हो, हमारा उसके कुएँ में होने का ज्ञान केवल दो महीने का था। बच्चे नटखट होते ही हैं। मक्खनपुर पढ़ने जाने वाली हमारी टोली पूरी बानर टोली थी। एक दिन हम लोग स्कूल से लौट रहे थे कि हमको कुएँ में उझकने की सूझी। सबसे पहले उझकने वाला मैं ही था। कुएँ में झाँककर एक ढेला फेंका कि उसकी आवाज कैसी होती है। उसके सुनने के बाद अपनी बोली की प्रतिध्वनि सुनने की इच्छा थी, पर कुएँ में ज्योंही ढेला गिरा, त्योंही एक फुसकार सुनाई पड़ी। कुएँ के किनारे खड़े हुए हम सब बालक पहले तो उस फुसकार से ऐसे चकित हो गए जैसे किलोलें करता हुआ मृगसमूह अति समीप के कुत्ते की भौंक से चकित हो जाता है। उसके उपरांत सभी ने उछल–उछलकर एक–एक

ढेला फेंका और कुएँ से आने वाली क्रोधपूर्ण फुसकार पर कहकहे लगाए।

गाँव से मक्खनपुर जाते और मक्खनपुर से लौटते समय प्रायः प्रतिदिन ही कुएँ में ढेले डाले जाते थे। मैं तो आगे भागकर आ जाता था और टोपी को एक हाथ से पकड़कर दूसरे हाथ से ढेला फेंकता था। यह रोजाना की आदत–सी हो गई थी। साँप से फुसकार करवा लेना मैं उस समय बड़ा काम समझता था। इसलिए जैसे ही हम दोनों उस कुएँ की ओर से निकले, कुएँ में ढेला फेंककर फुसकार सुनने की प्रवृत्ति जागृत हो गई। मैं कुएँ की ओर बढ़ा। छोटा भाई मेरे पीछे ऐसे हो लिया जैसे बड़े मृगशावक के पीछे छोटा मृगशावक हो लेता है। कुएँ के किनारे से एक ढेला उठाया और उछलकर एक हाथ से टोपी उतारते हुए साँप पर ढेला गिरा दिया, पर मुझ पर तो बिजली–सी गिर पड़ी। साँप ने फुसकार मारी या नहीं, ढेला उसे लगा या नहीं यह बात अब तक स्मरण नहीं। टोपी के हाथ में लेते ही तीनों चिट्ठियाँ चक्कर काटती हुई कुएँ में गिर रही थीं। अकस्मात् जैसे घास चरते हुए हिरन की आत्मा गोली से हत होने पर निकल जाती है और वह तड़पता रह जाता है, उसी भाँति वे चिट्ठियाँ क्या टोपी से निकल गई। मेरी तो जान निकल गई। उनके गिरते ही मैंने उनको पकड़ने के लिए एक झपट्टा भी मारा; ठीक वैसे जैसे घायल शेर शिकारी को पेड़ पर चढ़ते देख उस पर हमला करता है। पर वे तो पहुँच से बाहर हो चुकी थीं। उनको पकड़ने की घबराहट में मैं स्वयं झटके के कारण कुँए में गिर गया होता।

कुँए की पाट पर बैठे हम रो रहे थे–छोटा भाई ढाढ़ें मारकर और मैं चुपचाप आँखें डबडबाकर। पतीली में उफ़ान आने से ढकना ऊपर उठ जाता है और पानी बाहर टपक जाता है। निराशा, पिटने के भय और उद्वेग से रोने का उफान आता था। पलकों के ढकने भीतरी भावों को रोकने का प्रयत्न करते थे, पर कपोलों पर आँसू ढुलक ही जाते थे। माँ की गोद की याद आती थी। जी चाहता था कि माँ आकर छाती से लगा ले और लाड़–प्यार करके कह दे कि कोई बात नहीं, चिट्ठियाँ फिर लिख ली जाएँगी। तबीयत करती थी कि कुँए में बहुत–सी मिट्टी डाल दी जाए और घर जाकर कह दिया जाए कि चिट्ठी डाल आए, पर उस समय मैं झूठ बोलना जानता ही न था। घर लौटकर सच बोलने पर रुई की तरह धुनाई होती। मार के खयाल से शरीर ही नही

मन भी काँप जाता था। सच बोलकर पिटने के भावी भय और झूठ बोलकर चिट्ठियों के न पहुँचने की ज़िम्मेदारी के बोझ से दबा मैं बैठा सिसक रहा था। इसी सोच–विचार में पंद्रह मिनट होने को आए। देर हो रही थी, और उधर दिन का बुढ़ापा बढ़ता जाता था। कहीं भाग जाने को तबीयत करती थी, पर पिटने का भय और जिम्मेदारी की दुधारी तलवार कलेजे पर फिर रही थी।

दृढ़ संकल्प से दुविधा की बेड़ियाँ कट जाती हैं। मेरी दुविधा भी दूर हो गई। कुएँ में घुसकर चिट्ठियों को निकालने का निश्चय किया। कितना भयंकर निर्णय था! पर जो मरने को तैयार हो, उसे क्या? मूर्खता अथवा बुद्धिमत्ता से किसी काम को करने के लिए कोई मौत का मार्ग ही स्वीकार कर ले, और वह भी जानबूझकर, तो फिर वह अकेला संसार से भिड़ने को तैयार हो जाता है। और फल? उसे फल की क्या चिंता। फल तो किसी दूसरी शक्ति पर निर्भर है। उस समय चिट्ठियाँ निकालने के लिए मैं विषधर से भिड़ने को तैयार हो गया। पासा फेंक दिया था। मौत का आलिंगन हो अथवा साँप से बचकर दूसरा जन्म–इसकी कोई चिंता न थी। पर विश्वास यह था कि डंडे से साँप को पहले मार दूँगा, तब फिर चिट्ठियाँ उठा लूँगा। बस इसी दृढ़ विश्वास के बूते पर मैंने कुएँ में घुसने की ठानी।

छोटा भाई रोता था और उसके रोने का तात्पर्य था कि मेरी मौत मुझे नीचे बुला रही है, यद्यपि वह शब्दों से न कहता था। वास्तव में मौत सजीव और नग्न रूप में कुएँ में बैठी थी, पर उस नग्न मौत से मुठभेड़ के लिए मुझे भी नग्न होना पड़ा। छोटा भाई भी नंगा हुआ। एक धोती मेरी, एक छोटे भाई की, एक चनेवाली, दो कानों से बँधी हुई धोतियाँ–पाँच धोतियाँ और कुछ रस्सी मिलाकर कुएँ की गहराई के लिए काफी हुईं। हम लोगों ने धोतियाँ एक–दूसरी से बाँधी और खूब खींच–खींचकर आज़मा लिया कि गाँठें कड़ी हैं या नहीं। अपनी ओर से कोई धोखे का काम न रखा। धोती के एक सिरे पर डंडा बाँधा और उसे कुएँ में डाल दिया। दूसरे सिरे को डेंग (वह लकड़ी जिस पर चरस–पुर टिकता है) के चारों ओर एक चक्कर देकर और एक गाँठ लगाकर छोटे भाई को दे दिया। छोटा भाई केवल आठ वर्ष का था, इसीलिए धोती को डेंग से कड़ी करके बाँध दिया और तब उसे खूब मज़बूती से पकड़ने के लिए कहा। मैं कुएँ में धोती के सहारे घुसने लगा। छोटा भाई रोने लगा। मैंने उसे आश्वासन दिलाया कि मैं कुएँ के नीचे पहुँचते ही साँप को मार दूँगा और मेरा विश्वास भी ऐसा ही था। कारण यह था कि इससे पहले मैंने अनेक साँप मारे थे। इसलिए कुएँ में घुसते समय मुझे साँप का तनिक भी भय न था। उसको मारना मैं बाएँ हाथ का खेल समझता था।

कुएँ के धरातल से जब चार–पाँच गज़ रहा हूँगा, तब ध्यान से नीचे को देखा। अक्ल चकरा गई। साँप फन फैलाए धरातल से एक हाथ ऊपर उठा हुआ लहरा रहा था। पूँछ और पूँछ के समीप का भाग पृथ्वी पर था, आधा अग्र भाग ऊपर उठा हुआ मेरी प्रतीक्षा कर रहा था। नीचे डंडा बँधा था, मेरे उतरने की गति से जो इधर–उधर हिलता था। उसी के कारण शायद मुझे उतरते देख साँप घातक चोट के आसन पर बैठा था। सँपेरा जैसे बीन बजाकर काले साँप को खिलाता है और साँप क्रोधित हो फन फैलाकर खड़ा होता और फुँफकार मारकर चोट करता है, ठीक उसी प्रकार साँप तैयार था। उसका प्रतिद्वंद्वी–मैं–उससे कुछ हाथ ऊपर धोती पकड़े लटक रहा था। धोती डेंग से बँधी होने के कारण कुएँ के बीचों बीच लटक रही थी और मुझे कुएँ के धरातल की परिधि के बीचों–बीच ही उतरना था। इसके माने थे साँप से डेढ़–दो फुट–गज नहीं–की दूरी पर पैर रखना, और इतनी दूरी पर साँप पैर रखते ही चोट करता। स्मरण रहे, कच्चे कुएँ का व्यास बहुत कम होता है। नीचे तो वह डेढ़ गज से अधिक होता ही नहीं। ऐसी दशा में कुएँ में मैं साँप से अधिक–से–अधिक चार फुट की दूरी पर रह सकता था, वह भी उस दशा में जब साँप मुझसे दूर रहने का प्रयत्न करता, पर उतरना तो था कुएँ के बीच में, क्योंकि मेरा साधन बीचों बीच लटक रहा था। ऊपर से लटककर तो साँप नहीं मारा जा सकता था। उतरना तो था ही। थकावट से ऊपर चढ़ भी नहीं सकता था। अब तक अपने प्रतिद्वंद्वी को पीठ दिखाने का निश्चय नहीं किया था। यदि ऐसा करता भी तो कुएँ के धरातल पर उतरे बिना क्या मैं ऊपर चढ़ सकता था धीरे–धीरे उतरने लगा। एक–एक इंच ज्यों–ज्यों मैं नीचे उतरता जाता था, त्यों–त्यों मेरी एकाग्रचित्तता बढ़ती जाती थी। मुझे एक सूझ सूझी। दोनों हाथों से धोती पकड़े हुए मैंने अपने पैर कुएँ की बगल में लगा दिए। दीवार से पैर लगाते ही कुछ मिट्टी नीचे गिरी और साँप ने फूँ करके उस पर मुँह मारा। मेरे पैर भी दीवार से हट गए, और मेरी टाँगें कमर से समकोण बनाती हुई लटकती रहीं, पर इससे साँप से दूरी और कुएँ की परिधि पर उतरने का ढंग मालूम हो गया। तनिक झूलकर मैंने अपने पैर कुएँ की बगल से सटाए, और कुछ धक्के के साथ अपने प्रतिद्वंद्वी के सम्मुख कुएँ की दूसरी ओर डेढ़ गज़ पर–कुएँ के धरातल पर खड़ा हो गया। आँखें चार हुईं। शायद एक–दूसरे को पहचाना। साँप को चक्षुःश्रवा कहते हैं। मैं स्वयं चक्षुःश्रवा हो रहा था। अन्य इंद्रियों ने मानो सहानुभूति से अपनी शक्ति आँखों को दे दी हो। साँप के फन की ओर मेरी आँखें लगी हुई थीं कि वह कब किस ओर को आक्रमण करता है। साँप ने मोहनी–सी डाल दी थी। शायद वह मेरे आक्रमण की प्रतीक्षा में था, पर जिस विचार और आशा को लेकर मैंने कुएँ में घुसने की ठानी थी, वह तो आकाश–कुसुम था। मनुष्य का अनुमान और भावी योजनाएँ कभी–कभी कितनी मिथ्या और उलटी निकलती हैं। मुझे साँप का साक्षात होते ही अपनी योजना और आशा की असंभवता प्रतीत हो

गई। डंडा चलाने के लिए स्थान ही न था। लाठी या डंडा चलाने के लिए काफ़ी स्थान चाहिए जिसमें वे घुमाए जा सकें। साँप को डंडे से दबाया जा सकता था, पर ऐसा करना मानो तोप के मुंह पर खड़ा होना था। यदि फन या उसके समीप का भाग न दबा, तो फिर वह पलटकर ज़रूर काटता, और फन के पास दबाने की कोई संभावना भी होती तो फिर उसके पास पड़ी हुई दो चिट्ठियों को कैसे उठाता? दो चिटियाँ उसके पास उससे सटी हुई पड़ी थीं और एक मेरी ओर थी। मैं तो चिट्ठियाँ लेने ही उतरा था। हम दोनों अपने पैंतरों पर डटे थे। उस आसन पर खड़े–खड़े मुझे चार–पांच मिनट हो गए। दोनों ओर से मोर्चे पड़े हुए थे, पर मेरा मोर्चा कमजोर था। कहीं साँप मुझ पर झपट पड़ता तो मैं यदि बहुत करता तो उसे पकड़कर, कुचलकर मार देता, पर वह तो अचूक तरल विष मेरे शरीर में पहुँचा ही देता और अपने साथ–साथ मुझे भी ले जाता। अब तक साँप ने वार न किया था, इसलिए मैंने भी उसे डंडे से दबाने का खयाल छोड़ दिया। ऐसा करना उचित भी न था। अब प्रश्न था कि चिट्ठियाँ कैसे उठाई जाएँ। बस, एक सूरत थी। डंडे से साँप की ओर से चिट्ठियों को सरकाया जाए। यदि साँप टूट पड़ा, तो कोई चारा न था। कुर्ता था, और कोई कपड़ा न था जिससे साँप के मुँह की ओर करके उसके फन को पकड़ लूँ। मारना या बिलकुल छेड़खानी न करना– ये दो मार्ग थे। सो पहला मेरी शक्ति के बाहर था। बाध्य होकर दूसरे मार्ग का अवलंबन करना पड़ा।

डंडे को लेकर ज्यों ही मैंने साँप की दाईं ओर पड़ी चिट्ठी की ओर उसे बढ़ाया कि साँप का फन पीछे की ओर हुआ। धीरे–धीरे डंडा चिट्ठी की ओर बढ़ा और ज्योंही चिट्ठी के पास पहुँचा कि फुँकार के साथ काली बिजली तड़पी और डंडे पर गिरी। हृदय में कंप हुआ, और हाथों ने आज्ञा न मानी। डंडा छूट पड़ा। मैं तो न मालूम कितना ऊपर उछल गया। जान–बूझकर नहीं, यों ही बिदककर। उछलकर जो खड़ा हुआ, तो देखा डंडे के सिर पर तीन–चार स्थानों पर पीव–सा कुछ लगा हुआ है। वह विष था। साँप ने मानो अपनी शक्ति का सर्टिफिकेट सामने रख दिया था, पर मैं तो उसकी योग्यता का पहले ही से कायल था। उस सर्टिफिकेट की जरूरत न थी। साँप ने लगातार फूँ–फूँ करके डंडे पर तीन–चार चोटें कीं। वह डंडा पहली बार इस भाँति अपमानित हुआ था, या शायद वह साँप का उपहास कर रहा था।

उधर ऊपर फूँ–फूँ और मेरे उछलने और फिर वहीं धमाके से खड़े होने से छोटे भाई ने समझा कि मेरा कार्य समाप्त हो गया और बंधुत्व का नाता फूँ–फूँ और धमाके में टूट गया। उसने खयाल किया कि साँप के काटने से मैं गिर गया। मेरे कष्ट और विरह के खयाल से उसके कोमल हृदय को धक्का लगा। भ्रातृ–स्नेह के ताने–बाने को चोट लगी। उसकी चीख निकल गई।

छोटे भाई की आशंका बेजा न थी, पर उस फूँ और धमाके से मेरा साहस कुछ बढ़ गया। दुबारा फिर उसी प्रकार लिफ़ाफ़े को उठाने की चेष्टा की। अबकी बार साँप ने वार भी किया और डंडे से चिपट भी गया। डंडा हाथ से छूटा तो नहीं पर झिझक, सहम अथवा आतंक से अपनी ओर को खिंच गया और गुंजल्क मारता हुआ साँप का पिछला भाग मेरे हाथों से छू गया। उफ़, कितना ठंडा था! डंडे को मैंने एक ओर पटक दिया। यदि कहीं उसका दूसरा वार पहले होता, तो उछलकर मैं साँप पर गिरता और न बचता, लेकिन जब जीवन होता है, तब हज़ारों ढंग बचने के निकल आते हैं। वह दैवीय कृपा थी। डंडे के मेरी ओर खिंच आने से मेरे और साँप के आसन बदल गए। मैंने तुरंत ही लिफ़ाफ़े और पोस्टकार्ड चुन लिए। चिट्ठियों को धोती के छोर में बाँध दिया, और छोटे भाई ने उन्हें ऊपर खींच लिया।

डंडे को साँप के पास से उठाने में भी बड़ी कठिनाई पड़ी। साँप उससे खुलकर उस पर धरना देकर बैठा था। जीत तो मेरी हो चुकी थी, पर अपना निशान गँवा चुका था। आगे हाथ बढ़ाता तो साँप हाथ पर वार करता, इसलिए कुएँ की बगल से एक मुट्ठी मिट्टी लेकर मैंने उसकी दाईं ओर फेंकी कि वह उस पर झपटा, और मैंने दूसरे हाथ से उसकी बाईं ओर से डंडा खींच लिया, पर बात–की–बात में उसने दूसरी ओर भी वार किया। यदि बीच में डंडा न होता, तो पैर में उसके दाँत गड़ गए होते।

अब ऊपर चढ़ना कोई कठिन काम न था। केवल हाथों के सहारे, पैरों को बिना कहीं लगाए हुए 36 फुट ऊपर चढ़ना मुझसे अब नहीं हो सकता। 15–20 फुट बिना पैरों के सहारे, केवल हाथों के बल, चढ़ने की हिम्मत रखता हूँ, कम ही, अधिक नहीं। पर उस ग्यारह वर्ष की अवस्था में मैं 36 फुट चढ़ा। बाहें भर गई थीं। छाती फूल गई थी। धौंकनी चल रही थी। पर एक–एक इंच सरक–सरककर अपनी भुजाओं के बल मैं ऊपर चढ़ आया। यदि हाथ छूट जाते तो क्या होता इसका अनुमान करना कठिन है। ऊपर आकर, बेहाल होकर, थोड़ी देर तक पड़ा रहा। देह को झार–झूरकर धोती–कुर्ता पहना। फिर किशनपुर के लडके को, जिसने ऊपर चढ़ने की चेष्टा को देखा था, ताकीद करके कि वह कुएँ वाली घटना किसी से न कहे, हम लोग आगे बढ़े।

सन 1915 मेंट्रीक्युलेशन पास करने के उपरांत यह घटना मैंने माँ को सुनाई। सजल नेत्रों से माँ ने मुझे अपनी गोद में ऐसे बिठा लिया जैसे चिड़िया अपने बच्चों को डैने के नीचे छिपा लेती है।

कितने अच्छे थे वे दिन! उस समय रायफल न थी, डंडा था और डंडे का शिकार–कम से कम उस साँप का शिकार–रायफल के शिकार से कम रोचक और भयानक न था।

–साभार
श्रीराम शर्मा

श्रीराम शर्मा (23 मार्च 1896 – 7 फरवरी 1967) हिंदी के शिकार–साहित्य और संस्मरण–साहित्य के प्रतिष्ठित रचनाकार थे। कहते हैं कि उनके एक हाथ में कलम रहती थी और दूसरे हाथ में बंदूक। हिंदी–पत्रकारिता के क्षेत्र में उनकी दीर्घकालीन सेवा अविस्मरणीय है। साथ ही भारतीय स्वाधीनता संग्राम में उनकी सहभागिता को भुलाया नहीं जा सकता।

डर

ट्रेन लगभग ढाई बजे के आस–पास सुजानगढ़ पहुँची।

जयपुर से सुजानगढ़ के छह घंटे के सफ़र में मैं काफ़ी बालू और कोयले का सेवन कर चुका था, गरमी हो, और रेगिस्तान में स्टीम एंजिन वाली रेल गाड़ी का सफर हो, तो इंसान का शरीर काफ़ी मात्रा में बालू और कोयले के टुकड़ों को अपना ही लेता है। अप्रैल माह में ही इस बार गरमी काफी पड़ रही थी। सूरज के साथ–साथ भूख भी अपनी चरम सीमा पर थी। मगर क्योंकि मैं पहली बार यहाँ पर आ रहा था इसलिए मेरे उत्साह के आगे गरमी और भूख काफी फीके पड़ रहे थे। वास्तव में राजस्थान का हर गढ़ अपने गौरवशाली इतिहास, लोकोक्तियों, किस्सों और कहानियों से बहुतों को रोमांचित कर देता है, और इन "बहुतों" में मैं भी एक था।

गाड़ी से उतरते समय देखा कि प्लैट्फ़ॉर्म तो है ही नहीं। गाड़ी की सीढ़ियों से सीधे रेत पर ही उतरा। अभी इस "रोमांच" से उभर ही रहा था कि गाड़ी ने सीटी बजाते हुए छुक–छुक करके प्रस्थान कर दिया। रेत पर खड़ा कुछ देर तक मैं गाड़ी को हसरत भरी निगाहों से देखता रहा, क्योंकि वापस जयपुर जाने वाली गाड़ी अब अगले दिन सवेरे दस बजे ही मिलनी थी। एक हाथ में अपनी गृहस्थी की बड़ी अटैची और दूसरे हाथ में ऑफिस का ब्रीफकेस उठाकर, पत्थर की गिट्टीयों के ऊपर से होता हुआ मैंने रेलवे लाइन पार की। छोटे–मोटे कंकरीले पौधे दिखे कुछ जख्म भी दिए मगर मैंने उनकी परवाह नहीं की।

मेरी कंपनी का वितरक मेन बाज़ार में था। वहाँ पर खड़े इक्के वालों से पूछा तो पता चला कि "पाँच मिनट का पैदल का रास्ता" सोचा पहले भोजन करूँ या काम? ये निर्णय लेने में सिगरेट बड़ी कारगर सिद्ध हुई। गोया सिगरेट खत्म होते–होते भूख मर गयी और मैं दोनों हाथों में अपनी गृहस्थी और ऑफिस उठाकर कंपनी का काम करने के लिए मेन बाजार की तरफ पैदल ही चल पड़ा। कितनी देर चला कह नहीं सकता "मगर पाँच मिनट का पैदल का रास्ता" खत्म होने का नाम ही नहीं ले रहा था। रास्ते में रुक कर जब भी किसी से पूछता तो एक ही जवाब मिलता "बस जी बगल में ही है।'' समझ में नहीं आ रहा था कि यहाँ के लोगों का गणित कमजोर था या भूगोल! कभी गृहस्थी वाली अटैची नीचे रख कर गाली देता और कभी ऑफिस वाला ब्रीफकेस। खिसिया कर सड़क के किनारे खड़ा हो गया, दोनो बक्से नीचे रख दिए और दोनो हाथों को ऐसे झटका मानो किसी से मुक्के बाज़ी दांव में पल भर की सांस मिली हो।

मेरे हाव भाव देखकर सामने के दुकानदार ने पूछा "कहाँ जाना है हुकुम?" मैंने जैसे ही अपने वितरक का नाम बताया तो उसके सामने खड़ा हुआ लड़का उछल कर मेरे सामने आ गया और ''वो ही मेरा वितरक है'' ये कहते हुए मुझसे हाथ मिलाने लगा। हनुमान को

देखकर भगवान राम को कितनी प्रसन्नता हुई होगी, ये मुझे उस दिन सुजानगढ़ के बाजार में ही समझ में आया।

आलू ने, जी हाँ उस लड़के ने अपना यही नाम बताया था, मेरा ऑफिस वाला ब्रीफकेस उठा लिया और मुझे साथ लेकर बड़ी शान से अपनी दुकान की तरफ चल दिया । मैंने भारी वाली अटैची उठा ली और साथ–साथ हो लिया। लड़का चालाक है यह समझ में आ गया था, क्योंकि उसने हल्का वाला ब्रीफकेस उठाया था न कि भारी वाली अटैची! उसकी दुकान वहां से थोड़ी ही दूर पर एक गली के अंदर थी, मगर इतनी ही देर में आलू ने ये बता दिया था कि उसका नाम असल में आलोक है मगर बचपन से ही आलू ज्यादा खाने के कारण उसको लोग प्यार से "आलू" बुलाने लगे थे। वो देखने में भी आलू जैसा ही लगता था ये बात सिर्फ़ समझने की थी, बोलने की नहीं!!

अपनी दुकान, आलोक ऐजेंसीस, पर पहुँचते ही उसने मेरा परिचय सब लोगों से ऐसे कराया जैसे मैं कोई एलीयन था। क्योंकि मैंने अभी हाल में ही नौकरी शुरू की थी इसलिए कुछ ज्यादा ही उत्साहित था, और हर छोटे बड़े शहर पहुँचने की लगातार कोशिश कर रहा था। बाद में मुझको पता चला था कि उन दिनों, कंपनी के प्रतिनिधि छोटे–छोटे शहरों और कस्बों में प्रायः नहीं जाया करते थे, और खासकर सुजानगढ़ जैसे छोटे से शहर में क्यों नहीं आते थे इसका जवाब भी मुझे जल्दी ही मिलने वाला था।

आलू ने अपने सामान बेचने के काउंटर के आगे, एक लकड़ी के स्टूल पर मुझसे बैठने का आग्रह किया। खुद उछल कर काउंटर के दूसरे तरफ जा कर खड़ा हो गया। मैंने बैठते–बैठते दुकान का जायजा लिया। दुकान में सामान बहुत ज्यादा भरा हुआ था! यहां तक कि काउंटर के ऊपर भी एक दो कार्टून रखे हुए थे। दुकान में साबुन, सर्फ, पाउडर और अगरबत्ती की मिली जुली खुशबू हर तरफ व्याप्त

थी। आलू ने गर्व से बताया कि खाने का समान दूसरे गोदाम में रखा जाता है, ताकि उनमें साबुन, सर्फ की महक ना आए क्योंकि ग्राहक ऐसे सामानों को वापस कर देते हैं। मेरी कंपनी क्योंकि खाद्य सामग्री की बिक्री करने वाली कंपनी थी इसलिए इस जानकारी से मुझे काफ़ी संतुष्टि हुई। बैठते ही स्टील की ग्लास में पानी आया और मै गटा–गट पानी पीने लगा, दूसरी ग्लास खत्म होते–होते लगा, पानी काफ़ी खारा था, पता चला दुकान पर पीने का पानी पास ही के हैंडपम्प से आता था। चाय मँगाते समय, आलू ने मुझसे बिस्कुट के लिए भी पूछा, पहली बार शर्मा–शर्मा में मैंने माना कर दिया, पर कमबख़्त ने दुबारा बिस्कुट के बारे में पूछा ही नहीं।

चाय पीने के बाद, मैं अपनी कंपनी के उत्पादों की बिक्री के लिए, आलू के साथ बाज़ार गया। सायं चार बजे के बाद दुकानदार प्रायः कंपनी प्रतिनिधियों को ज्यादा समय नहीं देते हैं क्योंकि उनकी दुकानदारी खराब होती है। शायद किसी कंपनी के आदमी को वो काफ़ी अरसे के बाद देख रहे थे इसलिए मुझे सभी दुकानदारों ने अपना समय और इज्ज़त दोनो ही दी। एक दो लोगों ने तो चाय के साथ बिस्कुट भी खिलाया! और सबसे महत्त्वपूर्ण बात ये कि ज्यादातर दुकानदारों ने मेरी कंपनी के उत्पादों को खूब सराहा और मेरी खूब बिक्री हुई। इतनी बिक्री देखकर आलू काफी खुश था और बात–बात में मेरी प्रशंसा भी करता जा रहा था। बाजार का काम पूरा होते–होते शाम के सात बज गए। वापस आलू की दुकान पर जाकर जब दिन की बिक्री का सारा हिसाब–किताब किया तो आलू ने सहर्ष ही मेरा लक्ष्य पूरा करा दिया। मैं मन ही मन सोच रहा था कि लोगों ने (मेरे प्रतिनिधि बिरादरी के लोगों ने) नाहक ही छोटे शहरों को बदनाम कर रखा था। मेरे देखे, छोटे शहरों में इज्जत भी ज्यादा मिलती है और बिक्री का लक्ष्य भी कम समय में ही पूरा हो जाता है।

आलू ने सलाह दी कि रात का खाना खा लिया जाए। मैंने ये कह कर टाल दिया की सात–आठ बजे कोई खाने का समय होता है! बहरहाल थोड़ी देर की कहासुनी के बाद ये तय हुआ कि खाना रेलवे स्टेशन के पास से खरीदकर मैं होटेल में बैठकर आराम से खा लूँगा। रेलवे स्टेशन के सामने ही ठहरने की जगह थी। चूँकि छोटे शहरों में रात को जल्दी ही सब कुछ बंद हो जाता है, इसलिए आलू मुझे रेलवे स्टेशन पर छोड़ कर (इस बार भारी वाली अटैची उसने उठाई थी) अपने घर चला गया । जब तक मेरा खाना पैक हो रहा था मैं सिगरेट पीते–पीते दुक़ाने बंद होते हुए और सन्नाटा गिरते हुए देखता रहा। जब 'होटेल' के सामने पहुँचा तो जोर का झटका लगा।

मैं "मारवाड़ी धर्मशाला– यहाँ ठहरने का इंतजाम है" के सामने खड़ा था। क्योंकि उस धर्मशाला में ठहरने के लिए कमरे मिलते थे इसलिए सुजानगढ़ के लोग उसको "होटेल" ही बुलाते थे! मैं इससे पहले कभी धर्मशाला में नहीं ठहरा था। मगर सुजानगढ़ में रात में ठहरने का और कोई इंतजाम था नहीं। रेलवे स्टेशन का भी ख़्याल आया, मगर जहां प्लेटफॉर्म तक नहीं था वहाँ यात्री निवास क्या ही होता!

कोई और चारा नहीं था इसलिए मैंने धर्मशाला की ओर बड़ी ही दयनीय दृष्टि से देखा। किसी जमाने में किसी सेठ की हवेली रही होगी। दीवारें हल्के पीले रंग की थीं जैसे कभी–कभी लोगों के चेहरे पीले पड़ जाते हैं। दीवारों पर चित्रकारी की हुई थी। चित्रों के भी रंग फीके पड़ गये थे। एक बड़ा सा बहुत ऊँचा सा दरवाजा था जो कि शायद आख़िरी बार तब ही खुला होगा जब सेठजी चाँदी के हौदे में हाथी पर बैठ कर हवेली में आए होंगे। उसी दरवाजे में बने एक छोटे से, मगर भारी से दरवाजे को खोल कर मैं अंदर घुसा, बड़ा सा दालान पार किया और बरामदे में लाकर अपनी पूरी गृहस्थी रख कर सीधा खड़ा ही हुआ था कि बिजली चली गयी।

मैं अपनी माचिस से तीलियां निकालकर जलाने लगा और जोर की आवाज लगायी "हेलो! कोई है?" थोड़ी घबराहट जरूर रही होगी या शायद गुस्सा, क्योंकि मेरे गले से आवाज कुछ ज्यादा ही जोर से निकली जिसका नतीजा ये हुआ कि काम तुरंत ही बन गया। "आया हुकुम", आवाज पास से ही आयी थी और उसके साथ ही उस आवाज के मालिक को मैंने एक हाथ में लालटेन और दूसरे हाथ में बाल्टी लेकर अपनी तरफ आते देखा। उसका नाम पूछने से पहले मैंने उससे ये पूछा कि "बिजली कब तक आएगी?'' उसने मुस्कुराते हुए मुझसे ही प्रश्न पूछ लिया "कौन सी बिजली हुकुम? मिश्रीलाल 'बिजली' को बुलाए तो वो शायद आ भी जाए मगर करेंट का कोई भरोसा नहीं", उसके चेहरे पे वैसी ही कुटिल मुस्कान थी जो भोले–भाले लोगों पे कभी–कभी ही तशरीफ लाती है।

उसकी बातों के मायाजाल को मैं समझ गया। जो अपने लिए "आलू" से बिस्कुट नहीं मँगवा सका वो मिश्रीलाल से "बिजली" कैसे मंगवाता? मैं बिजली की बात टाल गया और करेंट के बारी में ही पूछताछ की। मिश्रीलाल भी मेरी नीयत समझ गया और फटाफट अपने काम में लग गया। लालटेन को बरामदे में पड़ी लकड़ी के तख्त पर रखा और अपनी कापी में मुझसे ही मेरा नाम पता लिखवाकर दस्तखत करवा लिए। रात भर का किराया पाँच रुपये बताया जो मुझे अगले दिन सुबह देने थे। फिर उसने मुझे नहाने और शौच की जगह बतायी जिसको मैंने दूर ही से देखकर, लालटेन की रोशनी में क्या दिखाई देता, "ठीक है" बोल दिया। उसने ये भी बताया कि स्नान इत्यादि के लिए जाने से पहले दालान के कोने में लगे हैंडपम्प से बाल्टी में पानी भरकर ले जाना होगा, ये बताते हुए उसने बाल्टी मेरे

आगे सरका दी थी। यह सब सुनकर मेरा तो दिल ही बहुत बैठ गया और मन मायूस।

मैं शहर का छोरा कहाँ जंगल देहात में फँस गया? मेरे प्रतिनिधि बिरादरी के लोग सुजानगढ़ क्यों नहीं आना चाहते थे मुझे तब अच्छी तरह समझ आ रहा था। मन ही मन में खुद को कोसते हुए मैंने सिगरेट सुलगा ली। मिश्रीलाल को सिगरेट के लिए पूछा तो उसने फट से हाँ कह के एक सिगरेट ले ली। मैं जब उसकी सिगरेट जलाने के लिए माचिस जलाकर उसकी तरफ थोड़ा झुका तो पता चला कि उसने शराब पी रखी थी। उसके चेहरे पर नशे की ऐसी मस्ती थी जो उसकी बड़ी–बड़ी घनी मूछों के पीछे से भी फूट रही थी। माचिस की लौ में देखा कि उसने अपने कानो में सोने के छोटे से बूँदे भी पहने हुए थे ।

सिगरेट की दोस्ती, शराब की दोस्ती से बस एक ही कदम पीछे होती है। सिगरेट ख़त्म होने के बाद मिश्रीलाल ने मेरी दोनो अटैचियाँ उठा ली और मेरे कमरे की तरफ चल पड़ा। मैं लालटेन, बाल्टी और खाना लेकर उसके पीछे हो लिया। मेरे कमरे के सामने जो कि स्नान इत्यादि की जगह से दूसरे छोर पर था, उसने सामान नीचे रखा, दरवाजे के ऊपर से साँकल उतारी और लकड़ी के भारी दरवाजे के दोनो पाटों को जोर से धकेल कर खोल दिया। और मैं डर गया!

दरवाजे के सामने की दीवार पर जिस काले से भीमकाय मानव को देखकर मैं डर गया था वो तो मिश्रीलाल का साया था। क्योंकि मैं मिश्रीलाल के पीछे लालटेन लेकर खड़ा था इसलिए, लालटेन के प्रकाश ने उसकी आकृति को सामने की दीवार पर प्रक्षेपित कर दिया था।

कारण समझ में आ जाए तो डर चला जाता है!

मैं लालटेन लेकर मिश्रीलाल के पीछे कमरे में दाखिल हुआ। कमरा बहुत बड़ा था। पुराने जमाने में कमरे सिर्फ लम्बे चौड़े ही नहीं बल्कि ऊँचे भी हुआ करते थे। कमरे में घुसते ही दाहिनी ओर दीवार के सहारे बड़ा सा लकड़ी का तख़त रखा हुआ था। उसी पर रुई का गद्दा मोड़ के रखा हुआ था जिसको मिश्रीलाल ने खोलकर बिछा दिया। उसी में हाथ से झलने वाला पंखा भी मिला। मतलब 'करेंट' की समस्या, रोज़ की समस्या थी। मैंने लालटेन वहाँ पड़े लकड़ी के स्टूल पर रख कर, स्टूल को कमरे के बीच में रख दिया ताकि हर तरफ रोशनी हो सके।

मिश्रीलाल ने मुझे बताया कि चूँकि धर्मशाले में मैं अकेला था इसलिए वो भी बरामदे में रखे तखत पर सोएगा।

मिश्रीलाल के जाने के बाद मैं कमरे में ही तख़त पर बैठ गया। क्या करूँ कुछ समझ में नहीं आ रहा था। रात को नहा कर खाना खाने की आदत थी । मेरे दिमाग़ में उस वक्त अपनी प्रतिनिधि बिरादरी के एक गुरु की बात याद आयी "बेटा, हमारी आदतें टूर के प्रोग्राम के हिसाब से बनती–बदलती हैं।'' खाना शुरू किया पर खा ना सका, वापस अख़बार में लपेट कर रख दिया। तख़त पर बैठा लगातार लालटेन को देखता रहा। लालटेन की लौ अपने पूरे शबाब पर थी इसलिए शीशा गंदा होने के बावजूद भी बड़े से कमरे में पूरा उजाला था। सामने की दीवार में एक ताख बना हुआ था जिसका ऊपरी हिस्सा काला पड़ चुका था, शायद वहाँ पर कभी दीपक या डिबरी रखी जाती रही होगी, मतलब काफी दिनो से दीवारों पर रंग रोगन भी नहीं हुआ था। दरवाजे के ऊपर एक बड़ा सा रोशनदान था और उससे एक गंदी सी रस्सी नीचे लटक रही थी ताकि वक्त पड़ने पर रोशनदान के पल्ले को खोला या बंद किया जा सके। अपने तरह की तैयारी पूरी थी। अनमने ढंग से उठ कर दरवाज़े से बाहर निकला तो देखा मेरे दाहिने ओर बरामदे में तखत पर बैठ कर मिश्रीलाल बीड़ी पी रहा था, उसने अपनी लालटेन नीचे जमीन पर तख्त के पास ही रखी हुई थी। "हुकुम आप आराम से सो जाइये, मैं तो रात भर जागूँगा।''

कभी–कभी किसी अजनबी पर विश्वास ना होते हुए भी सहज ही भरोसा हो जाता है। मानव जीवन की ये अजीब पहेली है।

मैं दोनो ही चीज़ों से आश्वस्त हुआ, मिश्रीलाल की मौजूदगी और उसकी लालटेन। वापस कमरे में आकर, जूते खोले और तख्त पर लेट गया। खाली पेट नींद कैसे आती, इसलिए छत पर नाचती लालटेन की रोशनी देखने लगा। छत पर लकड़ी के मोटे–मोटे पटिया लगे हुए थे, उनपर रोशनी कभी लड़खड़ाती मगर फिर संभलकर लहराने लगती थी। कब आँख लग गयी पता ही नहीं चला।

अचानक, चौंक कर उठा, पसीने में लथपथ। बाहर से बिल्लियों के लड़ने की आवाज आ रही थी। रात के सन्नाटे में उनकी आवाज कितनी मनहूस लगती है। उनको भगाने के इरादे से उठकर दरवाजे तक गया और ज़ोर से चिल्लाया " बिल बिल"! दूर दालान में, मेरे कमरे के आगे कुछ चमकती हुई चीज़ें नजर आईं, शायद बिल्लियों की आँखें। वो चुप तो हो गयी थीं मगर मुझे घूर रही थीं। कोई डंडा या ईंट नहीं मिली तो मैंने पैर जमीन पर पटकते हुए इस बार ज्यादा जोर से "बिल–बिल" बोला तो वो भाग गयीं। मैंने अपने दाहिने तरफ देखते हुए मिश्रीलाल को आवाज़ दी। कोई जवाब नहीं आया। लालटेन वहीं जमीन पर रखी हुई थी। मैं दो–चार कदम उस तख़त की तरफ बढ़ा और फिर जोर से गुस्से में आवाज़ लगाई। फिर कोई जवाब नहीं। मैं वापस अपने कमरे में आ गया।

ऐसा लगा वहां मेरे सिवा कोई और भी है। मेरा रोम–रोम सिहर उठा। भाग नहीं सका। डर के मारे पैर जैसे जम गए थे। कॅंखियों से आभास हुआ जैसे मेरे तख़त के नीचे कोई छुपा हुआ है। तभी, एक बड़ी सी बिल्ली, अपने मुँह में मेरे खाने का पैकेट दबाये, तख़त के नीचे से निकली और सामने की दीवार की तरफ भागी, रास्ते में स्टूल को ठोकर मारी फलस्वरूप लालटेन नीचे गिरकर टूट गयी। लालटेन गिरने की आवाज सुनकर ही मानो मैं होश में आया। घुप अंधेरे में बिल्ली की आँखें मुझे घूर रही थीं। शायद सोच रही थी कि मैं दरवाजा छेंक कर क्यों खड़ा हूँ? जाने क्या सोचकर मैं अपने दाहिने ओर तख़त की तरफ लपका और बिल्ली दरवाजे की तरफ। हमारी टक्कर तो ना

हुई मगर इतना जरूर याद है कि उसकी जलती हुई आँखों को मैंने इतने पास से देखा था, जितने पास से हम दाढ़ी बनाते वक्त अपनी सूरत शीशे में देखते हैं।

डर और अँधेरा, दोनो को भगाने के लिए, जेब से माचिस निकाल कर तीलियाँ जलाने लगा। तीली जलने की आवाज़ कमरे में ऐसी गूँजी जैसे सैकड़ों साँप एक साथ फुँफकार रहे हों। तीली हाथ में लेकर बाहर निकला और बरामदे में तख़्त के पास रखी लालटेन देख कर ऐसा खुश हुआ जैसे परदेश में कोई हमज़ुबान मिल गया हो। वो लालटेन उठाकर मैं फिर अपने कमरे में गया और स्टूल को सीधा करके लालटेन उसपे रख दी और दरवाजे की ड्योढ़ी पर ही बैठ गया।

सिगरेट जलाने के लिए माचिस निकाली तो देखा आखरी तीली बची थी। बहुत एहतियात से तीली जलाई और सिगरेट सुलगाई। आखरी तीली से सिगरेट जलाने के लिए हुनर कम और आत्मविश्वास ज्यादा चाहिए।

बरामदे में लालटेन के हटने से अंधेरा हो गया था। मगर चूँकि लालटेन मेरे पीछे रखी हुई थी इसलिए मेरी ही परछाईं सामने दलान की दीवार पर प्रक्षेपित हो रही थी। मैंने सिगरेट के धुएं को लहरा कर ऊपर उठते हुए देखा। अजीब सा मजा आया। फिर एक गहरा कश खींच कर मुँह ऊपर करके धुएं के लच्छे हवा में उछालने लगा। सामने दीवार पर जैसे कोई श्वेत-श्याम चलचित्र चल रहा था।

मगर ये क्या?

चलचित्र में मैं हाथ हिलाऊँ तो हाथ हिलता था, सिगरेट भी, यहाँ तक उसका धुआँ भी हिलता था। मगर मेरे शरीर के हिलाने पर शरीर नहीं हिल रहा था!

किसीने मुझे पीछे से पकड़ लिया था!!
"छोड़ मुझे" मैं जोर से बोला।
कोई नहीं बोला।
न ही मुझे छोड़ा।
मैंने खड़े होने की कोशिश की।
नहीं हो पाया।
मैंने दाँत भींच कर बहुत जोर लगाकर उठने की भरपूर कोशिश की मगर फिर भी नहीं उठ पाया।
भीगी हुई आँखों से सिगरेट को अपने सामने जमीन पर गिरा देखा।
"उसकी" पकड़ इतनी मजबूत थी कि छाती में दर्द होने लगा था। दम घुट रहा था। अमूमन हम अपनी साँस पर ध्यान नहीं देते, मगर साँस पूरी ना आए तो बहुत विचलित हो जाते हैं। और अगर ऐसा आभास हो कि कोई आपकी साँस घोट रहा है तो एक पल के कोटिश क्षण में आप हजार बार मरते हैं। उस समय इंसान ऐसे छटपटाता है जैसे पानी के बाहर तड़पती मछली को कोई पानी देने के बजाए उसे जलती हुई रेत पे डाल दे।
मौत! मौत?
क्या मैं मर जाऊँगा? आँखों के आगे मेरी तेयीस बरस की पूरी जिंदगी घूम गयी।
एक क्षण पहले मै आनंदित था अगले ही क्षण मृत्यु!
अपना ही चलचित्र देख रहा था। मैं ही हीरो था और मैं ही दर्शक! दृश्य भी मैं था और मैं ही द्रष्टा।
द्रष्टा और द्रष्टा!
दृश्य और द्रष्टा का एक हो जाना क्या मृत्यु है? दृश्य और द्रष्टा का एक होना क्या ईश्वर का साक्षात्कार नहीं है?
नहीं, नहीं "मैं" और "ईश्वर" अगर एक हैं तो फिर साक्षात्कार कैसा? "एक" का ही फैलाव है। "प्रेम गली अति सांकरी ताँ में दो ना समाये।''
जब मेरी "मैं" गिरेगी तभी तो "ईश्वर" अवतरित होगा। "मैं" गिरती है "प्रेम" से। अपनी "मैं" को गिराने के लिए पहले मुझे स्वयं से प्रेम करना पड़ेगा।
स्वयं से प्रेम।
जाने कहाँ से इतनी शक्ति आ गयी कि मैंने "अपने को पकड़ने वाले" से पूछा, "कौन हो तुम"?
इस बार "वो" बोला, "डर हूँ मैं। तेरी जिंदगी और मौत के बीच में डर ही का तो सफर है"।
मैंने आँखें बंद कर लीं।
फैसले की घड़ी थी।
"डर का सफर" या "प्रेम का अंगीकार"।
"डर के सफर" में "जीव-वन" में था और "प्रेम के सफर" में "जीवन" था।
"स्वयं से प्रेम" को ही चुना और आँखें खोल दीं।

सामने दीवार पर अब कोई चलचित्र नहीं था। क्योंकि "करेंट" वापस आ गया था। जब प्रकाश के सामने परछाईं नहीं टिकती तो प्रेम के आगे भला डर क्या खड़ा होगा!

तभी मिश्रीलाल की आवाज सुनाई दी। "देखा हुकुम, मैं बिजली को ले आया"। मेरे पास आकर वो सर झुकाकर बाल खुजाने लगा। मैंने मुस्कुराकर उसकी अनुपस्थिति को माफ कर दिया।

अगले दिन सुबह 10 बजे मैंने जयपुर जाने वाली गाड़ी पकड़ी।
मैं सुजानगढ़ से भाग नहीं रहा था, जा रहा था, वापस आने के लिए।

—साभार
श्री संजय श्रीवास्तव

श्री संजय श्रीवास्तव कॉरपोरेट जगत के राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर के एक ख्याति प्राप्त प्रबंधन सलाहकार, कुशल नेतृत्वकर्ता, एक अनुभवी वक्ता और प्रभावशाली मार्गदर्शक हैं। एक प्रमाणित व अनुभवी कोच होने के साथ-साथ वह बहुआयामी प्रतिभा के धनी हैं। वह बहुमुखी विषयों के विशेषज्ञ और एक सधे हुए कथावाचक भी हैं जो उनकी साहित्यिक, सांस्कृतिक और परंपरागत विरासत पर मज़बूत पकड़ से आई है। आत्म-चिंतन और आत्म निरीक्षण पर लिखी उनकी प्रसिद्ध पुस्तक "सेल्फिश" दूसरों से पहले स्वयं को सुरक्षित/विकसित करने का एक अनिवार्य मूल मंत्र है

सोन चिरैया

कजरी हथिनी अपनी सूँड़ से अपने दोनों बच्चों वीर और धैर्या को गुदगुदा रही थी। बच्चे अपने बड़े से कानों को तेजी से हिला रहे थे और घास में लोट रहे थे।

धैर्या बोली, "अम्मा! तालाब में पानी बहुत कम है। अब तो नहाने को भी नहीं मिलता।"

वीर बोला, "हाँ! सूँड़ में पानी भर कर एक–दूसरे पर छोड़ने में कितना मजा आता था।"

कजरी ने लंबी साँस ली और बोली, "इंसानों द्वारा तेज़ी से मकान बनाने व पेड़ काटने से अब हर साल वर्षा घटती जा रही है। तालाब भी मिट्टी जमने से उथला हो गया और ज्यादातर वर्षा का पानी भी बह जाता है।"

श्वेता सारस जो अपनी लंबी चोंच को पंखों में छुपाकर सोने की कोशिश कर रहा था, सोचने लगा कि यदि तालाब सूख गया तो उसे भोजन के लिए मछली भी नहीं मिलेगी। घटते हुए जलस्तर से टर्रटर्र मेंढ़क और अनेक मछलियों के परिवार भी चिंतित थे।

कम वर्षा के कारण पेड़ों पर भी अब घनी पत्तियाँ नहीं थीं। लंबू जिराफ ने गर्मी के महीनों में अपने बच्चों के लिए थोड़ी पत्तियाँ तोड़कर पेड़ों की सबसे ऊपर की शाखाओं पर एकत्र करनी शुरू कर दी थी।

सूर्यास्त के समय सब पशु–पक्षी तालाब पर पानी पीने आते थे। सब दिन भर के अपने किस्से सुनाते थे। दिन भर में कौन कहाँ गया, किसने क्या अदभुत देखा, क्या खाने को मिला?

उस दिन कजरी हथिनी ने सबका ध्यान आकृष्ट किया, "यदि तालाब में ऐसे ही पानी घटता गया तो अगले साल हममें से बहुत से जानवर बिना पानी के जीवित नहीं रह सकेंगे।" सुनहरी हिरन ने सहमति में सिर हिलाया। वह बोली, "मेरी नानी बताती थीं कि उनके बचपन में यह तालाब बगल की पहाड़ी के गाँव तक था। तब गाँव में अच्छी खेती होती थी और फलों के बगीचे भी थे।"

चतुर कौआ बोला, "हम कौए अकसर खाने की तलाश में गाँव तक जाते हैं। एक बूढ़ी अम्मा हमें कुछ रोटी के टुकड़े कभी–कभी देती हैं, पर अब तो गाँव में पानी की कमी से खेती बहुत कम रह गई है। ज़्यादातर जवान लड़के तो शहर में मज़दूरी के लिए चले गए हैं। बूढ़ी अम्मा अकसर अपने बेटे को याद कर रोती है।"

कजरी ने कहा कि हम जानवर तो कहीं जा भी नहीं सकते हैं, क्योंकि शहर के बढ़ने के कारण अब जंगल तो थोड़ा–सा ही रह गया है। पहले तालाब में छोटी नदी से पानी आता था, पर उसमें भी अब बरसात में ही पानी आता है।

मिट्ठू तोता बोला, "नदी में जो थोड़ा पानी रहता भी है, वह पहाड़ी पर बने नए होटल में ले लिया जाता है। मेरी मौसी का परिवार तो होटल के पेड़ों में रहने चला गया है। सुना है वहां इंसानों के तैरने के लिए कई स्वीमिंग पूल बनाए गए हैं। कल्लू लंगूर और अनेक चिड़ियों के परिवार पूल के समीप के पेड़ों में रहने लगे हैं, क्योंकि पहाड़ी पर अब कहीं भी पीने के लिए भी पानी नहीं है। वे छिपकर पानी पी लेते हैं।"

चुन्नू बंदर बोला, "हम पानी के लिए इंसान की बस्ती में जाते हैं तो छिपकर नल से थोड़ा पानी पी पाते हैं। अकसर तो बच्चे हम पर पत्थर फेंकते हैं।" कजरी ने कहा, "हमें मिलकर भविष्य के लिए कोई हल ढूँढ़ना है। किसी के पास कोई सुझाव है?" कल्लू भालू बोला, "चिड़ियाँ तो फिर भी होटल व गाँव के पेड़ों में जा सकती हैं, पर हम जानवरों को तो यहीं रहना है। वैसे भी समस्या का सामना करने से ही रास्ता निकलता है।"

चतुर कौए ने सुझाव दिया कि अगर हम बरसात से पहले तालाब को गहरा कर लें तो ज्यादा पानी एकत्र हो सकेगा।

अनेक पशु–पक्षी यह बात सुन कर हँसने लगे। कजरी ने सबको चुप कराया कि मज़ाक बनाने से कुछ नहीं होगा। जीवन में किसी भी लक्ष्य को असंभव मानकर प्रयास नहीं छोड़ना चाहिए।

पशु–पक्षियों ने अलग–अलग टीम बनाई। सबके काम बँटे थे और सबके ही कार्य महत्वपूर्ण थे।

श्वेता सारस के परिवार ने तालाब के चारों ओर लंबी चोंच से लकीरें खींची जहाँ तालाब को खोदा जाना था। चुन्नू बंदर, कल्लू भालू के परिवार रोज़ सूरज निकलने के बाद से मिट्टी खोदने का काम करते। उन्होंने पड़ोस के जंगल से अपने अनेक रिश्तेदारों को भी बुला लिया। जब वे थक जाते तो यामा कोयल, बुलबुल और अनेक चिड़ियाँ उन्हें गाने सुनाकर उनकी थकान मिटातीं। लंबू जिराफ, दूर–दूर तक जाकर उनके लिए पेड़ों की ऊँची शाखाओं पर बचे फल लेकर आता। सुनहरी हिरन व उसके बच्चे रात में जाकर गाँव के बाहर फेंकी हुई खाली बोरियों में खोदी हुई मिट्टी के सूखने पर उसे भर देते और उन्हें एक तरफ अलग रख देते।

डेढ़ महीने के अथक परिश्रम के बाद सब थक गए थे। वर्षा में अब

केवल पंद्रह दिन रह गए थे। कल्लू भालू ने कहा, ''अब और मेहनत नहीं हो सकती। हमारे भाग्य में यह ही लिखा है कि हम पानी के लिए तरसें।''

बुद्धिमान कछुआ पानी से निकलकर चट्टान पर बैठकर सबको संबोधित करने लगा, ''मेरी उम्र सौ साल है। मैंने तुम सब से ज़्यादा दुनिया देखी है। अकसर हम लक्ष्य के बहुत करीब होने पर हिम्मत हार जाते हैं। तुम सब आँखें बंद करो और कल्पना करो कि तालाब दूर–दूर तक पानी से लबालब भरा है। तालाब के किनारे रंग–बिरंगे फूल हैं, पेड़ों पर घनी पत्तियाँ व अनेक प्रकार के फल हैं। पानी स्वच्छ व ठंडा है। हवा से पानी की जल सतह पर अनेक आकार बन रहे हैं और उगते हुए सूर्य की किरणों में सुनहरे पानी का तालाब अत्यंत सुंदर लग रहा है। पीने में पानी का स्वाद इतना अच्छा है कि लगता है अमृत पी रहे हों।''

सभी जानवरों ने आँखें खोलीं और दुगने उत्साह से अपना–अपना कार्य करना शुरू कर दिया।

दो सप्ताह में तालाब बहुत गहरा हो गया था। खोदी गई मिट्टी की बोरियों को हाथियों ने कई कतार में सूखी नदी के बीच खाई खोद कर उसमें लगा दिया, जिससे कि वर्षा का कुछ पानी रुक सके।

तालाब के किनारों पर श्वेता सारस के परिवार ने अपनी लंबी चोंच से पतली क्यारियाँ बना दीं। बुलबुल, मैना, तोतों और कौओं ने उनमें अनेक प्रकार के फलों के बीज बो दिए। वीर और धैर्या अन्य हाथी के बच्चों के साथ सूँड़ से रोज उनमें थोड़ा पानी डालते।

''मानसून आ गया।'' टी.वी. पर यह समाचार सुनते ही सुनहरी हिरन गाँव से जंगल में अपने साथियों को यह खुशखबरी देने पहुँची।

अगले दिन आसमान में इतने काले बादल थे कि दिन में ही अँधेरा हो गया। बिजली कड़कने लगी, पर आज उसकी आवाज से जानवरों व पक्षियों को डर नहीं लगा। उसका अर्थ था कि खूब झमाझम बरसात होगी। जैसे ही पानी बरसना शुरू हुआ सब चिड़ियाँ ज़ोर–ज़ोर से गाने लगीं, कजरी ने अपने बच्चों, मुन्नू बंदर व चतुर कौए को अपने ऊपर बिठा लिया और अपनी सूँड़ से इंद्र देवता को प्रणाम किया।

कुछ ही दिनों में तालाब में दूर–दूर तक पानी भर गया। चारों तरफ बीजों से छोटे–छोटे पौधे निकल आए। इस बार बोरों से बनाए गए बाँध से नदी में बरसात बाद भी महीनों तक पानी रहा।

शाम को बुद्धिमान कछुआ दादा तालाब के किनारे बैठ कर चिड़ियों, जानवरों, मेंढकों और मछलियों के बच्चों को प्रेरणा देने वाली कहानी सुनाते। लक्ष्य प्राप्त करने की कल्पना करो, अपने में विश्वास रखो और एकता से बड़ी–से–बड़ी मुश्किल पर विजय प्राप्त की जा सकती है–सदैव यह याद रखने की सीख देते। सभी बच्चों की नन्ही आँखों में तैरते सपने और उत्साह की चमक ही उनकी दौलत थी।

चिरैया तालाब का नाम अब 'सोन चिरैया' तालाब हो गया। मनुष्यों में सोने को सबसे कीमती माना जाता है, परंतु पशु–पक्षियों के लिए तो तालाब का जल ही जीवन देने वाला था और सब से मूल्यवान ।

–साभार
डॉ. अनीता भटनागर जैन

डॉ. अनीता भटनागर जैन वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी और चर्चित लेखिका हैं। इनकी पर्यावरण संरक्षण पर आधारित बाल कहानियों की पुस्तक 'दिल्ली की बुलबुल' बेहद लोकप्रिय रही है। इन्होने कई समाचार पत्रों व पत्रिकाओं में हिंदी व अंग्रेजी दोनों भाषाओं में सतत लेखन किया है।

राजभाषा प्रकोष्ठ द्वारा आयोजित अन्य गतिविधियां

उप निदेशक (कार्यान्वयन) क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय गाजियाबाद द्वारा राजभाषा निरीक्षण: 13 अगस्त 2024

शिक्षा मंत्रालय द्वारा राजभाषा निरीक्षण: 14 अक्टूबर 2024

कविता लेखन कार्यशाला: 25 अक्टूबर 2024

भारतीय भाषा उत्सव: 11 दिसंबर 2024

कार्यालयीन टिप्पणियां

Admissibility of claim	दावे की स्वीकार्यता
Allocation of pensionary liability	पेन्शन संबंधी दायित्व का आवंटन
Final concurrence is accorded	अंतिम सहमति दी जाती है
In abeyance	प्रास्थगित
In-service training	सेवाकालीन प्रशिक्षण
Inter-alia	अन्य बातों के साथ–साथ
It is obvious that	यह स्पष्ट है कि
Lay down	निर्धारित करना
Out of date	पुराना, गतावधिक
Partial modification in the case	इस मामले में आंशिक आशोधन
Rectification of errors	मूल परिशोधन
So far as possible	यथासंभव
Solemn affirmation	सत्यनिष्ठा से प्रतिज्ञान
To adjourn sine die	अनिश्चितकाल के लिए स्थगित करना
Under the auspices of	के तत्वावधान में
With due regard to	का सम्यक् ध्यान रखते हुए

–सी3आई हब प्रयोगशाला
भा.प्रौ.सं. कानपुर

57वां इंटर आईआईटी एवं
29वीं इंटर आईआईटी स्टाफ स्पोर्ट्स मीट- 2024

ओवरऑल चैंपियनशिप विजेता (2024): भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर

संपादक- श्री विजय कुमार पाण्डेय
राजभाषा अधिकारी
oic_rp@iitk.ac.in

ईमेल: arkverma@iitk.ac.in; hindi_cell@iitk.ac.in
वेब: https://www.iitk.ac.in/new/antas

सम्पर्क:

राजभाषा प्रकोष्ठ
204, शैक्षिक कार्य भवन
भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर (उ.प्र.)
पिन– 208016
दूरभाष: 0512–259–7122

फेसबुक | एक्स | राजभाषा प्रकोष्ठ | ई-पत्रिका | लिंक्ड इन | इंस्टाग्राम | यूट्यूब